04 - शत-प्रतिशत अंक आखिर माजरा क्या है?

05 - इतिहास, वर्तमान और कूटनीतिक उलझनें

06 - मेंटेनेंस नहीं किए जाने के कारण आए दिन खराब हो रही...

07 - भोपाल : तहज़ीब, तालीम, तरक्क़ी और तासीर का शहर

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 17 मई, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 247, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

भारत ने पाकिस्तान के लिए संघर्ष विराम का बटन ही दबाया है...

जन. मनोज नरवणे (रि)

तोपें शांत हो गई हैं और पश्चिमी मोर्चे पर एक असहज शांति पसरी है। कितनी उथल-पुथल से भरा रहा पिछला हफ्ता, जो पाकिस्तान और उसके कब्ज़े वाले कश्मीर में आतंकवादी अड्डों और तामझाम पर भारत के प्रहारों और जवाबी हमलों से शुरू हुई जिनके कारण उधर का आसमान कौंधने लगा था। गंभीर नतीजों की आशंका की जा रही थी और फिर पूरे पश्चिमी मोर्चे पर सैन्य गतिविधियों के बंद होने की नाटकीय घोषणा हुई, जो 10 मई की शाम पांच बजे से लागू मानी गई। इस अवधि में भारतीय सेना ने मौके की मांग के मुताबिक, केवल आतंकवादी अड्डों पर ही नहीं बल्कि पाकिस्तान फौजी तंत्र पर भी निर्णायक प्रहार किए और साफ संदेश दिया कि भारत 'आतंकवाद को किसी भी रूप में ज़रा भी बर्दाश्त नहीं करेगा।'

नेपथ्य में किए गए कई प्रयासों ने सैन्य कार्रवाइयों को बिना शर्त बंद करने का रास्ता साफ किया। अब आगे और वार्ताओं से ज्यादा स्थायी और टिकाऊ संघर्ष विराम का स्वरूप तय किया जाएगा। अभी तो केवल अस्थायी रुकावट का बटन दबाया गया है, काफी काम बाकी है। छाती ठोकने की गैर-ज़रूरी कार्रवाई किए बिना हमारी सेनाओं ने खुद को विश्वसनीय रूप से बरी किया और ऑपरेशन के सभी लक्ष्य पूरे किए। इस तरह उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि भारत उपयुक्त स्थान और वक्त पर सैन्य कार्रवाई समेत राष्ट्रीय शक्ति के सभी उपायों को इस्तेमाल करने का अधिकार रखता है। जब भी ज़रूरत पड़ेगी, सैन्य ताकत का ज़रूर इस्तेमाल किया जाएगा, लेकिन यह 'डीआईएमई' की कुल योजना का हिस्सा होगा ताकि पाकिस्तान के तौर-तरीकों में बदलाव लाया जा सके। कूटनीति, सूचना तंत्र, सेना और अर्थव्यवस्था, सबको अपनी-अपनी भूमिका निभानी होगी, बारी-बारी से और एक साथ मिलकर।

' डीआईएमई' के इसके नतीजे मिले-जुले होते हैं, जो अंतर्राष्ट्रीय समर्थन के स्तर पर निर्भर करते हैं। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति इसका एक सफल उदाहरण है। हालांकि, इसमें तीन दशक से ज्यादा समय लग गया। ताइवान को तमाम देशों के बीच अलग-थलग करने के लिए और उसे औपचारिक आज़ादी से वंचित करने के लिए चीन इसी तरीके का इस्तेमाल कर रहा है। लेकिन वह उसकी लोकतांत्रिक ताकत को तोड़ने में विफल रहा है, जो यह संकेत देता है कि 'डीआईएमई' के ज़रिए किसी देश को प्रतिबंधित तो किया जा सकता है लेकिन उसे हमेशा बदला नहीं जा सकता।

इन स्थितियों में पाकिस्तान के तौर-तरीके में अपेक्षित बदलाव लाने के लिए भारत के पास क्या उपाय उपलब्ध हैं? इसके लिए निम्नलिखित मोर्चों पर राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक अभियान चलाने की ज़रूरत है।

कूटनीतिक मोर्चे पर पाकिस्तान को संयुक्त राष्ट्र, एससीओ, ओआइसी जैसे बहुपक्षीय मंचों पर पाकिस्तान को अलग-थलग करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय गठबंधनों की अगुआई करने की ज़रूरत है। 'एफएटीएफ' में पाकिस्तान की ब्लैकलिस्टिंग करने के निरंतर पैरवी करते रहने की ज़रूरत है। खाड़ी देशों, आसियान और अफ्रीकी देशों के गठजोड़ों को मजबूती देने की ज़रूरत है ताकि इस्लामी मुल्कों के बीच पाकिस्तान की बढ़त को कमजोर किया जा सके। पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जांच में वृद्धि और उस पर कूटनीतिक दबाव डालने का कुछ असर पड़ सकता है, जबकि भारत को गुप्त माध्यमों के जरिए वार्ताओं में बढ़त हासिल हो सकती है। वक्त की पाबंदी के साथ आतंकवादी ढांचों को नष्ट करने के प्रयासों के सबूत देने पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। हम अगले आतंकवादी हमले का चुपचाप इंतज़ार नहीं करते रह सकते।

सूचना के क्षेत्र में वैश्विक अभियान छेड़ कर पाकिस्तान के आतंकवादी ढांचे का खुलासा किया जाना चाहिए, खासकर उन तस्वीरों को प्रचारित करना चाहिए, जिनमें पाकिस्तानी फौजी अधिकारी कुख्यात आतंकवादियों के जनाजे में शरीक होते और 'गार्ड ऑफ ऑनर' तक देते दिख रहे हैं। मीडिया से जुड़ी कूटनीति और प्रवासियों के नेटवर्क का इस्तेमाल करके विश्व जनमत को स्वरूप प्रदान किया जा सकता है, अपने ही सूबे बलूचिस्तान में पाकिस्तानी दमन को और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान से मिले झटके को उजागर किया जा सकता है। भारत के आतंकवाद विरोधी प्रयासों और फौजी कारवाई के लिए पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों का समर्थन हासिल करने के मकसद से पाकिस्तान के तर्कों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कमजोर करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

सैन्य मोर्चे पर आगे और सोचे-समझे हमलों के लिए तैयारी रहनी चाहिए और फौजी कार्रवाई का विकल्प हमेशा खुला रहना चाहिए। एलओसी पर सुरक्षा और मजबूत की जानी चाहिए और खुफिया गतिविधियों, निगरानी और टोही क्षमताओं को और मजबूत किया जाए। इससे पाकिस्तान पर बोझ बढ़ेगा और वह कारगिल जैसा कोई दुस्साहस या खुली कार्रवाई करने से डरेगा। इस सब से अनुकूल शर्तों पर कूटनीतिक तनाव घटाने की गुंजाइश बनेगी।

आर्थिक मोर्चे पर पहले ही किए जा चुके उपायों के अलावा पाकिस्तान के आतंकवादी तत्वों के खिलाफ वैश्विक प्रतिबंधों को आगे बढ़ाने पर ज़ोर दिया जा सकता है। उसके साथ व्यापार और सीमा पार के कारोबार के स्थगन को जारी रखा जाना चाहिए। आईएमएफ द्वारा उसे दिए गए राहत के ताज़ा पैकेज के बावजूद आईएमएफ और विश्व बैंक पर ज़ोर देना चाहिए कि वह इन पैकेजों के साथ आतंकवाद-रोधी पहल की शर्त लगाएं। पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए भारत-मध्यपूर्व-यूरोप कॉरीडोर जैसे प्रयासों के जरिए आर्थिक एकजुटता को बढ़ावा दिया जाए। इसका असर यह होगा कि पाकिस्तान के कुलीन तबके और उसकी संस्थाओं पर वित्तीय दबाव बढ़ेगा और छद्म युद्ध या किराए के समूहों का समर्थन करने की उसकी क्षमता घटेगी। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इन उपायों के नतीजे मिलने में समय लगेगा। अल्पकालिक नतीजे : पाकिस्तान का कूटनीतिक अलगाव और उस पर वित्तीय दबाव। आक्रामक आतंकवादी गतिविधियों पर सीमित रोक। भारत ने किसी भी आतंकवादी गतिविधि को युद्ध के रूप में लेने का जो नया फैसला किया है, उसका बड़ा असर होगा।

मध्यकालिक नतीजे : भारत के आतंकवाद रोधी तर्कों को ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय समर्थन और नागरिकता विहीन तत्वों के जरिए पाकिस्तान की रणनीतिक क्षमता का कमजोर होना।

दीर्घकालिक नतीजे : पाकिस्तान पर निरंतर दबाव के साथ उसकी आंतरिक अस्थिरता या नेतृत्व परिवर्तनों के मेल से उसके आचरण में सशर्त परिवर्तन।

लेकिन अलग-थलग किया जा चुका और प्रतिशोधी पाकिस्तान ज्यादा खतरनाक हो सकता है। इन उपायों के साथ हालात से निकासी के अव्यक्त रास्ते जुड़े होने चाहिए जो अच्छे आचरण के एवज में उपलब्ध कराए जाएं। यह पेशकश किसी तीसरे पक्ष द्वारा करवाई जा सकती है।

जबकि पहलगाम कांड का बदला लिया जा चुका है, तब देखने वाली बात यह होगी कि इस तरह की नियंत्रित दीर्घकालिक नीति सबसे अच्छा विकल्प है या नहीं। तोपें शांत हो गई हैं, लेकिन कब तक के लिए?

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

ऑपरेशन सिंदूर पर दुनिया को ब्रीफ करेंगे भारतीय सांसद

● अमेरिका, यूके, दक्षिण अफ्रीका, कतर और यूएई तक जाएंगे ● थरूर-ओवैसी रह सकते हैं शामिल, सरकार का बड़ा प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर पर भारत के सांसद दुनिया को ब्रीफ करेंगे। केंद्र सरकार सभी दलों के चुनिंदा सांसदों को 22 मई से 10 दिनों के लिए 5 देशों में भेज रही है। 5-6 सांसदों के कुल 8 ग्रुप्स अमेरिका, यूके, दक्षिण अफ्रीका, कतर और यूएई जाएंगे। वहां की सरकार को आतंकवाद पर भारत का पक्ष बताएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अलग-अलग पार्टियों के सीनियर सांसद विदेश दौरे पर भारतीय डेलीगेशन के ग्रुप्स को लीड करेंगे। कांग्रेस सांसद शशि थरूर को ग्रुप लीडर बनाया जा सकता है। एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी भी डेलिगेशन का हिस्सा हो सकते हैं। सूत्रों की तरफ से बताया जा रहा है कि सांसदों के साथ विदेश मंत्रालय का एक अधिकारी और एक सरकारी प्रतिनिधि भी जाएंगे। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू सांसदों का विदेश दौरा कोऑर्डिनेट कर रहे हैं। सांसदों को निमंत्रण भेजा जा चुका है। उन्हें अपना पासपोर्ट और ट्रैवल से जुड़ी जरूरी डॉक्यूमेंट्स तैयार रखने की सलाह दी गई है। सरकार ने 8 मई को सभी दलों की बैठक बुलाई थी केंद्र सरकार ने 7 मई को ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान पर एयर स्ट्राइक की थी। अगले दिन संसद में ऑपरेशन सिंदूर की जानकारी देने के लिए सभी दलों की बैठक बुलाई गई थी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सर्वदलीय बैठक की अध्यक्षता की थी।

पिछली सरकारों ने अपना पक्ष रखने के लिए डेलिगेशन विदेश भेजे

विपक्ष के नेता वाजपेयी ने यूएनएससी में भारत का पक्ष रखा था ये पहली बार नहीं है, जब केंद्र सरकार ने किसी मुद्दे पर अपना पक्ष रखने के लिए विपक्षी पार्टियों की मदद लेगी। इससे पहले 1994 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने कश्मीर के मुद्दे पर भारत का पक्ष रखने के लिए विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारतीय डेलिगेशन को जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग भेजा था। उस डेलिगेशन में जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारुक अब्दुल्ला और सलमान खुर्शीद जैसे नेता भी शामिल थे। तब पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में कथित मानवाधिकार उल्लंघन के संबंध में यूएनएससी के सामने एक प्रस्ताव पेश करने की तैयारी में था। हालांकि, भारतीय डेलिगेशन ने पाकिस्तान के आरोपों का जवाब दिया और नतीजतन पाकिस्तान को अपना प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। उस समय यूएन में भारत के राजदूत हामिद अंसारी ने भी प्रधानमंत्री राव की रणनीति सफल कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

एस जयशंकर ने तालिबान के विदेश मंत्री से पहली बार की बात

● अहम मुद्दों पर हुई चर्चा, पाकिस्तान का तिलमिलाना हुआ तय

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने गुरुवार को अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री मावलवी आमिर खान मुत्ताकी के साथ फोन पर बात की। इस बातचीत में भारत और अफगानिस्तान के बीच अविश्वास पैदा करने के कोशिशों का भी जिक्र हुआ। पिछले दिनों पाकिस्तानी सेना ने दावा किया था कि भारत ने अफगानिस्तान को भी मिसाइलों से निशाना बनाया था। भारत ने इसे सिरे से खारिज किया था। यह भारत और अफगानिस्तान के तालिबान प्रशासन के बीच पहली मंत्री स्तरीय बातचीत है। विदेश मंत्री ने कहा कि उनकी मुत्ताकी के साथ अच्छी बात हुई। जयशंकर ने एक्स पर लिखा कि वह पहलगाम आतंकी हमले को लेकर उनकी ओर से की गई भर्त्सना को सराहते हैं। साथ ही उन्होंने आधारहीन रिपोर्ट के जरिए दोनों देशों के बीच अविश्वास पैदा करने की कोशिशों को मुत्ताकी की ओर से खारिज किए जाने का स्वागत किया। जयशंकर ने लिखा कि अफगान लोगों के साथ पारंपरिक दोस्ती को रेखांकित किया गया।

श्रीअन्न का उत्पादन बढ़ाएं, सरकार खरीदेगी किसानों से श्रीअन्न : मुख्यमंत्री

तुअर उत्पादक किसानों को अच्छे बीज, खाद और उत्पादन वृद्धि के लिए भी दें प्रोत्साहन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में रागी, कोदो-कुटकी, ज्वार-बाजरा, मक्का जैसे श्रीअन्न का उत्पादन बढ़ाया जाए और किसानों को श्रीअन्न उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। किसानों द्वारा उत्पादित श्रीअन्न अब सरकार खरीदेगी। उन्होंने कहा कि तुअर उत्पादक किसानों को अच्छे किस्म के खाद, बीज और उत्पादन वृद्धि के लिए प्रोत्साहन भी दिया जाए। इसके लिए किसानों को फसल अनुदान देने और उनकी फसल का बीमा कराने जैसे नवाचार भी किये जा सकते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को मंत्रालय में किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय डॉ. राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव सहकारिता श्री अशोक बर्णवाल, सचिव कृषि श्री एम. सेल्वेन्द्रम सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

कृषि उपज मंडी के अलावा फल व सब्जी मंडी, मसाला मंडी स्थापना के लिए भी करें प्रयास।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश की सभी मंडियों में प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी मंडियों का विभागीय वरिष्ठ अधिकारियों से आकस्मिक निरीक्षण करायें। मंडियों की व्यवस्थाओं को और भी बेहतर बनाया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नई जरूरतों के मुताबिक अब अलग-अलग मंडियों की स्थापना पर विचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मंडियों का फसलवार मॉडल तैयार करें। कृषि उपज मंडी के अलावा अब फल व सब्जी मंडी, मसाला मंडी या अन्य विशेष पैदावार की मंडी स्थापना के लिए भी प्रयास किए जाएं।

आदर्श बनें प्रदेश की कृषि उपज मंडियां

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की कृषि उपज मंडियों को आदर्श बनाया जाए। मंडियों में कृषि आधारित सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित हों। मंडियों में किसानों को फसल बेचने में किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। मंडी में अपनी फसल बेचने आने वाले हर किसान को उसकी उपज का सही दाम मिले किसी का भी नुकसान न होने पाए। मंडियों को और अधिक आधुनिक बनाया जाए यहां किसानों को उनके उपज में गुणवत्ता संवर्धन के बारे में भी बताया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सभी मंडियां अपने विकास कार्यों के लिए आत्मनिर्भर बनें। उन्होंने कृषि अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे स्थानीय निकायों से नई मंडियों की स्थापना/फसल भण्डारण क्षमता बढ़ाने के लिए समन्वय करें, जिससे किसानों को अपनी फसल बेचने के लिए अधिक सुविधाएं मिल सकें।

ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं, यह सिर्फ ट्रेलर

● भुज एयरबेस पहुंचे राजनाथ सिंह, बढ़ाया जवानों का हौसला

● रक्षामंत्री बोले-समय आने पर दुनिया को दिखाएंगे पूरी पिक्चर

अहमदाबाद (एजेंसी)। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है, ये तो बस ट्रेलर है, समय आएगा तो पूरी पिक्चर दुनिया को दिखाएंगे। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद रक्षामंत्री राजनाथ सिंह शुक्रवार को पहली बार गुजरात के भुज एयरफोर्स स्टेशन पहुंचे थे। जवानों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हमने वर्तमान सीजफायर में हमने पाकिस्तान को बिहेवियर के आधार पर प्रोबेशन पर रखा है, बिहेवियर में गड़बड़ी आई तो सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा- ब्रह्मोस मिसाइल की ताकत को पाकिस्तान ने स्वीकार कर लिया, एक कहावत मशहूर है- दिन में तारे दिखना। ब्रह्मोस ने पाकिस्तान को रात के अंधेरे में दिन का उजाला दिखा दिया।

भारतीय सेना के लिए 23 मिनट काफी थे

राजनाथ ने कहा- इस ऑपरेशन में आपने जो किया है, सभी हिंदुस्तानी उससे गौरवान्वित हैं। भारतीय सेना के लिए 23 मिनट काफी थे पाकिस्तान की सरजमीं पर पल रहे आतंकवाद के अजगर को कुचलने के लिए। जितनी देर में लोग नाश्ता-पानी करते हैं, उतनी देर में आपने दुश्मनों को निपटा दिया। राजनाथ ने कहा- आपने पाकिस्तान के भीतर मिसाइलें गिराई हैं, उसकी गूंज पूरी दुनिया ने सुनी। वह गूंज आपके शौर्य की, जवानों के पराक्रम की। भारतीय वायुसेना ने प्रभावी भूमिका निभाई, जिसकी सराहना दुनिया के दूसरे देशों में भी हो रही है।

भुज ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी का साक्षी

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा- आपका अभिनंदन करने आया हूं। ऑपरेशन सिंदूर में आपने करिश्माई काम किया है। भारत का मस्तक आपने ऊंचा किया है। हमारे सैनिकों को नमन करता हूं। आप सबके बीच आकर मुझे गौरव की अनुभूति हो रही है। भुज 65 और 71 की जंग में हमारी जीत का साक्षी रहा है और आज भी यह ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी का साक्षी है। राजनाथ ने कहा- आपके पराक्रम ने दिखा दिया है कि यह वो सिंदूर है, जो श्रृंगार का नहीं शौर्य का प्रतीक है। यह वह सिंदूर है जो सौंदर्य नहीं, संकल्प का प्रतीक है। यह सिंदूर खतरे की वह लाल लकीर है, जो भारत ने आतंकवाद के माथे पर खींच दी है। इस लड़ाई में सरकार और सभी नागरिक एकजुट थे।

सुप्रभात

आज मेरा हृदय
बहुत आल्हादित है
बहुत ही प्रसन्न
क्यूंकि,
प्रसन्नता के कई
आयाम होते हैं
जैसे
वातावरण
बहुत ही सुहावना मौसम
मई की झुलसा देने वाली
गर्मी मे ठंडी ठंडी बयारौ
का झोंका,
कहीं कोयल तो
कहीं गौरैया,
अधपके आमों का झूलना
पेड़ों का मस्ती से झूमना
फिर आता है
मानसिक स्वास्थ्य
कुछ ऐसे व्यक्तित्व
का सानिध्य जिससे
मन सकारात्मक
ऊर्जा से भर जाए
या
ऐसा कोई
घटनाक्रम जिससे मन
खुशी से गौरवान्वित
हो जाए
और मेरे इन प्यारे
पलों को
अविस्मरणीय बनाने वाले
ऑपरेशन सिंदूर की
त्रुटिरहित सफलता,
हमारी सेना के पराक्रम
शौर्य एवम
सूक्ष्म दूरदर्शिता का
परिचायक है
मै अति प्रसन्न हूं
क्यूंकि गुनाहगारों
से बदला जरुर लिया
परन्तु
बेकसूरों और मासूमों
को नुकसान पहुंचाये बिना
चाहे शत्रु ही क्यों न हो
सर्वे भवन्तु सुखिनः
वाला हिन्दुत्व
जिस पर मुझे
गर्व है।

- डॉ. अंजना शर्मा

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 17 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

दीघा मंदिर को लेकर मांझी सरकार नहीं दिखाएगी 'ममता'

● कानूनी कार्रवाई की शुरू की तैयारी, ओडिशा में जमकर विरोध

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा सरकार और पश्चिम बंगाल के बीच भगवान जगन्नाथ को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। ओडिशा के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने गुरुवार को बताया कि दीघा में बने नए जगन्नाथ मंदिर को 'धाम' कहे जाने पर राज्य सरकार गंभीर आपत्ति जता चुकी है और अब कानूनी रास्ता अपनाने पर विचार किया जा रहा है। हरिचंदन ने कहा कि इस मुद्दे पर कानूनी विशेषज्ञों से सलाह-

मशविरा चल रहा है और जल्द ही कोई निर्णय लिया जाएगा। उन्होंने बताया, पश्चिम बंगाल सरकार को इस बारे में पत्र लिखा गया था, लेकिन अब तक कोई जवाब नहीं आया है। हम 'धाम' शब्द के इस्तेमाल पर कानूनी विकल्पों की जांच कर रहे हैं। गौरतलब है कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने 30 अप्रैल को दीघा में नए बने जगन्नाथ मंदिर का उद्घाटन करते हुए उसे 'जगन्नाथ धाम' कहा था। इसी शब्द ने ओडिशा में विवाद खड़ा कर दिया।

'गुजरात समाचार' पर ईडी का बड़ा ऐक्शन

● मालिक बाहुबली शाह हिरासत में, भड़के राहुल गांधी और केजरीवाल

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में ईडी ने एक समाचार पत्र के मालिक को हिरासत में लिया है। पिछले दो दिनों से चल रहे लगातार तलाशी अभियान के बाद ईडी ने गुजरात समाचार के मालिक बाहुबली शाह को हिरासत में लिया है। इस मामले को लेकर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी

और अरविंद केजरीवाल ने गुजरात सरकार और केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर निशाना साधा है। दोनों नेताओं ने लोकतंत्र की आवाज दबाने आरोप लगाया है। बाहुबली शाह के बड़े भाई और गुजरात समाचार के मैनेजिंग एडीटर श्रेयांश शाह ने बताया कि इनकम टैक्स विभाग के अधिकारियों ने दो दिनों तक उनके ठिकानों की तलाशी ली। रिपोर्ट के अनुसार, गुरुवार को ईडी के अधिकारी छोटे भाई बाहुबली के लिए गिरफ्तारी वारंट लेकर आए और उन्हें साथ ले गए। इस मामले पर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का बयान भी सामने आया है। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर अपना बयान जारी करते हुए कहा कि गुजरात समाचार को खामोश करने की कोशिश सिर्फ एक अखबार की नहीं, पूरे लोकतंत्र की आवाज दबाने की एक और साजिश है।

अब भारत में भी समुद्र का खारा पानी बनेगा मीठा

● डीआरडीओ ने ईजाद की नई तकनीक, पीएम ने इजराइल में देखा था

नई दिल्ली (एजेंसी)। साल 2017, पीएम मोदी इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू के साथ हाइफा में ओल्गा बीच पर टहल रहे थे। इस दौरान एक छोटे से वाहन ने पीएम मोदी का ध्यान अपनी तरफ खींचा। जीप जैसा दिखने वाला यह छोटा वाहन दरअसल समुद्र के खारे पानी को मीठे पानी में बदलने वाली मोबाइल वैन थी। पीएम मोदी इस वाहन की तकनीक से बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने इसको लेकर नेतन्याहू से लंबी चर्चा भी की थी। अब 8 साल बाद डीआरडीओ ने इजरायल वाले कारनामे को सच कर दिया है। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने हाई प्रेशर वाले समुद्र के खारे जल को मीठा बनाने के लिए स्वदेशी स्तर पर बेहद सूक्ष्म छिद्रों वाली बहुपरतीय पॉलीमर झिल्ली विकसित करने में कामयाबी हासिल की है। अधिकारियों ने गुरुवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि यह टेक्नोलॉजी डीआरडीओ की कानपुर स्थित लैब रक्षा सामग्री भंडार और अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (डीएमएसआरडीई) ने विकसित की है। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इस एडवांस टेक्निक को भारतीय तटरक्षक बल के जवानों के खारे पानी को मीठे में बदलने वाले प्लांट के लिए डेवलप किया गया है। मंत्रालय ने कहा कि इस टेक्नोलॉजी को जहाजों की ऑपरेशनल जरूरतों के मद्देनजर खारे पानी में क्लोराइड आयन के संपर्क में आने पर संतुलन संबंधी चुनौतियों से निपटने में उनकी मदद करने के लिए ईजाद किया गया है। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि बेहद सूक्ष्म छिद्रों वाली बहुपरतीय पॉलीमर झिल्ली को आठ महीने के रिकॉर्ड समय में विकसित किया गया है। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि डीआरडीओ ने हाई प्रेशर वाले समुद्री जल के विलवणीकरण के लिए स्वदेशी स्तर पर बेहद सूक्ष्म छिद्रों वाली बहुपरतीय पॉलीमर झिल्ली विकसित करने में सफलता हासिल की है। बयान में कहा गया है कि शुरुआती परीक्षण में पॉलीमर झिल्ली का प्रदर्शन पूरी तरह से संतोषजनक पाया गया। यह सुरक्षा के पैमाने पर भी खरी साबित हुई। आईसीजी 500 घंटे के संचालन परीक्षण के बाद अंतिम संचालन मंजूरी देगा। मौजूदा समय में ओपीवी पर इस टेक्नोलॉजी का परीक्षण किया जा रहा है। यह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में डीएमएसआरडीई का एक और बड़ा कदम है।

जम्मू और कश्मीर में अब तुलबुल प्रोजेक्ट पूरा करने की उठी मांग

● पाकिस्तान ने इस बैराज का रुकवाया था काम, अब अपनी बारी

श्रीनगर (एजेंसी)। सिंधु जल संधि रुकने से उत्तरी कश्मीर के बारामूला, बांदीपोरा और दक्षिण कश्मीर के श्रीनगर, अनंतनाग, पुलवामा और कुलगाम के गांवों के किसान खुश हैं। उनका कहना है कि 38 साल बाद भारत को तुलबुल बैराज का काम शुरू करने का मौका मिला है। भारत ने इसका काम 1984 में शुरू किया था। इससे दक्षिण से उत्तरी कश्मीर तक 100 किमी का नौवहन कॉरिडोर बनता और कश्मीर की लाइफलाइन झेलम का पानी रुकता और नदी में कभी सूखा नहीं पड़ता। एक लाख एकड़ जमीन सिंचित रहती, लेकिन 1987 में पाक ने इसे सिंधु जल संधि का उल्लंघन बताते हुए काम रुकवा दिया था। अब हालात बदले हैं।

● **वुलर झील के मुहाने पर है तुलबुल प्रोजेक्ट-** तुलबुल प्रोजेक्ट झेलम नदी पर वुलर झील के मुहाने पर 440 फीट लंबा नौवहन लॉक-कम-नियंत्रण ढांचा था। यहां झेलम का पानी रोकने के लिए 3 लाख बिलियन क्यूबिक मीटर की भंडारण क्षमता तैयार की गई थी। तुलबुल प्रोजेक्ट इस वक्त 20 करोड़ खर्च हुए थे, लेकिन झेलम में बार-बार बाढ़ आने से निर्माण मिट्टी में दब गए। इससे झेलम का पानी कश्मीर में नहीं रुक सका और पाकिस्तान बहकर जाता रहा। पहलगाम आतंकी हमले के अगले दिन 23 अप्रैल को पीएम मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी यानी सीसीए की बैठक हुई थी। इसमें पाकिस्तान के खिलाफ 5 बड़े फैसले हुए थे।

जेल में ही कटेंगे भगोड़े नीरव मोदी के दिन

यूके की कोर्ट ने 10वीं बार खारिज कर दी जमानत याचिका

लंदन (एजेंसी)। पीएनबी घोटाले के आरोपी भगोड़े हीरा कारोबारी नीरव मोदी को ब्रिटेन के अदालत से तगड़ा झटका लगा है। अदालत ने नीरव मोदी की नई जमानत याचिका खारिज कर दी। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। नीरव मोदी वहां की एक जेल में बंद

है और अपने मामा मेहुल चोकसी के साथ 13,000 करोड़ रुपये के पीएनबी धोखाधड़ी मामले में भारत में वान्टेड है। उन्होंने बताया कि नीरव मोदी ने लंदन की अदालत में याचिका दायर कर अपने प्रत्यर्पण अनुरोध पर फैसला आने तक जमानत पर रिहाई की मांग की।

यूनिवर्सिटी के पास दोबारा जंगल उगाएं या जेल जाएं

● हैदराबाद यूनिवर्सिटी में पेड़ों की कटाई पर 'सुप्रीम' चेतावनी

हैदराबाद (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को हैदराबाद यूनिवर्सिटी के पास कान्चा गाचीबोवली जंगल में पेड़ों की अवैध कटाई पर कड़ा रुख अपनाया और कहा कि यह काम पहले से योजनाबद्ध लगता है। कोर्ट ने तेलंगाना सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि अगर जंगल दोबारा उगाया नहीं किया गया तो तेलंगाना सरकार के अधिकारी जेल जा सकते हैं। मामले में सुनवाई के दौरान सीजेआई बीआर गवई और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने कहा कि पेड़ों की कटाई ऐसे समय पर की गई जब कोर्ट 3 दिन की छुट्टी पर था, ताकि कोई रोक न लग सके।

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 3 अप्रैल को स्वतः संज्ञान लेते हुए आदेश दिया था कि वन क्षेत्र में यथास्थिति बनी रहे और कोई नया काम न हो। इसके बावजूद पेड़ों की कटाई की गई, जो आदेश का उल्लंघन है। तेलंगाना सरकार की ओर से वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि अब वहां कोई गतिविधि नहीं हो रही है और सरकार कोर्ट के आदेशों का पूरा पालन करेगी। मामले में अगली सुनवाई 23 जुलाई को होगी। सुप्रीम कोर्ट ने 16 अप्रैल को तेलंगाना सरकार को फटकार लगाई थी।

सड़क पर उतरे बंगाल में नौकरी गंवाने वाले टीचर्स

● कहा-ममता बनर्जी हमसे खुद बात करें

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल शिक्षक भर्ती घोटाले में नौकरी गंवा चुके टीचर्स और नॉन टीचिंग स्टाफ का लगातार दूसरे दिन प्रदर्शन जारी है। शुक्रवार सुबह शिक्षकों ने शिक्षा विभाग के मुख्यालय विकास भवन के बाहर बैरिकेडिंग तोड़ दी और नारेबाजी करते हुए धरना शुरू किया। गुरुवार रात शिक्षकों और पुलिस के बीच झड़प हुई। पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें करीब 100 शिक्षक घायल हुए हैं। बिधाननगर के एसएसपी अनीश सरकार ने कहा- कई बार समझाने के बावजूद प्रदर्शनकारियों ने शिक्षा विभाग के कर्मचारियों को निकलने नहीं दिया। प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे शिक्षक चिन्मय मंडल ने कहा- हमने शिक्षकों और आम लोगों से अपील की है कि विकास भवन के बाहर जुटें।

एंटी-इंडिया कैम्पेन चलाने वाले अमेरिका को बड़ा झटका देने की तैयारी

● एफ-35 फाइटर जेट पर ट्रंप से नहीं होगी बात, एमआरएफए से भी पत्ता साफ

वॉशिंगटन (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद ऐसा लग रहा था कि अमेरिकन मीडिया पाकिस्तान का मुखपत्र बन गया है। सीएनएन से लेकर न्यूयॉर्क टाइम्स समेत कई और टीवी चैनल्स और अखबार, पाकिस्तानी सेना का मुखपत्र बनकर भारत के खिलाफ कैम्पेन चला रहे थे। अमेरिकी मीडिया में एक के बाद एक पाकिस्तानी सेना के हवाले से खबरें लिखी जा रही थीं। भारत की बातों का कोई जिक्र नहीं था। हालांकि अब अमेरिकी मीडिया ने धीरे धीरे सच कबूलना जरूर शुरू कर दिया है, लेकिन इन्फॉर्मेशन वॉरफेयर में जो नुकसान होना था, वो हो चुका है। अमेरिकी मीडिया के एंटी-इंडिया कैम्पेन से अब अमेरिका की डिफेंस कंपनियों जैसे बोइंग, लॉकहीड मार्टिन को अरबों डॉलर का तगड़ा नुकसान हो सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जिस तरह से अमेरिकी मीडिया ने भारत के खिलाफ कैम्पेन चलाया और झूठी खबरों से भारत के खिलाफ प्रोपेगेंडा फैलाने का काम किया है, उससे भारत के रक्षा अधिकारी काफी गुस्से में हैं। अमेरिकी मीडिया के भारत के खिलाफ कैम्पेन ने भारत की आतंकवाद के खिलाफ नैनेटिव को नुकसान पहुंचाया है और इसका निश्चित तौर पर अमेरिका के साथ आने वाले डिफेंस डील पर देखने को मिलेगा। भारत एक विशालकाय डिफेंस मार्केट है। भारत-अमेरिका के बीच कई डिफेंस प्रोजेक्ट मेज पर थे, जिसके जरिए भारत, अमेरिका से सबसे ज्यादा हथियार खरीदने वाला देश बन जाता है। भारत के रक्षा अधिकारियों में गुस्सा इस बात को लेकर है की सीएनएन, न्यूजवीक और रॉयटर्स जैसी न्यूज एजेंसियों ने बिना फैक्ट चेक किए, पाकिस्तान जो कह रहा था, उसे बढ़ा-चढ़ाकर दिखा रहे थे। सीएनएन के संवाददाता इस्लामाबाद से अनाप-शनाप रिपोर्टिंग कर रहे थे। पाकिस्तानी अधिकारियों के हवाले से फर्जी खबरें चलाई जा रही थीं। जैसे ख्वाजा आसिफ के हवाले से अमेरिकी मीडिया दिखा रहा था कि भारत ने पाकिस्तान में नागरिकों पर हमले किए हैं। इसके अलावा भारत के फाइटर जेट्स को लेकर भी जमकर झूठी खबरें दिखाई गई हैं। अमेरिका मीडिया ने आतंकवाद को लेकर एक बार भी पाकिस्तान से सवाल नहीं पूछे, बल्कि पाकिस्तान के नेताओं के लिए कई मीडिया ऑउटलेट एक मंच बन गये थे और प्रवक्ता की तरह रिपोर्टिंग कर रहे थे।

ऑपरेशन सिंदूर पर अब एमपी के डिप्टी-सीएम जगदीश देवड़ा का विवादित बयान, बोले

कांग्रेस ने कहा- ये सेना के शौर्य का अपमान, भाजपा ने कहा इसे तोड़-मरोड़ कर पेश किया

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश में मंत्री विजय शाह के बाद अब डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर विवादित बयान दिया है। देवड़ा ने शुक्रवार को जबलपुर में कहा, प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहेंगे...और पूरा देश, देश की वो सेना, वो सैनिक...उनके चरणों में नतमस्तक है। इस वीडियो में अभी पूरी सच्चाई नहीं आई है क्या सही है या क्या गलत है। वे यहां सिविल डिफेंस वालिंटियर्स के प्रशिक्षण कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे। उनके बयान को कांग्रेस ने सेना के शौर्य का अपमान बताया। वहीं, बीजेपी ने कहा है कि कांग्रेस देवड़ा के बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश कर रही है।

विवाद बढ़ने के बाद डिप्टी सीएम ने सफाई दी। कहा, मेरे बयान को गलत ढंग से पेश किया जा रहा है। इससे पहले मंत्री शाह ने भारतीय सेना की कर्नल सोफिया कुरैशी पर आपत्तिजनक बयान दिया था। एमपी हाईकोर्ट ने पुलिस को एफआईआर दर्ज का आदेश दिया। मंत्री इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंचे हैं। इस पर सुनवाई सोमवार को होगी।

डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा आज जबलपुर दौरे पर हैं। वे यहां एक कार्यक्रम में पहुंचे थे।

डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा आज जबलपुर

दौरे पर हैं। वे यहां एक कार्यक्रम में पहुंचे थे।

डिप्टी सीएम देवड़ा ने कहा, मन में बहुत क्रोध था। लोग पर्यटक के रूप में घूमने गए थे। वहां धर्म पूछ-पूछकर और महिलाओं को एक तरफ खड़ा करके उनके सामने पति को गोली मारी। बच्चों के सामने गोली मारी। उस दिन से दिमाग में बहुत तनाव था।

जब तक इसका बदला नहीं लिया जाएगा और जिन माताओं के सिंदूर को मिटाने का काम जिन आतंकवादियों ने किया और आतंकवादियों को जिन्होंने पाला, जो पाल रहे हैं उनको नेस्तनाबूद नहीं कर देंगे, तब तक चैन की सांस नहीं लेंगे। प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहेंगे।...और पूरा देश, देश की वो सेना, वो सैनिक...उनके चरणों में नतमस्तक है। उनके चरणों में पूरा देश नतमस्तक है। उन्होंने जो जवाब दिया है, उसकी जितनी सराहना की जाए, जितना कहा जाए, एक बार उनके लिए जोरदार तालियां बजाकर स्वागत करिए।

सफाई- मेरा बयान तोड़ मरोड़ कर पेश कर रहे- जगदीश देवड़ा ने सफाई देते हुए कहा कि कांग्रेस मेरे बयान को बिल्कुल गलत तरीके से प्रस्तुत कर रही है। मीडिया में मेरा बयान तोड़ मरोड़ कर पेश किया जा रहा है। मैंने ये कहा कि देश की सेना ने ऑपरेशन सिंदूर में जो काम किया है, उसकी जितनी सराहना की जाए उतनी कम है। देश की जनता भारत की सेना के चरणों में नतमस्तक है। उनका प्रणाम करते हैं, उनका सम्मान करते हैं। जितना कहा जाए उतना कम है सेना के बारे में। ये शब्द मैंने कहे हैं। उसे तोड़ मरोड़ कर गलत तरीके से प्रस्तुत कर रहे हैं।

डिप्टी सीएम देवड़ा के बयान के बाद कांग्रेस हमलावर

प्रियंका ने कहा, ये सेना का अपमान

कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा है, भाजपा के नेताओं की ओर से लगातार हमारी सेना का अपमान अत्यंत शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण है। पहले मध्य प्रदेश के एक मंत्री ने महिला सैनिकों पर अभद्र टिप्पणी की और अब उनके उपमुख्यमंत्री ने सेना का घोर अपमान किया है।

सुप्रिया श्रीनेत बोलीं- कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा- इस देश की सेना और सैनिक प्रधानमंत्री मोदी के चरणों में नतमस्तक हैं। मध्यप्रदेश में उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा का यह बयान सेना के शौर्य पराक्रम का घोर अपमान है।

राज्यसभा सांसद विवेद तन्खा- आप क्या कह रहे हैं देवड़ा जी। मोदी जी और देश की जनता हमारी वीर सेना के प्रति समर्पित और नतमस्तक है। आप लोग देश की और सुरक्षा एजेंसीज का मनोबल क्यों गिरा रहे हैं।

जीतू पटवारी, अध्यक्ष, मप्र कांग्रेस- भाजपा सेना का अपमान करने वाले दोनों मंत्रियों को बचाने में जुटी है। क्या भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने तय कर लिया है कि सेना का अपमान करो। कांग्रेस शनिवार को पूरे प्रदेश में जगदीश देवड़ा और विजय शाह के पुतले जलाएगी। इनके इस्तीफे की मांग करेंगे।

भाजपा पार्टी प्रवक्ता आशीष अग्रवाल- जैसी नजर होती है, वैसा ही नजरिया हो जाता है। यही हाल कांग्रेसियों का है। न तो उन्हें देश की सेना के प्रति सम्मान है और न ही देश के प्रति। ऐसे में उनके द्वारा इस प्रकार के भाव और उनके भावार्थ ही निकाले जाएंगे।

4700 अतिथि विद्वानों का भविष्य अधर में, सेवाएं खत्म

सरकार ने नहीं निभाया वादा, जून में आंदोलन की चेतावनी दी

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के महाविद्यालयों में शैक्षणिक सेवाएं दे रहे 4700 अतिथि विद्वानों की सेवाएं खत्म करने का सिलसिला शुरू हो गया है। तबादलों की कार्यवाही के बीच महाविद्यालयों के प्राचार्यों द्वारा अतिथि विद्वानों की सेवाएं खत्म की जा रही हैं। ऐसे में एक बार फिर अतिथि विद्वानों के रोजगार पर संकट खड़ा हो गया है। इसे देखते हुए जून में अतिथि विद्वानों द्वारा आंदोलन करने का फैसला किया गया है। अतिथि विद्वान नियमितिकरण संघर्ष मोर्चा ने कहा है कि बीजेपी सरकार में मुख्यमंत्री ने अतिथि विद्वानों को न हटाने की घोषणा की थी, जिसे उच्च शिक्षा विभाग नहीं मान रहा है। अतिथि विद्वान नियमितिकरण संघर्ष मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ सुरजीत सिंह भदौरिया ने बताया कि 11 सितंबर 2023 विधानसभा चुनाव के पूर्व महापंचायत में अतिथि विद्वानों से किए गए वादे, घोषणाएं अभी तक पूरे नहीं किए गए हैं। उच्च शिक्षा विभाग के द्वारा अधीन प्रदेश के अलग-अलग कॉलेज में पढ़ाते हुए अतिथि विद्वानों को 20 से 25 साल हो चुके हैं, ये सभी पीएचडी, नेट, स्लेट की योग्यताएं रखते हैं और इनकी उम्र भी 45 से 55 साल तक की हो चुकी है। हर बार सरकार के द्वारा चुनाव आने पर घोषणाएं की जाती हैं कि अतिथि विद्वानों को नियमित किया जाएगा, भविष्य सुरक्षित किया जाएगा और चुनाव खत्म होने के बाद कोई भी सुनवाई नहीं होती है। भदौरिया ने कहा कि 11 सितम्बर 2023 को अतिथि विद्वानों के हित में जब पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने घोषणाएं की थी तो उच्च शिक्षा मंत्री डॉ मोहन यादव भी उस कार्यक्रम में शामिल थे, जो आज मुख्यमंत्री हैं।

सीएम डॉ. यादव मिले मॉक ड्रिल में घायल जवानों से

कुशल क्षेम पूछकर डॉक्टर्स को घायल जवानों के समुचित उपचार के दिए निर्देश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मॉक ड्रिल के दौरान घायल हुए उपचाररत जवानों से शुक्रवार को अस्पताल पहुंचकर कुशलक्षेम पूछी। उन्होंने उनके उपचार की जानकारी भी डॉक्टर्स से ली। क्षेत्रीय विधायक श्री रामेश्वर शर्मा भी साथ थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घायल जवानों श्री संतोष कुमार और श्री विशाल सिंह से चर्चा कर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अस्पताल के चिकित्सकों को इन जवानों का समुचित उपचार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यदि जरूरत हुई तो इन जवानों को उच्च चिकित्सा संस्थान में भी भिजवाएं। चिकित्सकों ने बताया कि जवानों का इसी अस्पताल में समुचित उपचार हो जाएगा। घायल जवानों में कांस्टेबल श्री संतोष कुमार को आंख में गंभीर चोट आई है और हेड कांस्टेबल श्री विशाल सिंह भी चोटिल है। दोनों का सघन चिकित्सा कक्ष में इलाज चल रहा है। यह दोनों जवान सीटीजी होप फोर्स के सदस्य हैं और 25वीं बटालियन में पदस्थ हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घायल जवानों के परिजनों से भी मुलाकात की और उन्हें सांत्वना देखकर कहा कि दोनों जवानों के बेहतर इलाज के लिए सभी प्रबंध किए जाएंगे। चिंता की कोई बात नहीं है। जवानों का हर संभव इलाज कराया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घटना की जांच के निर्देश भी दिये हैं।

जयप्रकाश लखेरा और इनके परिजन से भी मिले मुख्यमंत्री- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाणगंगा चौराहे पर विगत दिवस हुई सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल श्री जय प्रकाश लखेरा से भी अस्पताल में मुलाकात की। उन्होंने श्री लखेरा को आश्वस्त किया कि उनका समुचित इलाज कराया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री लखेरा के परिजनों को भी आश्वस्त किया कि इलाज में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी।

राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर प्रदेशवासी लें जल जमाव रोकने का संकल्प

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'राष्ट्रीय डेंगू दिवस' के अवसर पर कहा है कि स्वस्थ मध्यप्रदेश के संकल्प को साकार करने के लिए स्वच्छता, जागरूकता और समय पर उपचार ही हमारा सबसे कारगर हथियार है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शुक्रवार को सोशल मीडिया 'एक्स' पर प्रदेशवासियों से आह्वान किया कि वे डेंगू का मुकाबला करने के लिए स्वच्छता को अपनाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सभी नागरिक एकजुट होकर यह प्रण लें कि अपने आस-पास कहीं पर भी जल जमाव नहीं होने देंगे। साथ ही मच्छरों से बचाव और डेंगू के लक्षण व इलाज के प्रति समाज को जागरूक करेंगे, क्योंकि बचाव ही डेंगू का उपचार है।

मुख्यमंत्री ने सिक्किम के स्थापना दिवस पर नागरिकों को दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सिक्किम राज्य के स्थापना दिवस पर सिक्किम के नागरिकों को बधाई दी। साथ ही उन्होंने बाबा महाकाल से राज्य के विकास और समृद्धि के लिए प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर कहा कि हिमालय की गोद में स्थित सिक्किम लोक परम्पराओं से समृद्ध है। यह राज्य अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य, आध्यात्म, पर्यटन और शांति की दिव्य स्थली है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में सिक्किम विकास की नई ऊंचाई हासिल करेगा।

बुर्का पहनकर आई महिला ने मारे हथौड़े

अशोका गार्डन में प्लॉट पर कब्जे का विवाद

भोपाल (नप्र)। राजधानी के अशोका गार्डन थाना क्षेत्र में गुरुवार दोपहर कब्जे की नीयत से हुए विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। नवाब कॉलोनी निवासी एक परिवार पर कुछ लोगों ने हथौड़े से हमला कर दिया। इस दौरान बुर्का पहने एक महिला भी हथौड़ा लेकर हमला करने वालों के साथ नजर आई।

हमले में परिवार के चार सदस्य घायल हुए हैं। घटना सेम अस्पताल के डायरेक्टर हफीज खान (उम्र 35 वर्ष) के प्लॉट की है। उन्होंने थाने में दर्ज रिपोर्ट में बताया कि गुरुवार दोपहर करीब 1:45 बजे उन्हें अपने घर के पीछे टीनशेड पर जोर-जोर से हथौड़े की आवाजें सुनाई दीं। जब उन्होंने पीछे का दरवाजा खोला, तो देखा कि कुछ लोग उनके प्लॉट पर बने टीन शेड को तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। हफीज ने बताया कि जब उन्होंने विरोध किया और कहा कि यह उनका प्लॉट है, तो आरोपियों ने पलटकर कहा कि यह जमीन उनकी है। इसी बात पर विवाद शुरू हो गया। इसी दौरान उनके पिता हफीज खान ने बीच-बचाव करने की कोशिश की। इस पर आरोपी शेख अकरम ने उन पर हथौड़े से हमला कर दिया। हफीज जब बचाने दौड़े तो हथौड़ा उनके हाथ पर लग गया। थोड़ी देर में हफीज की मां नसीम बानो और पत्नी तैय्या खान भी मौके पर पहुंचीं। रिपोर्ट में बताया गया कि हमलावरों में शामिल असमीना नामक महिला ने नसीम बानो को गालियां दीं और हाथ-मुक्कों से हमला किया। उसके साथ मौजूद अन्य लोगों ने भी हफीज, उनके पिता, मां और पत्नी के साथ मारपीट की, जिससे सभी को गंभीर चोटें आईं। घटना की सूचना मिलते ही पीड़ित पक्ष थाने पहुंचा, जहां से पुलिस ने उन्हें हमीदिया अस्पताल भिजवाया। मेडिकल परीक्षण के बाद रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। घटना का वीडियो भी सामने आया है, जिसमें बुर्का पहने महिला हाथ में हथौड़ा लिए दिखाई दे रही है।

भोपाल नगर निगम को आदमपुर खंती में आग पर फटकार

सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई, मांगी रिपोर्ट

भोपाल (नप्र)। भोपाल की आदमपुर कचरा खंती में अप्रैल में लगी भीषण आग को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने नगर निगम को फटकार लगाई है। वहीं, इस घटना की जांच सीपीसीबी (सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड) से मांगी गई है। 6 सप्ताह बाद यानी, 25 जुलाई को इस केस की सुनवाई होगी। मामला नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) से जुड़ा है। भोपाल के पर्यावरणविद् डॉ. सुभाष सी. पांडे ने आदमपुर खंती में आग लगने की घटनाओं को लेकर एनजीटी में मार्च 2023 में याचिका दाखिल की थी। इस पर 31 जुलाई-23 को नगर निगम पर 1 करोड़ 80 लाख रुपए का जुर्माना लगाया था। एनजीटी के इस आदेश के खिलाफ निगम ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई थी। जिस पर शुक्रवार को सुनवाई हुई। इसमें निगम की ओर से जुर्माने की राशि माफ किए जाने की मांग रखी

गई। दूसरी ओर, पर्यावरणविद् डॉ. पांडे की ओर से अभिभाषक हर्षवर्धन पांडे ने पक्ष रखा।

वकील ने तर्क रखा- आग अभी भी लग रही है

पर्यावरणविद् डॉ. पांडे ने बताया, सुनवाई के दौरान अभिभाषक पांडे ने कोर्ट में तस्वीरें दिखाते हुए कहा कि जिस बात के लिए निगम ने याचिका दाखिल की है, वह तो अभी भी लग रही है। पांडे ने 22 अप्रैल को आदमपुर खंती में लगी भीषण आग का उल्लेख भी किया। यह आग कई दिन में बुझी। धुआं कई किलोमीटर दूर से भी दिखाई दिया।

अर्जेंट सुनवाई में कोर्ट ने आदेश दिया- डॉ. पांडे ने बताया कि 22 अप्रैल को लगी आग को लेकर मैंने सुप्रीम कोर्ट में फिर से याचिका दाखिल की थी। जिस पर अर्जेंट सुनवाई की गई। इसमें बताया कि यह आग 15 दिन तक लगी रही। इस कारण आसपास के कई गांव के लोग प्रभावित हुए। आज आदेश में कोर्ट ने कहा कि नगर निगम सॉलिड वेस्ट का पालन नहीं कर रहे हैं। यदि नियमों का पालन करते तो कचरे का इतना बड़ा पहाड़ नहीं लगता। कचरे के ढेर अलग-अलग होने चाहिए थे। यदि ऐसा होता तो इतनी भीषण आग नहीं लगती।

खंती के आसपास ग्रीन बेल्ट नहीं- पांडे ने बताया, सुप्रीम कोर्ट की बैंच के सामने वकील पांडे ने स्ट्रॉन्ग तरीके से अपना पक्ष रखा। जिसमें कचरा खंती के आसपास ग्रीन बेल्ट नहीं होने की बात भी कहीं गई।

इसलिए सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड को शामिल करके जांच करवाई जाए। इस पर बैंच ने बोर्ड को जांच करने के आदेश दिए। साथ ही आग कैसे लगी? इसके बारे में भी बताया।

जल गंगा संवर्धन अभियान

केन्द्रीय भू-जल बोर्ड की टीम ने किया सर्वे

रिपोर्ट के आधार पर बनाए जाएंगे जल स्रोतों के रिचार्ज

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय भू-जल बोर्ड के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री राकेश सिंह के नेतृत्व में भू-जल विशेषज्ञों की टीम ने विदिशा जिले के जल स्रोतों का सर्वे किया है। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत इस तरह के सर्वे प्रदेश भर में कराए जाएंगे। इनकी सर्वे रिपोर्ट के आधार पर जल स्रोतों के रिचार्ज के लिए संरचनाएं बनाई जाएंगी। इस कार्रवाई को मानसून के सक्रिय होने से पूर्व पूरा कर लिया जाएगा।

जल गंगा अभियान के अंतर्गत प्रदेश की एकल नल जल योजनाओं के स्रोतों के स्थायित्व और निरंतरता के लिए रिचार्ज संरचनाओं का निर्माण किया जाना है। गांवों में रिचार्ज संरचनाओं के लिए स्थल चयन की सरल और सहज विधि आवश्यक है। इसके लिए प्रथम चरण में विदिशा जिले के तीन गांवों का चयन किया गया है। इनमें विदिशा विकासखंड का लालाखेड़ी, ग्यारसपुर विकासखंड के सिमरहार और मूडरा गणेशपुर शामिल हैं।

सर्वे के लिए वैज्ञानिक श्री सिंह और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की भू-जल विद सलाहकार डॉ. स्वाति जैन ने जनपद पंचायत और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के इंजीनियर्स को प्रशिक्षण दिया। गांवों में खनित नलकूपों का वास्तविक सर्वेक्षण कर उनकी गहराई, जलस्तर, केसिंग की जानकारी एकत्रित की गई। ग्रामीणों को रिचार्ज संरचनाओं की उपयोगिता समझाई गई। प्रशिक्षण में मुख्य रूप से रिचार्ज का मापदंड, वर्षा जल का प्रभावी रूप से रिचार्ज होना और प्रदूषण रहित जल से भू-जल पुनर्भरण किये जाने के बारे में बताया गया। वैज्ञानिक श्री सिंह ने बताया कि गांव के ढलान के अनुसार पानी को दिशा देकर 3-3 मीटर के फिल्टर के माध्यम से नलकूपों में पुनर्भरण किया जा सकता है।

चौपड़ा मंदिर स्थित भैरूगढ़ बावड़ी की सफाई- देवास जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत नगरीय निकायों और ग्राम पंचायतों में जल संरक्षण के कार्य किये जा रहे हैं। अभियान जल की एक-एक बूंद को सहेजने के लिए गुड़ी पड़वा से प्रारंभ हुआ ये अभियान गंगा दशहरा 30 जून 2025 तक जारी रहेगा। अभियान में जल संरचनाओं के निर्माण एवं गहरीकरण का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में नगर निगम देवास की टीम ने जन भागीदारी के साथ चौपड़ा मंदिर स्थित भैरूगढ़ बावड़ी 947 श्रमदान कर साफ-सफाई की।

शहडोल के गांव-गांव में श्रमदान से जल संरक्षण

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत शहडोल में 'आओ बचाएं जल, करे सुरक्षित कल', 'पानी बचाओ कल के लिये', और 'पानी की बर्बादी जीवन की बर्बादी' जैसे स्लोगन्स के साथ जल संरक्षण के लिये जनप्रतिनिधियों, जन अभियान परिषद के सदस्यों, समाजसेवी और स्थानीय नागरिकों के सहयोग से जल संग्रहण संरचनाओं के जीर्णोद्धार, नदी नालों की सफाई, बोरी बंधान और तालाबों का गहरीकरण जैसे जल संरक्षण के अनेक कार्य निरंतर किये जा रहे है। अभियान के अंतर्गत शहडोल के सुमन सरोवर और पोनांग तालाब की साफ-सफाई की गई।

इच्छापुर की प्राचीन शिव पावबावड़ी में स्वच्छता अभियान

बुरहानपुर में जन अभियान परिषद ने जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण के ईच्छापुर गांव में सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के सहयोग से शिव पावबावड़ी पर स्वच्छता अभियान संचालित किया। बावड़ी की साफ-सफाई के साथ ही विद्यार्थियों को जल संरक्षण की शपथ भी दिलवाई गई।

मप्र के 21 जिलों में बारिश, आज से लू चलेगी

- **बड़वानी में गिरा तेज पानी; इंदौर, उज्जैन में आंधी का अलर्ट**

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में शुक्रवार को भी आंधी-बारिश का अलर्ट है। बड़वानी में दोपहर डेढ़ बजे के बाद अचानक मौसम बदला और 20 मिनट तक तेज बारिश हुई। इंदौर, उज्जैन समेत 21 जिलों में बारिश हो सकती है। शुक्रवार को जिन जिलों में आंधी और बारिश का अलर्ट है, उनमें इंदौर, उज्जैन, रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, धार, देवास, खरगोन, हरदा, बुरहानपुर, खंडवा, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, मंडला, बालाघाट, उमरिया, रीवा, मऊगंज शामिल हैं। मौसम विभाग ने 17 मई से उत्तरी हिस्से के जिलों में हीट वेव यानी, गर्म हवाएं चलने का अलर्ट जारी किया है। बड़वानी में बारिश के बाद लोगों को गर्मी से राहत मिली है।

बड़वानी

सिवनी में 9 घंटे में डेढ़ इंच से ज्यादा बारिश

गुरुवार को भी प्रदेश में तेज आंधी, बारिश और गर्मी वाला मौसम रहा। सिवनी में 9 घंटे में डेढ़ इंच से ज्यादा पानी गिर गया। वहीं, इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में पौन इंच बारिश दर्ज की गई। उज्जैन, टीकमगढ़, धार, मंडला में भी बारिश हुई।

बैतूल, झाबुआ, रतलाम, उज्जैन, बुरहानपुर, छिंदवाड़ा, हरदा, अलीराजपुर, बड़वानी, खंडवा, खरगोन, बालाघाट, रायसेन, नर्मदापुरम और इंदौर जिलों में रात के समय मौसम बदला रहा। इधर, गुरुवार को कई शहरों में गर्मी का असर देखने को मिला। खजुराहो में 43.4 डिग्री, नौगांव में 42.7 डिग्री, शिवपुरी-रीवा में 42 डिग्री, सतना में 41.6 डिग्री, गुना में 41.3 डिग्री, सीधी में 41.2 डिग्री और उमरिया में पारा 40 डिग्री दर्ज किया गया। पचमढ़ी में सबसे कम 32.2 डिग्री सेल्सियस रहा। पांच बड़े शहरों की बात करें तो ग्वालियर सबसे गर्म रहा। यहां पारा 43 डिग्री दर्ज किया गया। भोपाल में 37.3 डिग्री, इंदौर में 36.4 डिग्री, उज्जैन में 37 डिग्री और जबलपुर में पारा 38.5 डिग्री सेल्सियस रहा।

इसलिए ऐसा मौसम

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, प्रदेश में साइक्लोनिक सर्कुलेशन और टर्फ की एक्टिविटी है। इस वजह से बारिश और आंधी चल रही है। अगले दो-तीन दिन में गर्मी का असर भी बढ़ेगा। उत्तरी हिस्से में तापमान में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है।

श्रमोदय आदर्श आई.टी.आई. भोपाल में प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मण्डल द्वारा संचालित श्रमोदय आदर्श आई.टी.आई., भोपाल में सत्र 2025-26 के लिए प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। यह संस्था विशेष रूप से पंजीकृत निर्माण श्रमिकों की संतानों को विभिन्न तकनीकी ट्रेडों में निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करती है। आवेदन के इच्छुक अभ्यर्थी कौशल विकास विभाग के डीएसडी पोर्टल पर 31 मई 2025 तक पंजीयन कर सकते हैं।

संस्था में संचालित दो वर्षीय पाठ्यक्रमों में तकनीशियन मेकाट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रीशियन, सीएनसी मशीनिंग तकनीशियन एवं सिविल इंजीनियरिंग असिस्टेंट शामिल हैं। वहीं एक वर्षीय पाठ्यक्रमों में फैशन डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी, इंटीरियर डिजाईन एण्ड डेकोरेशन, आईओटी स्मार्ट सिटी एवं वेल्डर ट्रेड संचालित हैं। वेल्डर ट्रेड में प्रवेश के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता कक्षा आठवीं उत्तीर्ण निर्धारित की गई है। शेष सभी ट्रेडों के लिए दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यह योजना पंजीकृत श्रमिकों एवं उनके आश्रितों के लिए तकनीकी दक्षता का सुनहरा अवसर प्रदान कर रही है। इच्छुक छात्र समय पर पंजीयन कर इस अवसर का लाभ उठा सकते हैं।

राजभवन के बाहर धरने पर बैठे कांग्रेस विधायक गिरफ्तार

काले कपड़े पहनकर की नारेबाजी; मंत्री शाह को बर्खास्त करने की मांग

भोपाल (नप्र)। कर्नल सोफिया कुरैशी पर विवादित और आपत्तिजनक बयान देने पर जनजातीय कार्य मंत्री कुंवर विजय शाह के खिलाफ देशभर में विरोध प्रदर्शन हो रहा है। कांग्रेस उनके बयान के बाद से लगातार हमलावार है, और इस्तीफे की मांग कर रही है।

शुक्रवार को मध्यप्रदेश के नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में कांग्रेस विधायकों का प्रतिनिधिमंडल आज राज्यपाल से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल को ज्ञापन सौंपकर मंत्री विजय शाह को बर्खास्त करने की मांग की। इसके बाद कांग्रेसी विधायक काले कपड़ों में राजभवन के बाहर धरने पर बैठ गए।

करीब एक घंटे तक धरने के बाद कांग्रेस विधायकों को पुलिस ने जबरन उठा दिया और गिरफ्तार कर वैन में बैठा लिया। बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया। कांग्रेस विधायकों ने कहा कि सरकार का यही चेहरा है। कांग्रेस की मांग को लेकर सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मामला कोर्ट में है। हम फैसले का इंतजार कर रहे हैं। कोर्ट का अपमान करना कांग्रेस की आदत रही है।

सिंघार ने पूछा- बीजेपी क्यों नहीं करना चाहती कार्रवाई- जेल से बाहर आने के बाद नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी निरंकुश हो गई है। जनप्रतिनिधि जनता की आवाज होता है। एक-एक विधायक तीन-तीन लाख वोटों वाले क्षेत्र से जीत कर आता है। मैं समझता हूं कि प्रदेश के विधायक जन भावनाओं को सामने रख रहे हैं। मीडिया ने भी इस बात को उठाया फिर भारतीय जनता पार्टी क्यों करवाई नहीं करना चाहती। क्या सेना का अपमान भारतीय जनता पार्टी नहीं समझती। क्या महिला का अपमान नहीं समझती। वह क्यों चुप बैठी है। कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने अपने समर्थकों के साथ भोपाल के मिंटो हॉल में महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने काले कपड़े पहनकर मंत्री विजय शाह के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। मसूद ने कहा- उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा का बयान, विजय शाह के खिलाफ कार्रवाई न करने का नतीजा है। अगर अभी भी सरकार कोई एक्शन नहीं लेती है तो सेना के खिलाफ ऐसे अपमानजनक बयान आते रहेंगे।

आरिफ मसूद ने आगे कहा कि लगातार 3 दिन गुजारने के बाद भी भारतीय जनता पार्टी ने सेना के खिलाफ अभद्र टिप्पणी करने वालों पर एक्शन नहीं लिया है। पार्टी न कार्यवाही करती है ना बर्खास्त करती है। इसे समझ आता है कि पार्टी की कथनी और करनी में अंतर है। इसी के चलते आज हम सभी लोग गांधी प्रतिमा के पास बैठकर विरोध कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि सरकार कोई आदेश दे नेताओं को बर्खास्त करने का। मुख्यमंत्री का कहना है कि एफ आई आर हुई है लेकिन न्यायाधीश के कहने के बाद एफआईआर हुई है। इससे पहले न्यायाधीश कोई निर्णय ले, पार्टी को नेताओं को बर्खास्त करना होगा। नहीं तो देश समझेगा कि ये लोग सेना का सम्मान नहीं करते।

विजय शाह के बंगले पर बेशर्म के पौधे लेकर पहुंचे कांग्रेस नेता- भोपाल में कांग्रेस नेता मंत्री विजय शाह के बंगले पर बेशर्म के पौधे लेकर पहुंचे।

अब डिप्टी सीएम का वो बयान जिस को लेकर कांग्रेस हमलावार

देवड़ा ने कहा, मन में बहुत क्रोध था। जो दृश्य उन्होंने देखा कि जो पर्यटक के रूप में गए थे, घूमने गए थे और वहां चुन-चुनकर के धर्म पूछ-पूछकर के और महिलाओं को एक तरफ खड़ा करके उनके सामने गोली मारी। बच्चों के सामने गोली मारी। उस दिन से दिमाग में बहुत तनाव था, पूरे देश के लोगों के दिमाग में।

जब तक इसका बदला नहीं लिया जाएगा और जिन माताओं के सिंदूर को मिटाने का काम जिन आतंकवादियों ने किया और आतंकवादियों को जिन्होंने पाला, जो पाल रहे हैं उनको नेस्तनाबूद नहीं कर देंगे, तब तक चैन की सांस नहीं लेंगे। प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहेंगे।...और पूरा देश, देश की वो सेना, वो सैनिक...उनके चरणों में नतमस्तक है। उनके चरणों में पूरा देश नतमस्तक है। उन्होंने जो जवाब दिया है, उसकी जितनी सराहना की जाए, जितना कहा जाए, एक बार उनके लिए जोरदार तालियां बजाकर स्वागत करिए।

संपादकीय

पलटीबाज ट्रंप !

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ताजा पलटी ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि इस आदमी की किसी भी बात पर भरोसा नहीं किया जा सकता। बीती 10 मई को उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच जारी संघर्ष में अचानक सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दोनों देशों में सीजफायर कराने का श्रेय ले लिया। लेकिन जब भारत ने ट्रंप को ऐसा कोई श्रेय देना तो दूर उनसे इस बारे में कोई बात न होने का अपना रूख कायम रखा तो ट्रंप ने कतर की राजधानी दोहा में अपने भाषण में सफाई दी कि उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच पिछले सप्ताह काफी खतरनाक चीजें हो रही थी। इसलिए हमने सिर्फ समस्या को सुलझाने में मदद की है। ट्रंप ने कहा, 'मैं यह नहीं कह रहा कि मैंने मध्यस्थता कराई।' मैंने समस्या सुलझाने में मदद की। हालांकि ट्रंप ट्रेड वाले बयान पर अडिग रहे। उन्होंने फिर कहा कि यह मामला तभी सुलझा जब मैंने व्यापार की बात की। हालांकि भारत ने शुरू से ही ट्रंप के दावे को खारिज कर दिया था। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने भी प्रेस ब्रीफिंग में केवल इस बात की पुष्टि की कि दोनों देशों में तनाव को कम करने के लिए अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच बात हुई थी। लेकिन ट्रंप से सीधी कोई बात नहीं हुई। इसमें कोई मध्यस्थ नहीं है । सीजफायर भी पाक डीजीएमओ द्वारा भारतीय डीजीएमओ से किए गए अनुरोध के बाद किया गया है। इसके बावजूद ट्रंप ने जल्दबाजी में मध्यस्थता का खुद श्रेय ले लिया। इधर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्पष्ट किया कि पाक के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर जारी है। सीजफायर हमने अपनी शर्तों पर किया है। उधर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने जरूर अपने भाषण में सीजफायर के लिए राष्ट्रपति ट्रंप का आभार माना। ट्रंप के इस रवैये से कई सवाल उठ रहे हैं। पहला तो यह जब उन्होंने किसी से कोई बात की ही थी तो सीजफायर का श्रेय खुद क्यों ले लिया? जब ट्रंप की बात पीएम मोदी से नहीं हुई तो पाक प्रधानमंत्री शरीफ ने सीजफायर का क्रेडिट किस बिना पर ट्रंप को दिया? क्या यह केवल चापलूसी थी? एक बात साफ है कि ट्रंप का कोई भरोसा नहीं। वो कभी भी और कुछ भी कह और कर सकते हैं। यह जानते हुए भी वो आज दुनिया की सबसे बड़ी ताकत अमेरिका के राष्ट्रपति हैं और उनका कहा एक शब्द भी पूरे विश्व में उथल पुथल मचा देता है। सवाल यह भी है कि कैसे एक वैश्विक महाशक्ति का राष्ट्राध्यक्ष इतने गैर जिम्मेदार तरीके से व्यवहार कर सकता है? वैसे राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा झूठ बोलते जाने की सच्चाई को खुद अमेरिकी मीडिया ने बेनकाब किया है। अमेरिकी अखबार 'वाशिंगटन पोस्ट' ने बतौर राष्ट्रपति ट्रंप के पिछले कार्यकाल के झूठ उजागर किए। इसके मुताबिक उन्होंने अपने पहले कार्यकाल में दिसंबर 2017 से दिसंबर 2021 के बीच कुल 30 हजार 573 झूठ बोले। यानी कि औसतन रोजाना 21 झूठ। ऐसे अगंभीर राष्ट्रपति को अमेरिकी जनता ने क्यों जिताया और उन्हें क्यों झेल रही है, समझना मुश्किल है। हैरानी की बात तो यह है कि ऐसे पलटीबाज ट्रंप की बातों पर भारत में विपक्ष भी पूरा भरोसा कर रहा है। यानी विपक्ष मोदी से जो सवाल एक हफ्ते से पूछ रहा था, उसका जवाब भी ट्रंप ने ही दे दिया है। भारत के सामने अब बड़ी चुनौती यह है कि वह ट्रंप जैसे नितांत अविश्वसनीय व्यक्ति के साथ कैसे डील करे? क्योंकि वो कब किसको धोखा दे देंगे और कब पलटी मारकर सामने वाले को शर्मिंदा कर देंगे, कोई नहीं जानता।

शत-प्रतिशत अंक आखिर माजरा क्या है?

नजरिया

फ़ैज़ मोहम्मद कुरैशी
लेखक शिक्षा पर कार्य करते हैं।

पिछले 10 -15 सालों में ऐसा क्या घटित हुआ कि कुल पास होने वाले बच्चे जो कि 20 से 30 प्रतिशत होते थे अब 85 से 90 प्रतिशत पास हो रहे हैं और वो भी 50 से ज़्यादा प्रतिशत अंक लेकर। ढ़ाई या तीन घंटों में 30-35 प्रश्नों से साल भर के ज्ञान या सीखे गए का निर्धारण कितना वाजिब है? स्कूलों, समाज व व्यवस्था में वे कौनसी प्रक्रियाएं घटित हो रही हैं जो बच्चों से इस प्रकार का परिणाम पैदा करवा रही हैं? और इसके आगे क्या है? इन पेंचों या सवालों के कुछ सहज उत्तर हो सकते हैं, पहला यह कि आजकल शिक्षार्थी लगभग 12 से 14 घंटे पढ़ने का श्रम करते हैं। दूसराः इनके परिवारों में पढ़ने-लिखने का माहौल है, तीसराः संसाधनों की उपलब्धता बढ़ी है, चौथाः इस पीढ़ी में याद रखने और रटने की अद्भुत क्षमता है, पांचवाः परीक्षाएं और अंक देने की व्यवस्था सरल हुई हैं, छठाः परीक्षा पार करने का ख़ास तरीका समझ आने लगा है और अंतिम यह कि इन सबका मिलाजुला रूप ही परीक्षाओं के परिणाम हैं।

कक्षा 10 और 12वीं के सत्र 24-25 के लिए परीक्षा परिणाम घोषित हुए हैं। खबरों के मुताबिक कक्षा 12वीं की दो छात्राओं ने 500 में से 499 अंक अर्जित किए। इन्हें इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल और पेंटिंग विषयों में 100 में से 100 अंक मिले हैं। इसी तरह कक्षा 10 वीं की एक छात्रा ने शत-प्रतिशत अंक प्राप्त किए। ये छात्राएँ इन अद्भुत परिणामों के लिए बधाई की पात्र है। बधाई की पात्र ये अकेली ही नहीं इसके परिवार, स्कूल और आस-पड़ोस का माहौल भी है जिसने इसके लिए ये मार्ग सुलभ किया। इस छात्रा की तरह ही कुल 88.39 प्रतिशत शिक्षार्थियों ने इस वर्ष कक्षा 12वीं उत्तीर्ण की है। कक्षा 10 वीं 93.66 त्न विद्यार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। वैसे इस साल कक्षा दसवीं में 90 प्रतिशत या उससे ज्यादा नंबर लाने वाले छात्रों की संख्या 1,99,944 है। वहीं कक्षा बारहवीं में यह संख्या 1,11,544 है।

कुल मिलाकर इन दोनों परीक्षा परिणामें से हमें बड़ी आशाजनक स्थिति दिखाई देती है। हमारे शिक्षक बेहतर शिक्षण कर रहे हैं और इसके चलते छात्र लगातार बेहतर प्रर्दशन कर रहे हैं। साथ कक्षा में जो अपेक्षित सिलेबस और परिस्थितियाँ हैं, उसे लानत दे रहे हैं कि तुम कितने ही ज़्यादा और उलझे हुए हो हमसे पार नहीं पा सकते। मगर शिक्षा को थोड़ा बहुत समझने वाले व्यक्ति की दृष्टि से देखता हूं तो मुझे इन परिणामों में कुछ पेंच नज़र आते हैं जैसे -

कक्षा 12वीं में किसी भी संकाय में ये दावा किया जा सकता है कि किसी छात्र को कक्षा में अपेक्षित ज्ञान, जानकारी, समझ का लगभग पूरा ज्ञान है? यदि नहीं तो शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम के क्या मायने हैं?

पिछले 10-15 सालों में ऐसा क्या घटित हुआ कि कुल पास होने वाले बच्चे जो कि 20 से 30 प्रतिशत होते थे अब 85 से 90 प्रतिशत पास हो रहे हैं और वो भी 50 से ज़्यादा प्रतिशत अंक लेकर।

ढ़ाई या तीन घंटों में 30-35 प्रश्नों से साल भर के ज्ञान या सीखे गए का निर्धारण कितना वाजिब है?

स्कूलों, समाज व व्यवस्था में वे कौनसी प्रक्रियाएं घटित हो रही हैं जो बच्चों से इस प्रकार का परिणाम पैदा करवा रही हैं? और इसके आगे क्या है?

इन पेंचों या सवालों के कुछ सहज उत्तर हो सकते हैं, पहला यह कि आजकल शिक्षार्थी लगभग 12 से 14 घंटे पढ़ने का श्रम करते हैं। दूसराः इनके परिवारों में पढ़ने-लिखने का माहौल है, तीसराः संसाधनों की उपलब्धता बढ़ी है, चौथाः इस पीढ़ी में याद रखने और रटने की अद्भुत क्षमता है, पांचवाः परीक्षाएं और अंक देने की व्यवस्था सरल हुई हैं, छठाः परीक्षा पार करने का ख़ास तरीका समझ आने लगा है और अंतिम यह कि इन सबका मिलाजुला रूप ही परीक्षाओं के परिणाम हैं। मगर फिर भी बात यही नहीं है या कहें कि उक्त कारण एक तरह से इन परिणामों का सतही जस्टीफिकेशन है।

इसके अलावा भी कुछ और है जिनका ये निर्मित

परिस्थितियां सटीकता से उत्तर नहीं दे पाती या इन परिणामों के भीतर या आसपास का कुछ, दूर कहीं व्यवस्था में निहित है! शिक्षार्थियों के इस उपलब्धि स्तर से थोड़ा आगे कुछ और मसलों को देखते हैं जो इस व्यवस्था को प्रभावित और निर्धारित भी करते हैं। जैसे - बच्चों के उच्चतर अंक अर्जित करने से माता-पिता या परिवार को मिलने वाली ख़ुशी, समाज में इससे बढ़ने वाला स्टेटस, विद्यालयों, कोचिंग संस्थानों का प्रमोशन आदि। क्या इन सब का भी इन परीक्षा परिणामों में कुछ हाथ है, जवाब होगा संभवतः हाँ। तो क्या परिणामों से प्रसन्नता भर ही है या गुणवततापूर्ण शिक्षा और शिक्षा के बाज़ार के बारे में एक बार सोचना चाहिए।

शैक्षिक दृष्टि से देखा जाए तो किसी भी स्थिति में ये दावा नहीं किया जा सकता कि कक्षा 10-12 में किसी भी शिक्षार्थी को अपने सिलेबस पर पूर्णतः अधिकार प्राप्त हो जाए। क्या ये संभव है कि अंग्रेज़ी या हिन्दी जो कि भाषा हैं, में किसी शिक्षार्थी को शत् प्रतिशत का अधिकार हो जाए। जबकि इसमें वर्तनी, व्याकरण, अभिव्यक्ति आदि शामिल हैं। विज्ञान विषय में अवधारणाएं, चित्र और सटीकता का शत-प्रतिशत संभव है क्या? गणित में समस्याओं को समझकर हल करना और विविध संक्रियाओं पर पकड़ होना संभव है क्या, सामाजिक विज्ञान में जानकारियां, अवधारणाएं, समझ और उसके कौशल मानवीय मूल्यों के साथ लेखन शामिल है।

यदि इस बात से सहमत होते हैं तो फिर बहुतायत में 80 से 99 प्रतिशत अंक अर्जित कर पाने के पीछे के कारण क्या हैं? क्या टॉपर बच्चों के पास ट्रिक्स हैं जो उन्हें मात्र ढ़ाई घंटे में इस स्थिति में पहुंचाने के लिए काफी हैं? यदि टॉपर बच्चों को छोड़ दें तो उन 70-75 प्रतिशत बच्चों के पास ऐसा क्या है जो पिछले 15-20 वर्षों की तुलना में इन्होंने या इस पीढ़ी ने अर्जित किया है। इन 15-20 वर्षों में एक पीढ़ी में आए शैक्षिक उपलब्धि के बदलाव को तलाशना काफी जटिल उपक्रम होगा। साथ ही शैक्षिक के अलावा अन्य परिस्थितियों को खंगालने का भी प्रयास करना होगा।

आईए कुछ व्यवस्थाओं की तरफ नज़र डालते हैं - एक शहर में कुछ विद्यालय (सरकारी और निजी दोनों) व कोचिंग जैसे संस्थान हैं और इनमें से अधिकतम का संचालन शिक्षार्थियों द्वारा दी गई फीस (सरकारी में काफी कम) से होता है। इस प्रतिस्पर्धा के दौर में जिस संस्थान से ज़्यादा बच्चे मेरिट में होंगे, उसी विद्यालय में अगले सत्र में अधिकाधिक नामांकन होंगे। एक व्यवस्था के रूप में, इन विद्यालयों में परीक्षा के समय सभी विद्यालयों में शिक्षकों को स्पष्ट निर्देश दिए जाते हैं कि हमारे विद्यालय से इतने प्रतिशत बच्चे तो कम से कम प्रथम श्रेणी में आना चाहिए। अब ये शिक्षकों की दिक़्क़त है कि उन्हें इतना तो करना ही होगा क्योंकि उनका भविष्य विद्यालय के हाथ में विद्यालय का शिक्षक के हाथ में है।

अब इसे थोड़ा शैक्षिक बनाते हैं। किसी भी उच्च कक्षा में एक शिक्षक पर कम से कम 40 बच्चे तो होते ही हैं। इन्हें अगर प्रचलित श्रेणी में बांटा जाए तो 10 बच्चे बेक बेंचर्स, 15-20 औसत और 10 से 15 लगभग प्रथम श्रेणी में आने लायक होते हैं। इनमें से भी सिर्फ 5 बच्चे वे हो सकते हैं जो 80-90 प्रतिशत की अपेक्षाओं के आस-पास जा सकते हैं। इस आम कक्षा में भी शिक्षक पर दबाव होता है कि कम से कम 30 बच्चे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हों।

किसी एक शैक्षिक सत्र में पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यापन लगभग 220 दिनों में किया जाना होता है। अगर विद्यालय की कुछ गतिविधियों जैसे सांस्कृतिक, खेलकूद तथा परीक्षा की तैयारी के दिनों को कम किया जाए तो अमूमन किसी शिक्षण सत्र में 170-190 दिन ही होते हैं। अब एक बार पुनः सोंचते हैं कि क्या 170-190 दिन की पढ़ाई में 98 प्रतिशत पाठ्यक्रम समझा, याद व मूल्यांकित कर परिणाम दिया जा सकता है क्या ?

इस परिस्थिति में शिक्षकों को यह तय करना होता है कि बच्चों से अपेक्षित परिणाम कैसे अर्जित कराए जाएं। ऐसे में सभी विद्यालयों में ''रिविज़न'' नाम का उपक्रम किया जाता है। इस उपक्रम में अध्यापन इस प्रकार होता है कि परीक्षा में पूछा जाने वाला लगभग 80 से 90 प्रतिशत हिस्सा यहीं कवर किया जाता है। इसके अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण बाज़ारू लक्षण जो इस पुरी स्थिति में बड़ी भूमिका निभाता है वह है ''प्रश्न बैंक, मॉडॅल क्वेश्चन पेपर, आदि''। एक खास तरह का पेटर्न हम इस प्रकार की पुस्तकों (पुस्तकों के लिए अपमानजनक शब्द!) में देख सकते हैं। इनके पिछले 8-10 वर्षों के प्रकाशन हमें बताते हैं कि इनके द्वारा अनुमानित लगभग 80 प्रतिशत प्रश्न परीक्षाओं में पूछे जाते है। तो क्या इस तरीके की भी परीक्षा परिणामों में भूमिका है ?

चलिए, इससे थोड़ा आगे बढ़ते हैं और कुछ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययनों को देखें तो वे हमें बताते हैं कि हमारे लगभग 80 प्रतिशत स्नातक अपनी डिग्री के अनुसार उत्तीर्ण तो हैं पर वे नियोक्ताओं की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं। कुछ अध्ययन तो ये भी कहते हैं कि वे कुशल नहीं हैं। तो इस विस्तार और 12वीं के परिणामों को मिलाकर देखने पर एक अलग तस्वीर दिखाई देती है वो यह कि ये सिर्फ अंक या प्रतिशत हैं जिनका शिक्षा और उससे जुड़े मूल्यों व पैदा होने वाले अवसरों से कुछ लेना-देना नहीं है। तो, 98-100 प्रतिशत अंकों को लेकर पास होना, 80 प्रतिशत बच्चों का अपनी बोर्ड परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना हमें क्या बताता है?

प्रधानमंत्री का संदेश आतंकवाद के विरुद्ध मानक

आतंकवाद से संघर्ष

अवधेश कुमार
लेखक दिल्ली निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दो टूक, प्रखर और समयानुकूल स्वाभाविक प्रखर आक्रामक तेवर और घोषणाओं के साथ भाव भंगिमाओं को देखने के बाद भारत के अंदर और पूरे विश्व में जिन्हें भी सीमा पार आतंकवाद, जम्मू कश्मीर और भारत-पाकिस्तान संबंधों को लेकर कोई भ्रम रहा होगा वह दूर हो जाना चाहिए। अगर दूर नहीं होता है तो देशों की अपनी कुटिल नीति हो सकती है और भारत के अंदर मानसिक ग्रंथि। वास्तव में 10 मई को टकराव रुकने की सेना की दोनों महिला अधिकारियों तथा विदेश सचिव के वक्तव्य के बाद कम से कम भारत के अंदर आश्वस्ति होनी चाहिए थी। उसके बाद लगातार दो दिनों तक सेना के तीनों अंगों के तीन शीर्ष अधिकारियों ने जिस तरह बिंदुवार सुस्पष्ट और मुखर भाषा में सैन्य रणनीति और स्टैंड को सामने रखा उनसे साफ हो गया था कि ऑपरेशन सिंदूर के तात्कालिक लक्ष्य और उद्देश्य पूरे हो गए हैं किंतु पाकिस्तान के विरुद्ध केवल सैन्य कार्रवाई छोड़कर संपूर्ण रणनीति जारी है। प्रधानमंत्री अगर घोषणा कर रहे हैं कि टेरर के साथ टॉक, ट्रेड यानी आतंकवाद के साथ बातचीत और व्यापार नहीं चल सकता है, पानी और खून एक साथ नहीं बह सकता है और उसके बाद अगर देश के अंदर कोई सोचता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप या वहां के विदेश मंत्री के पोस्ट के आधार पर भारत की नीति चल रही है तो वैसे लोगों के लिए क्या शब्द प्रयोग किया जाए यह पाठक तय कर लें।

प्रधानमंत्री ने कहीं भी अपने संबोधन में सीजफायर यानी युद्धविराम शब्द का प्रयोग नहीं किया और इसके पूर्व सेना के प्रवक्ताओं ने भी नहीं किया। विदेश सचिव के वक्तव्य तब में भी यह शब्द नहीं था। प्रधानमंत्री के वक्तव्य से साफ है कि आतंकवाद और सैन्य दुस्साहस रोकने की पाकिस्तान द्वारा दी गई गारंटी के आधार पर ही ऑपरेशन सिंदूर और सेना का प्रतिप्रहार रुका तथा इस कसौटी पर उसके आचरण को देखकर ही भविष्य तय होगा। वास्तव में प्रधानमंत्री के वक्तव्य में मूल पांच बातें स्पष्ट थी। पहला, पहलगाम हमले के बाद सीमा पार आतंकवाद और पाकिस्तान के संदर्भ में हमारा स्टैंड और पूरी सैन्य रणनीति कायम है। दूसरा, पाकिस्तान के हमले के लगातार विफल होने और उनके सैन्य अड्डों के तवाह होने के बाद शांति की पहल उन्होंने की और भारत अपनी शर्तों पर इसे स्वीकार किया । यह देश के अंदर बनाए गए झूठे नैरेटिव का उत्तर था जो सेना के प्रवक्ताओं द्वारा पत्रकार वार्ताओं में पहले भी दिया जा चुका था। आत्महीनता की मानस वाले समूह इसे स्वीकारने की जगह अपनी ही नीति को कटघरे में खड़ा करने लगे। अगर आतंकवाद हुआ तो कार्रवाई केवल आतंकवादियों और उनके अड्डों के विरुद्ध ही नहीं होगी इसे पाकिस्तानी सत्ता की भूमिका मानकर होगी। कोई भी समझ सकता है कि यह सीधी सीधी चेतावनी है । तीसरा, अमेरिका सहित दूसरे देशों के लिए संदेश था कि यह संभव नहीं की आतंकवादी देश न्यूक्लियर ब्लैकमेल के आधार पर शांति की बात करें और हम स्वीकार कर लें। यानी मार पड़ने से डरा पाकिस्तान किसी देश के पास यह कहते हुए जाता है कि हम न्यूक्लियर अस्त्र का प्रयोग करेंगे और उसके आधार पर कार्रवाई रोकने या समझौता करने को कहा जाएगा तो स्वीकार नहीं होगा। ध्यान रखिए, भारत ने जिन वायु सेना अड्डों पर पाकिस्तान में कार्रवाई की उनमें माना जाता है कि उसके तीन न्यूक्लियर इंस्टॉलेशन के पास थे और वह घबरा गया कि अगर भारत यहां पहुंच सकता है तो आगे हमारे लिए इसका भी उपयोग करना संभव नहीं होगा। चौथा, अगर पाकिस्तान से कोई बातचीत होगी तो केवल पाक अधिकृत कश्मीर पर और आतंकवाद पर। यह भारत के अंदर विरोधियों और विशेषकर ट्रंप प्रशासन को उत्तर था जो जम्मू कश्मीर समस्या को सुलझाने और तटस्थ स्थान पर बातचीत करने का दंभ भर रहे थे। मोदी सरकार का यह स्टैंड पहले से क्लियर था। और पांचवां, हमारे स्वदेशी निर्मित विषयों और सैनिक उपकरणों ने जैसी सफलता प्राप्त की है उसके बाद कोई देश यह न सोचे कि युद्ध के दौरान हमको उनकी अपरिहार्यता रहेगी।

गहराई से देखें अमेरिका सहित पश्चिमी देशों को संदेश के साथ ही यह भारत की रक्षा सामग्रियों के अंतरराष्ट्रीय बाजार की एक बड़ी ब्रांडिंग थी। यानी हम भी प्रतिस्पर्धा में उतर गये हैं। आप भले किन्हीं कारण से प्रधानमंत्री मोदी का सार्वजनिक विरोध करिए लेकिन किसी घटना को वे केवल तत्कालिकता में न देखकर उसके साथ दूरगामी और भविष्य के भारत के वैश्विक उद्देश्यों के आधार पर समग्र विचार कर सामने रखते हैं। देखा जाए तो भारत ने स्वयं को ऑपरेशन सिंदूर तथा उसके बाद प्रधानमंत्री के वक्तव्य से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक नेतृत्वकारी भूमिका वाले देश के रूप में प्रस्तुत किया है। अमेरिका की परेशानी यह भी हो गई कि अगर भारत इस तरह साहसिक सैन्य कार्रवाई करता रहा तो दुनिया के नेता का उसका स्थान खतरे में होगा और बड़ी संख्या में देश उसके साथ खड़े हो जाएंगे। तभी डोनाल्ड ट्रंप की भाषा भारत और पाकिस्तान दोनों के लिए समान थी। उन्होंने दोनों को महान देश बताया तथा दोनों के साथ सतत् व्यापार करने की भावना व्यक्त की। अचानक चीन के साथ व्यापार टकराव दूर करने के पीछे भी यही रणनीति हो सकती है।

प्रधानमंत्री को सारी बातें ध्यान में रही होगी और उसी अनुसार 22 अप्रैल के पहलगाम हमले के बाद पूरी तात्कालिक और दूरगामी सैन्य रणनीति, कूटनीति, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीति और राजनीति निश्चित हुई है। प्रधानमंत्री ने अमेरिका और यूरोप को भी यह कहते हुए आईना दिखा दिया कि आपके यहां भी 11 सितंबर, 2001 के और ब्रिटेन में ट्यूब के हमले के पीछे भी यही बहावलपुर के जैश ए मोहम्मद और मुरीदके के लश्कर ए तैयबा केंद्र की भूमिका थी। यह सच है कि तब वैश्विक आतंकवाद के केंद्र में ये स्थल थे। ओसामा बिन लादेन खुलेआम इन स्थानों में तकरीरें - बैठकें करता था, इनसे सीधे रिश्ते थे और अलकायदा एवं उसके द्वारा स्थापित इंटरनेशनल इस्लामिक फ्रंट के साथ सारे संगठन संबंद्ध हो गए थे। अगर प्रधानमंत्री कहते हैं कि उन्होंने हमारी माताओं - बहनों की मांगों के सिंदूर उजड़े तो हमने उनके अड्डों को ही उजाड़ दिया। साथ यह भी कि ऑपरेशन सिंदूर एक अखंड प्रतिज्ञा है। नहीं लगता कि इस समय विश्व का कोई भी नेता इतने खतरनाक पड़ोसी, जिसके पास न्यूक्लियर अस्त्रागार हो और मजहबी उन्माद के आधार पर देश के बड़े वर्ग को मरने- मारने पर उतारू करने की विचारधारा, इस प्रकार के विचार और तेवर सामने रख सकता है। अब न केवल आतंकवादियों बल्कि उनको प्रायोजित करने वाले पाकिस्तान की सेना और संपूर्ण सत्ता को इस चेतावनी को गंभीरता से लेना होगा कि उन्हें आतंकवाद का इंफ्रास्ट्रक्चर ध्वस्त करना ही होगा। नहीं करेंगे तो फिर ऑपरेशन सिंदूर की विस्तारित प्रचंड हमले के लिए तैयार रहें और वह निर्णायक होगा।

वास्तव में ऑपरेशन सिंदूर सीमा पार ही नहीं वैश्विक आतंकवाद से संघर्ष के लिए भी विचारधारा और रणनीति दोनों स्तरों पर एक विशिष्ट मानक बना है। यह बताता है कि नेतृत्व के पास इसके पीछे की संपूर्ण सोच और योजनाओं की पूरी समझ हो, प्रतिकार के लिए दीर्घकालिक सोच और रणनीति तथा उसे क्रियान्वित करने की संकल्पबद्धता और दृढ़ता हो तो पाकिस्तान जैसे दुष्ट देश को भी सबक सिखाया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने साफ कर दिया है कि आतंकवाद से पीड़ित विश्व शांति की बजाय इस रणनीति को अपनायें तथा भयभीत छोटे देश भारत के साथ आएं। कुल मिलाकर यहां से भारत की दक्षिण एशिया सहित संपूर्ण विश्व के आतंकवाद तथा कश्मीर जैसे मुद्दों के संदर्भ में विजय और समाधान के आत्मविश्वास से भरी निर्भीक, दूरगामी और तथा कमजोर देशों के लिए नेतृत्वकारी भूमिका सामने आई है। इस तरह ऑपरेशन सिंदूर के साथ भारत एक ऐसे नए दौर में प्रवेश का संदेश दे चुका है जहां उसकी स्वयं की सुरक्षा, आत्मनिर्भरता तथा वैश्विक शांति की उसकी अपनी दृष्टि सर्वोपरि है और किसी देश का इसके परे सुझाव या साथ उसे स्वीकार नहीं। क्या देश में विरोधी भी इस युगांतरकारी सच को स्वीकार करेंगे?

मैंगो और डिप्लोमेसी

निर्मल आनंद

रमेश रंजन त्रिपाठी
लेखक स्तंभकार हैं।

इन दिनों आमों की बहार है। फलों के राजा का बड़प्पन देखिए कि खास-उल-ख़ास होने के बावजूद वे 'आम' हैं। आम यानी साधारण, किंतु वे हैं असाधारण। आम्रवंश की गौरवशाली परंपरा के सुफल हैं आम। शुभ कार्य में बंदनवार के लिए आम्र पल्लव ही उत्तम माना जाता है। भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए आम की बौर अर्पित की जाती है। बौर से लदे आम को देखकर किसी का बौरा जाना आश्चर्यजनक नहीं। बौराना शब्द वहीं से आया है। यज्ञ-हवन में आम्र काष्ठ की समिधा बनाई जाती है। देवताओं की सहायता के लिए कामदेव ने आम के पत्तों की ओट से भोलेनाथ पर पुष्पबाण चलाए और परोपकार करते हुए अपनी जान गंवाई। शहर के आम के बगीचे गाँव में अमराई हो जाते हैं। अमराई की छाँव इतनी घनी और शीतल होती है कि बचपन में गर्मी की शादियों में इनके नीचे हमने बारात का जनवासा देखा है। कई हज़ार साल पुराने हमारे आम ने भारतीय उपमहाद्वीप से निकलकर दुनिया को अपने स्वाद और गुणों का लोहा मनवाया है।

खट्टे कम मीठे ज्यादा, लाजवाब स्वाद वाले रसाल ने आम से खास तक का सफर तय करने में बहुत तकलीफें झेली हैं। शैशव काल में इन्हें कूटकर चटनी बनाई जाती है। युवावस्था में भूनकर पना या काटकर अचार और सुखाकर अमचूर बनाते हैं। परिपक्व होने पर चूसा जाता है, छिलका उधेड़कर पल्प निकालते हैं या मिक्सी में डालकर जूस। इनके रस को अमावट में बदला जाता है। आम के मिठास की आखिरी बूंद तक निचोड़ी जाती है। और तो और, गुठलियों के भी दाम वसूले जाते हैं। फिर भी आम अपनी मधुरता और स्वास्थ्यवर्धक गुणों से सभी को तृप्त करते रहते हैं। शीर्ष पर रहने के लिए बलिदान तो देना होता है। राजा हैं तो दरबार भी लगेगा।

चाहे 'दरबार-ए-आम' हो या 'दरबार-ए-खास', दोनों में आम की झलक मिलना अस्वाभाविक नहीं। वैशाली की नगरवधू आम्रपाली ने राजदरबार में भरपूर ख्याति अर्जित की थी। खास को आम मुहावरों में जगह न मिले, ऐसा हो सकता है क्या? कुछ को आम खाने से मतलब हो सकता है, पेड़ गिनने से नहीं। सोचकर बताएँ कि बचपन में माली की नजर बचाकर आम तोड़ने से किस प्रतिभा का विकास होता है? या खुलेआम किन कामों को करने के लिए हिम्मत की जरूरत होती है?

दुनिया को राजनीति का महान ग्रंथ 'महाभारत' देनेवाले देश भारत में उत्पन्न 'आम' का संबंध डिप्लोमेसी से न हो, कैसे संभव है? हो सकता है चटनी के लिए कूटे जाते समय चतुर आम ने कूटनीति में कूदने का मन बना लिया हो या फलों का राजा होने के नाते राजनीति उसके गूदे में हो ! रोचक रिसर्च हो सकती है कि क्या इसीलिए हिंदुस्तान में सदियों से 'मैंगो डिप्लोमेसी' होती आ रहीं है? मुगलकाल से हाल के वर्षों तक नेताओं द्वारा अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के लिए स्वादिष्ट मधुर आमों का आदान-प्रदान होता आया है। मैंगो डिप्लोमेसी के कुछ उदाहरण दिलचस्प हैं। औरंगज़ेब ने पर्सिया के शाह अब्बास को आम भेजकर दोस्ताना संबंध बनाए थे। उन्नीस साल पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने अपनी भारत यात्रा में आमों का स्वाद चखा। संयोग देखिए कि इसके कुछ महीने बाद अमेरिका ने दो दशकों से भारतीय आमों के आयात पर लागू प्रतिबंध को एक समझौते के तहत हटा दिया था। और, दोनों देशों के बीच संयुक्त रूप से कृषि क्षेत्र में रिसर्च कार्यों में तेजी आई थी। विश्व में भारत आम का सबसे बड़ा निर्यातक है। चार साल पहले कोविड वैक्सीन की आपूर्ति में देरी से चिंतित बांग्लादेश की प्रधानमंत्री द्वारा उनके रंगपुर में पैदा हुए 2600 किलो हरिभंगा आम उपहार स्वरूप भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा के मुख्यमंत्री को भेजने की खूब चर्चा हुई थी। हमारा आम यूँ ही ख़ास नहीं है। वह अपने गुणों के कारण फलों का राजा कहलाने का पूरा हकदार है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाक साफ-देश में मुख्यतया आतंक की ही खेती

व्यंग्य

सुरेश रायकवार
लेखक व्यंग्यकार हैं।

शहर के कई आवारा, गुंडे-मवाली, छुटभैय्या-नेता, घूसखोरों, जमाखोरों, दंगाइयों की श्रृंखला में जब खोजी पत्रकार ने एक आतंकवादी का साक्षात्कार लिया तो वे स्वयं और उनका साक्षात्कार, दोनों ही खूब वायरल हो रहे हैं। समयाभाव की आम समस्या को ध्यान में रखते हुए साक्षात्कार के मुख्य अंश ही प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

पत्रकार - आपको आतंकी बनने की प्रेरणा कहाँ से मिलती है?

आतंकी - विश्व में हमारे पचासों संगठन है, हमारी शिक्षा-दीक्षा लालन-पालन सब इन्ही संगठनों की झण्डा बरदारी में होता है। हमारे पाकसाफ-देश में मुख्यतया आतंक की ही खेती होती है, हम उसी फसल का उत्पाद हैं।

पत्रकार - क्या आपको लगता है कि आप सही काम कर रहे हैं?

आतंकी - हमारे काम की अहमियत का अंदाज आप इसी से लगा सकते हैं कि हमारे मरने पर हमें शहीद का दर्जा मिलता है और हमारे जनाजे में लाखों की संख्या में लोग आते है। आध्यात्मिक तौर पर कहें तो इस कार्य को करते हुए मरने पर हमें स्वर्ग मिलता है।

पत्रकार - आपके पास सारे आधुनिक हथियार होते हैं?

आतंकी - जो हथियार अच्छे-अच्छे विकसित देशों के पास नहीं होते वो हमारे पास होते है। अब आप ही सोचिए बिना सरकारों की इच्छा और मदद के ये हथियार हम तक कैसे पहुँच सकते है? अभी हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प ने हमारे एक पुराने साथी से हथियार बेचने की डील फाइनल की है।

पत्रकार - आप जब किसी निर्दोष को बिना वजह जान से मारते है तब आपको थोड़ा भी पछतावा, मलाल नहीं होता या ईश्वर से डर नहीं लगता है?

आतंकी - हम किसी निर्दोष को नहीं मारते है, उसका सबसे बड़ा दोष ही यह होता है कि वह हमारे धर्म को नहीं मानता है। अधर्मी को मारने में कैसा पछतावा, कैसा मलाल? हम विधर्मियों को समूल नष्ट करके धरती पर शांति स्थापित करना चाहते हैं।

पत्रकार - आपने अपना कार्यक्षेत्र भारत को ही क्यों चुना?

आतंकी- इस प्रश्न के उत्तर में तो आतंकवादी ने बिल्कुल एके 47 की गोलियों जैसी बौछार कर दी। उसने कहना आरंभ किया - देखिये साहब, भारत ही एकमात्र देश है जहां हम अपनी पहचान छुपाकर आसानी से देश में कहीं भी वारदात कर सकते है, नेताओं की कृपा से आधार कार्ड आदि बनवाना बहुत ही सरल है फिर यहाँ के लोग भी बड़े सीधे-सादे और दयालु हैं, अव्वल तो उन्हे कोई मतलब नहीं होता कि आप क्या है, कौन हैं या कहाँ से आए हैं, फिर भी यदि किसी को कोई शक हो भी जाए तो कुछ भी झूठमाट की करुण कहानी बनाओ और वे तुरंत विश्वास कर लेते है। यहाँ के लोग पृथ्वीराज चौहान के समय से ही बिच्छू और साधु वाली कहानी से अत्यधिक प्रेरित लगते है, तभी तो हम बार-बार बड़ी-बड़ी वारदातें करते है और यहाँ के सहिष्णु लोग मानवीयता के आधार पर हमें माफ करके हर बार छोड़ देते हैं। हर घटना के बाद सरकारें मगरमच्छ जैसे आँसू बहाती है और लोगों का आक्रोश भी महीने-पंद्रह दिन में ठंडा पड़ जाता है, किन्तु इस बार ही अचानक, पता नहीं क्या हुआ कि सरकार कुछ ज्यादा ही सक्रिय दिखाई दी और उसने सेना के माध्यम से हमारे ठिकानों पर ही हमला बोल दिया। खैर, हमारी पाकसाफ सरकार ने इन ठिकानों को फिर से बनाने की घोषणा भी कर दी है। आपके देश के कई नेता या तो महान बनने के चक्कर में या हमारा उपयोग करने के लिए, हमारे कृत्यों पर 'हमे भटका हुआ' बताकर पर्दा डालते हैं ताकि हम पर होने वाली कड़ी सरकारी कार्यवाही रुक जाए। जबकि हम भटके हुए नहीं बल्कि पूरे होशो हवास में इन आतंकी संगठनों की सदस्यता लेते है।

पत्रकार - आप अपने विकास के संबंध में क्या सोचते हैं। क्या विश्व के लिए आतंक का विकास उचित है।

आतंकी - विश्व में हमारे कई संगठनों ने तो कई देशों में तख़्ता पलट कर अपनी सरकारें तक बना ली हैं और हमारी इन्ही सरकारों को दुनिया के कई देशों ने और संयुक्त राष्ट्र ने मान्यता भी दी है। अब आप ही बताइये, क्या हम गलत राह पर चल रहे हैं?

पत्रकार - इंसान को गोली मारने से पहले आप क्या देखते हैं?

आतंकी - हम जब किसी को मारते है तो आपकी सरकार की तरह व्यक्ति के साथ कोई जाति भेद नहीं करते हैं कि वह अगड़ा है, पिछड़ा है, दलित है या एससी/एसटी है, सबको एक समान ही मानते है। हाँ धर्म की जांच अवश्य करते हैं।

इतिहास, वर्तमान और कूटनीतिक उलझनें

भारत-पाक संघर्ष विराम

अरुण कुमार डनायक

लेखक गांधी विचारों के अध्येता हैं।

चार दिन के सैन्य तनाव के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्षविराम लागू हुआ, जो शांति की दिशा में एक सकारात्मक लेकिन नाजुक कदम माना जा रहा है। संघर्षविराम के पश्चात सीमित स्तर पर हुई गोलीबारी को मीडिया द्वारा अत्यधिक प्रचारित किया गया, जिससे इस पहल की स्थायित्वशीलता पर संदेह की स्थिति उत्पन्न हुई। दूसरी ओर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के संघर्षविराम लागू कराने संबंधी दावों ने भारत में एक नई बहस छेड़ दी है और भारत सरकार की ओर से अमेरिकी दावों पर समय रहते स्पष्ट व ठोस प्रतिक्रिया का अभाव आलोचना का विषय बना।

अमेरिका ने भारत-पाकिस्तान की एक तटस्थ जगह पर 'रचनात्मक वार्ता' शुरू करने की बात कही 7 भारत अभी तक किसी भी ऐसी व्यवस्था को अस्वीकार करता आया है जिसमें अमेरिका मध्यस्थ की भूमिका निभाए। यह प्रस्ताव, भारत द्वारा पूर्व में अस्वीकार किया जा चुका है और इससे स्पष्ट होता है कि ट्रंप प्रशासन भारत की कश्मीर नीति को भलीभांति नहीं समझता है। भारत ने विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता के माध्यम से इस मुद्दे पर अपनी नीति स्पष्ट कर दी है, लेकिन राजनीतिक हलकों में इसे नाकाफी माना जा रहा है। भारत की असहमति कश्मीर विवाद सहित बहुपक्षीय और तीसरे पक्ष की मध्यस्थता से जुड़े नकारात्मक अनुभवों का परिणाम है। भारतीयों का मानना है कि 1947-48 के कश्मीर युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में ब्रिटेन के प्रभाव में अमेरिका ने भेदभावपूर्ण तरीके से बहस को प्रभावित कर पाकिस्तान का समर्थन किया ।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लॉर्ड माउंटबेटन की सलाह पर कश्मीर विवाद को संयुक्त राष्ट्र में उठाया। वहाँ शेख अब्दुल्ला सहित भारतीय कूटनीतिज्ञों के कानूनी और सुरक्षा तर्कों को पर्याप्त महत्व नहीं मिला। भारत ने सेना की सलाह व संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप के बाद 31 दिसंबर 1948 को युद्धविराम लागू किया, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के जनमत संग्रह प्रस्ताव को लागू नहीं होने दिया। 1960 के दशक की शुरुआत तक संयुक्त राष्ट्र ने इस मुद्दे पर रुचि खो दी। बाद में, पश्चिमी देशों के दबाव और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के चलते भारत और पाकिस्तान ने कई बार आपसी मतभेदों को सुलझाने के लिए वार्ताएं कीं। हालांकि, ये प्रयास अधिकांशतः विफल ही रहे। अपवादस्वरूप 1960 में हुई सिंधु जल संधि को एक सफल जल-बंटवारा समझौता माना जाता है, जो अब स्थगित कर दी गई है। पंडित नेहरू ने भारत-पाक संबंध सुधारने के कई प्रयास किए, पर विपक्ष ने उनकी लगातार आलोचना की। आज भी कई लोग कश्मीर समस्या के लिए उन्हें ही जिम्मेदार मानते हैं।

1965 के भारत-पाक युद्ध के बाद, पाकिस्तान के मित्र अमेरिका ने कश्मीर विवाद सुलझाने में रुचि खो दी, और सोवियत संघ ने ताशकंद में समझौता वार्ता कराई। भारत को इस बार भी पक्षपात का सामना करना पड़ा, उसे कोई लाभ नहीं मिला, ताशकंद वार्ता के दौरान सदमे का शिकार हुए प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का निधन हो गया। पश्चिमी देशों की चालबाज़ी, अमेरिकी दबाव और पाकिस्तान के प्रति उनके झुकाव ने भारतीय नीति-निर्माताओं पर गहरा प्रभाव छोड़ा, जिससे पाकिस्तान के प्रति अधिक सतर्कता और सावधानी का भाव जागृत हुआ।

1971 के युद्ध ने भारत-पाकिस्तान संबंधों को नया मोड़ दिया। बांग्लादेश का निर्माण, 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों का आत्मसमर्पण और पश्चिमी मोर्चे पर रणनीतिक बढ़त के बाद, इंदिरा गांधी और जुल्फिकार अली भुट्टो ने शिमला में वार्ता की। शिमला समझौते के ज़रिए पुत्री ने कश्मीर को अंतरराष्ट्रीयकरण की दिशा में ले जाने वाली पिता की नीति को विराम देते हुए, इसे भारत-पाक के बीच एक द्विपक्षीय विषय के रूप में पुनर्परिभाषित कर दिया । दोनों पक्ष विवादों को द्विपक्षीय रूप से सुलझाने और बल प्रयोग से बचने पर सहमत हुए। भारत ने स्थायी शांति, बेहतर द्विपक्षीय संबंधों और अंतरराष्ट्रीय संधियों का सम्मान करते हुए 93,000 पाकिस्तानी युद्धबंदियों को रिहा किया और पश्चिमी मोर्चे की जीती हुई जमीन लौटा दी। हालांकि, पाकिस्तान ने बार-बार शिमला समझौते का उल्लंघन करते हुए विवाद को बहुपक्षीय मंचों पर उठाया, जिसका भारत ने कड़ा विरोध किया। भारत ने पाकिस्तान के साथ विवाद सुलझाने में तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को स्पष्ट रूप से अस्वीकार किया है। एक मजबूत लोकतंत्र होने के नाते कश्मीर जैसे मुद्दों पर विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं में मतभेद स्वाभाविक हैं, फिर भी अधिकांश भारतीय तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप या संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को अस्वीकार करेंगे ।

वर्तमान संघर्षविराम, स्पष्ट रूप से, एक स्वागतयोग्य, पर नाजुक कदम है। यह लंबे संघर्ष के समाधान की दिशा में निर्णायक कदम होगा, इसमें संदेह है। इस्लामाबाद, भारत के विरुद्ध आतंकवादी संगठनों का इस्तेमाल कर भारत में हिंसा व अस्थिरता फैलाने के उद्देश्य से काम करता है। जिससे कश्मीर में सामान्य स्थिति बहाल करने के प्रयास बाधित हुए हैं। पहलगाम में धार्मिक रूप से प्रेरित हिंसा की घटना के माध्यम से उसने भारत में सांप्रदायिक अस्थिरता भड़काने की कोशिश की। साथ ही, खुद को भारतीय आक्रामकता का शिकार बताकर इस्लामाबाद ने ट्रंप प्रशासन को बाहरी हस्तक्षेप की आवश्यकता का भरोसा दिलाया, यह दावा करते हुए कि यह परमाणु युद्ध को रोक सकता है। उसे चीन, तुर्की, अजरबैजान का प्रत्यक्ष और इस्लामिक सहयोग संगठन का परोक्ष समर्थन प्राप्त है। भारत के विरोध के बावजूद, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने पाकिस्तान को 2.423 बिलियन डॉलर के दो ऋण अभी हाल में दिए हैं । हालांकि यह आर्थिक स्थिरता के लिए बताया गया, लेकिन इसका उपयोग भारत विरोधी गतिविधियों में हो सकता है। आर्थिक संकट से जूझता यह देश चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे के कारण काफी हद तक चीन के प्रभाव में है। बांग्लादेश भी चीन के साथ मिलकर भारत के खिलाफ साजिश रच रहा है। पाकिस्तान की अप्रभावी लोकतांत्रिक व्यवस्था, कमजोर सरकार और सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर, जो भारत के प्रति कट्टर रवैया रखते हैं, के नेतृत्व में भारत के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति जारी रहने की संभावना है।

इस प्रकार, वर्तमान संघर्षविराम न केवल दो देशों के बीच सीमित सैन्य राहत है, बल्कि यह उस जटिल कूटनीतिक परिप्रेक्ष्य की भी याद दिलाता है जिसमें भारत को अपनी संप्रभुता, सुरक्षा, और अंतरराष्ट्रीय स्थिति को संतुलित करना पड़ता है। अमेरिकी हस्तक्षेप के प्रयास हों या पाकिस्तान की छद्म युद्धनीति - भारत की विदेश नीति का परीक्षण अभी शेष है।

क्या आपके रिश्ते सुविधा हैं या तनाव का कारण?

संबंधों का मनोविज्ञान

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

लेखक मनोचिकित्सक हैं।

हर इंसान संबंधों में जीता है। हम जिन लोगों से घिरे रहते हैं, वही हमारे मानसिक स्वास्थ्य को दिशा देते हैं। लेकिन सभी रिश्ते समान नहीं होते। कुछ हमें उर्जा देते हैं, तो कुछ धीरे-धीरे थका देते हैं। मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से इन रिश्तों को दो भागों में बांटा जा सकता है - सुविधाजनक और प्राथमिकता।

सुविधाजनक जोन वे रिश्ते होते हैं जिनमें आपकी उपस्थिति की ज़रूरत तब पड़ती है जब सामने वाले को समय काटना हो, अकेलापन महसूस हो या कोई लाभ लेना हो। ऐसे संबंधों में भावनात्मक गहराई नहीं होती। आप बस एक सुविधा बन जाते हैं, जिसे ज़रूरत पड़ने पर इस्तेमाल किया जाता है और फिर भुला दिया जाता है। इन संबंधों में रहने वाले व्यक्ति को बार-बार यह लग सकता है कि वह उपेक्षित हो रहा है। मन में यह सवाल उठता है कि क्या मैं वास्तव में इस रिश्ते में मायने रखता हूँ। ऐसे संबंध आत्म-संदेह को जन्म देते हैं और व्यक्ति के आत्म-सम्मान को धीरे-धीरे खत्म कर सकते हैं।

इसके विपरीत प्राथमिकता जोन में वे रिश्ते आते हैं जहाँ आप केवल विकल्प नहीं होते, बल्कि उस व्यक्ति के जीवन का अहम हिस्सा होते हैं। आपकी राय, समय, और भावनाओं को महत्व दिया जाता है। सामने वाला न केवल अपनी ज़रूरत में बल्कि अपने सुख-दुख, निर्णय और उत्सवों में भी आपको शामिल करता है।

ऐसे रिश्ते भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करते हैं। ये आत्मविश्वास को मजबूत करते हैं और मानसिक संतुलन को बनाए रखने में मददगार होते हैं।

तो आप कैसे जानें कि आप किस ज़ोन में हैं? कुछ सवाल खुद से पूछिए

1.क्या वे सिर्फ तभी संपर्क करते हैं जब उन्हें ज़रूरत हो?

2.क्या वे आपकी भावनाओं को महत्व देते हैं या केवल अपनी बातें कहते हैं?

3.क्या आपकी अनुपस्थिति उन्हें खलती है?

यदि इन सवालों के उत्तर सोच में डालते हैं, तो यह संकेत हो सकता है कि आप उस रिश्ते में केवल एक विकल्प हैं।

मनोचिकित्सक के तौर पर मेरी सलाह यही है कि हर व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह अपने जीवन में ऐसे संबंध बनाए जो उसे संबल दें, न कि मानसिक थकान। खुद को उन रिश्तों से बाहर निकालना जहां आप बार-बार उपेक्षित महसूस करते हैं, आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी कदम हो सकता है।

हमारे संबंध, हमारे आत्मसम्मान का प्रतिबिंब होते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि हम उन लोगों के साथ जुड़ें, जो हमें केवल सुविधा नहीं बल्कि प्राथमिकता समझें।

सायबर अपराधों से बचाव का एक उपाय जागरूकता

विश्व दूरसंचार दिवस विशेष

विवेक रंजन सिंह

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

सूचना क्रान्ति ने मानव जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। अब इंसान मोबाइल और इंटरनेट का गुलाम हो चुका है। सूचना और दूरसंचार के उपकरण अब मानव के भाग्य विधाता बन बैठे हैं । सूचना और संचार तकनीकियों के इस्तेमाल से मानव जीवन जितना सुलभ और आसान हुआ है उतना ही इंसान तरह तरह की मुसीबतों से भी घिरता जा रहा है। यह मुसीबत इंसान से अपने लिए स्वयं पैदा की है और इसका निवारण भी उसे स्वयं ही करना होगा। विश्व में जब पहली बार दूरसंचार उपकरणों का आविष्कार हुआ तब से लेकर आज तक इसमें नई नई तब्दीलियाँ आती गयीं और आज भी नए नए तकनीकि उपकरणों का अविष्कार जारी है। हमारे लिए सूचनाओं का आदान प्रदान आसान जरूर हुआ है मगर सूचनाओं के फैले जाल में कई ऐसे तत्व भी शामिल हैं जिन्होंने हमारे सामने कई मुसीबतों को खडा कर दिया है।

विश्व दूरसंचार और सूचना समाज दिवस हर वर्ष 17 मई को मनाया जाता है। इस दिवस के मनाने के पीछे का उद्देश्य यही है कि दूरसंचार के साथ साथ हम यह भी जाने और जागरूक बनें कि सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से हमारा जीवन कितना और किस प्रकार प्रभावित हुआ है। पहली बार 17 मई, 1969 विश्व दूरसंचार दिवस मनाया गया। हालांकि दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व और उसके प्रभाव को लेकर अन्तराष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू) की स्थापना 17 मई, 1865 को हुई थी जब पेरिस में प्रथम अंतरराष्ट्रीय टेलीग्राफ कन्वेंशन पर हस्ताक्षर कर संघ की स्थापना की गयी थी। 1973 में स्पेन के मालागा टोर्रेमोलिनोस में आईटीयू कांफ्रेंस में इस कार्यक्रम की औपचारिक रूप से शुरुआत की गई। तब से लेकर आज तक हर साल सूचना और दूरसंचार से सम्बंधित एक विषय का चयन किया जाता है और पूरी दुनिया के देश उस विषय पर कार्यक्रम करते हैं । 2005 में विश्व शिखर सम्मलेन में संयुक्त राष्ट्र महासभा के समक्ष 17 मई को विश्व सूचना समाज दिवस घोषित करने का आह्वान किया । एक साल बाद 2006 में यह प्रस्ताव मान लिया गया और तुर्की के अंताल्या में आईटीयू प्लेनिपोटेंट्री कांफ्रेंस में यह निर्णय लिया गया कि अब से 17 मई को विश्व दूरसंचार और सूचना समाज दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

विश्व दूरसंचार और सूचना समाज दिवस का उद्देश्य इंटरनेट और अन्य सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) के उपयोग से समाज में आने वाली संभावनाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना और साथ ही साथ डिजिटल खाई (गैप) को पाटने का तरीका भी बताना है। 1969 से अब तक इस दिवस पर कई महत्वपूर्ण विषयों पर विश्व भर में कार्यक्रम किये जा चुके हैं। जिसमे दूरसंचार और शिक्षा, अंतरिक्ष और दूरसंचार, विश्व दूरसंचार नेटवर्क, दूरसंचार के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग, दूरसंचार और परिवहन, दूरसंचार और मौसम विज्ञान, दूरसंचार और जनसंचार माध्यम, रेडियो संचार, ग्रामीण दूरसंचार, विकास के लिए दूरसंचार, राष्ट्र की सेवा में दूरसंचार, मोबाइल संचार आदि महत्वपूर्ण हैं। पिछले वर्ष इस दिवस पर जिस विषय पर कार्यक्रम किये गये वह सतत विकास के लिए नवाचार पर आधारित था।

साल 2025 का विषय है - डिजिटल परिवर्तन के लिए लैंगिक समानता ।

साल 2006 में प्रथम विश्व सूचना समाज दिवस मनाया गया। उसके बाद से लगातार जिन विषयों पर कार्यक्रम हुए उनमे सूचना और प्रद्योगिकी से जुड़े ऐसे विषय शामिल रहे जो समाज में सतत विकास और विकसित देश बनने की राह को आसान बनाने में सहायक साबित हो । भारत में भी सूचना और प्रौद्योगिकी की दुनिया में क्रान्ति इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में ही आई। सूचना और संचार के साधनों का इस्तेमाल बढ़ा जिसने मानव समाज के सामने गंभीर चुनौतियों को भी खड़ा कर दिया। आपको बता दें कि साल 2023 में विश्व सूचना समाज दिवस का विषय ही यह रखा गया कि कैसे सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के माध्यम से अल्प विकसित देशों को सशक्त बनाया जाय। भारत ने भी 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का जो सपना देखा है उसके लिए आवश्यक है कि यहाँ का नागरिक इंटरनेट और संचार माध्यमों के सही इस्तेमाल को जान पाए क्योंकि आने वाली दुनिया तकनीकि से लैस दुनिया है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समय है। 2018 में विश्व दूरसंचार एवं सूचना समाज दिवस सभी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सकारात्मक उपयोग को सक्षम बनाने पर आधारित था। भारत जिन सत्रह सतत विकास लक्ष्यों को लेकर चल रहा है उसकी सफलता में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी सहायक सिद्ध हो सकती है।

आज आवश्यकता है कि संचार माध्यमों की ताकत जाने और उनका सही दिशा में प्रयोग करें। साइबर अपराध जैसी समस्याओं से उबरने का यही सही तरीका है कि नागरिकों को इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी की दुनिया के बारे में बताया जाए और उन्हें इंटरनेट साक्षर बनाया जाए जिससे हम सूचनाओं के जाल में न फंसकर सही और सकारात्मक रूप से इंटरनेट क्रांति में शामिल हो सकें तथा समाज के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का सही इस्तेमाल कर सकें ।

भारत-अमेरिका रक्षा साझेदारी बनाम पाकिस्तान

सामयिक

अम्बिका कुशवाहा 'अम्बी'

दक्षिण एशिया में भू-राजनीतिक गतिशीलता भारत, अमेरिका और पाकिस्तान के बीच जटिल रक्षा और कूटनीतिक संबंधों से गहरे प्रभावित होती है। भारत और अमेरिका के बीच बढ़ते रक्षा सहयोग ने न केवल क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित किया है, बल्कि पाकिस्तान के साथ संबंधों को भी पुनर्परिभाषित किया है। हाल के भारत-पाकिस्तान युद्ध और मई 2025 के सीजफायर में अमेरिका की मध्यस्थता ने रक्षा समझौतों और क्षेत्रीय स्थिरता पर वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है।

पिछले दो दशकों में भारत और अमेरिका ने रक्षा सहयोग को मजबूत करने के लिए कई ऐतिहासिक समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। ये समझौते न केवल सैन्य क्षमताओं को बढ़ाते हैं, बल्कि वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा में साझा हितों को भी रेखांकित करते हैं। प्रमुख समझौतों में शामिल हैं-

1. COMCASA (2018): संचार संगतता और सुरक्षा समझौता, जो सुरक्षित संचार प्रणालियों और डेटा साझा करने की सुविधा प्रदान करता है।

2. BECA (2020): भू-स्थानिक सहयोग और विनिमय समझौता, जो सटीक नक्शों, टोही और खुफिया जानकारी के आदान-प्रदान को सक्षम बनाता है।

3. SOSA (2024): आपूर्ति व्यवस्था की सुरक्षा समझौता, जो रक्षा आपूर्ति श्रृंखला की विश्वसनीयता और सुरक्षा को सुनिश्चित करता है।

4. 10-वर्षीय रक्षा ढांचा समझौता: 2025 तक नवीनीकृत, यह समझौता संयुक्त सैन्य अभ्यास, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और रक्षा सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

5. iCET (Initiative on Critical and Emerging Technology): कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग और उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकियों में सहयोग को बढ़ावा देता है।

इन समझौतों के परिणामस्वरूप, भारत ने अमेरिका से 20 अरब डॉलर से अधिक मूल्य के हथियार और उपकरण खरीदे हैं, जिनमें P-8I पोसाइडन विमान, अपाचे हेलीकॉप्टर और MQ-9 रीपर ड्रोन शामिल हैं। मालाबार, युद्ध अभ्यास और टाइगर ट्रायम्फ जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यास दोनों देशों की सेनाओं के बीच अंतर-संचालनशीलता को मजबूत करते हैं। 2023 में शुरू हुआ रक्षा सहयोग रोडमैप खुफिया, निगरानी, टोही (ISR), समुद्री जागरूकता और हवाई युद्ध प्रणालियों जैसे क्षेत्रों में सहयोग को और गहरा करता है।

भारत-अमेरिका रक्षा समझौतों के पीछे कई रणनीतिक उद्देश्य हैं:

चीन के प्रभाव को संतुलित करना: हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की आक्रामक नीतियों, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर और भारत-चीन सीमा पर तनाव के जवाब में, दोनों देश एक साझा रणनीति पर काम कर रहे हैं।

आतंकवाद का मुकाबला: दक्षिण एशिया, विशेष रूप से पाकिस्तान से जुड़े आतंकवादी समूहों, के खिलाफ संयुक्त प्रयासों को मजबूत करना।

रक्षा प्रौद्योगिकी का विकास: भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमताओं को बढ़ाना और उन्नत प्रौद्योगिकियों तक पहुंच सुनिश्चित करना।

क्षेत्रीय स्थिरता: भारत-पाकिस्तान तनाव जैसे क्षेत्रीय संघर्षों को नियंत्रित कर दक्षिण एशिया में शांति बनाए रखना।

पाकिस्तान और अमेरिका के बीच संबंधों का इतिहास उतार-चढ़ाव भरा रहा है। शीत युद्ध के दौरान, पाकिस्तान अमेरिका का एक महत्वपूर्ण सहयोगी था, जिसने अफगानिस्तान में सोवियत संघ के खिलाफ अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौरान उसे F-16 लड़ाकू विमान और अरबों डॉलर की सैन्य सहायता प्राप्त हुई। हालांकि, 21वीं सदी में संबंधों में तनाव आया, विशेष रूप से आतंकवादी समूहों को आश्रय देने के आरोपों और पाकिस्तान के चीन के साथ बढ़ते संबंधों के कारण।

मीडिया स्रोत के अनुसार, 2025 में, अमेरिका ने पाकिस्तान को 845 मिलियन डॉलर की सहायता प्रदान की, लेकिन यह सहायता सख्त शर्तों और निगरानी के साथ थी।

भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव, विशेष रूप से कश्मीर और नियंत्रण रेखा (LoC) पर, दक्षिण एशिया की सुरक्षा स्थिति को जटिल बनाते हैं। मई 2025 में दोनों देशों के बीच हुए सीजफायर में अमेरिका ने महत्वपूर्ण मध्यस्थता भूमिका निभाई। ङ्ग पर कुछ पोस्ट्स में दावा किया गया कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस सीजफायर को अपनी कूटनीतिक जीत के रूप में प्रस्तुत किया। हालांकि, भारत ने इसे एक द्विपक्षीय समझौता बताया और कश्मीर जैसे संवेदनशील मुद्दों पर तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को स्पष्ट रूप से खारिज किया।

भारत और अमेरिका के बीच रक्षा सहयोग ने पाकिस्तान के लिए कई रणनीतिक और कूटनीतिक चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। जिनके कुछ प्रभाव निम्न हैं-

सैन्य असंतुलन: भारत की बढ़ती सैन्य क्षमताएँ, जैसे MQ-9 रीपर ड्रोन, S-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली और उन्नत मिसाइल प्रणालियाँ, पाकिस्तान के लिए गंभीर चुनौती हैं। ये प्रणालियाँ भारत को पाकिस्तान के पारंपरिक और परमाणु हथियारों के खिलाफ मजबूत रक्षा प्रदान करती हैं।पाकिस्तान ने अपनी मिसाइल प्रौद्योगिकी को उन्नत करने का दावा किया है, लेकिन भारत का रक्षा आधुनिकीकरण क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को स्पष्ट रूप से भारत के पक्ष में झुका रहा है।

कूटनीतिक दबाव: अमेरिका का भारत के साथ गहरा रक्षा सहयोग और हिंद-प्रशांत रणनीति में भारत की केंद्रीय भूमिका पाकिस्तान को असुरक्षित महसूस कराती है। अमेरिकी रक्षा अधिकारियों ने भारत के आत्मरक्षा के अधिकार का समर्थन किया है।

चीन का कारक: पाकिस्तान के चीन के साथ मजबूत संबंध, विशेष रूप से चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) और सैन्य सहयोग, भारत-अमेरिका रक्षा समझौतों के लिए एक जवाबी रणनीति के रूप में देखे जाते हैं।

X पर कुछ पोस्ट्स में दावा किया गया कि ऑपरेशन सिंदूर में JF-17 जैसे चीनी उपकरणों के कमजोर प्रदर्शन ने अमेरिका को अपनी कूटनीतिक स्थिति को मजबूत करने का अवसर प्रदान किया।

आर्थिक और रणनीतिक प्रभाव: भारत और अमेरिका के बीच 2030 तक 500 अरब डॉलर के व्यापार लक्ष्य में रक्षा व्यापार एक प्रमुख हिस्सा है। इसके विपरीत, पाकिस्तान को मिलने वाली अमेरिकी सहायता सीमित और सख्त शर्तों पर आधारित है, जो उसके रणनीतिक महत्व को कम करता है।भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमताएँ, जैसे डीआरडीओ द्वारा विकसित मिसाइल प्रणालियाँ, अमेरिकी प्रौद्योगिकी के साथ मिलकर, पाकिस्तान पर दबाव बढ़ाती हैं।

भारत-अमेरिका रक्षा समझौते दक्षिण एशिया में भारत की रणनीतिक स्थिति को मजबूत करते हैं, जिससे पाकिस्तान पर सैन्य और कूटनीतिक दबाव बढ़ता है। ये समझौते न केवल भारत की सैन्य क्षमताओं को बढ़ाते हैं, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के खिलाफ एक मजबूत गठबंधन बनाते हैं। दूसरी ओर, पाकिस्तान के साथ अमेरिका के संबंध आतंकवाद विरोध और क्षेत्रीय स्थिरता तक सीमित हैं, जिसमें सख्त शर्तें और कम विश्वास शामिल है।

मई 2025 का भारत-पाकिस्तान सीजफायर अमेरिका की मध्यस्थता का एक उदाहरण है, लेकिन भारत की स्पष्ट नीति, कश्मीर जैसे मुद्दों पर तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को अस्वीकार करना, यह दर्शाती है कि वह अपनी स्वायत्तता बनाए रखना चाहता है। भविष्य में, भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग और गहरा होने की संभावना है, जो पाकिस्तान के लिए नई चुनौतियाँ प्रस्तुत करेगा।

अतिथि शिक्षक को मानदेय नहीं मिला, 48 घंटे में भुगतान करें, अन्यथा भोपाल पहुंचेंगे मंत्री के बंगले

हीरालाल गोलानी सोहागपुर । सोहागपुर विधानसभा के विकासखंड में अतिथि शिक्षकों को मार्च, अप्रैल माह का वेतन का भुगतान अभी तक नहीं किया गया है । उल्लेखनीय है कि प्रदेश शासन ने 17 अप्रैल को अतिथि शिक्षकों का बजट दे प्रदान कर दिया है । अपनी प्रेस विज्ञप्ति में फाइटर क्लब के अध्यक्ष जितेन्द्र शर्मा एवं अन्य अतिथि शिक्षकों ने आरोप लगाया है कि अतिथि शिक्षकों को संबंधित अधिकारी एवं बाबुओं की प्रताड़ना अपनी चरम सीमा पर है। ज्ञातव्य है कि मध्यप्रदेश शासन ने 30 अप्रैल से सभी अतिथि शिक्षकों की सेवाएं समाप्त कर दी गई है। जिससे तीन महीने से बिना वेतन के घर चलना मुश्किल हो गया है। जबकि संचालनालय के जारी पत्र में डीईओ को आदेशित किया गया है। कि सभी अतिथि शिक्षकों का मानदेय भुगतान हर हाल में 5 मई 2025 तक कर दिया जाए । लेकिन आज 16 मई तक भुगतान नहीं किया गया है। इस आदेश के बाद स्थानीय अधिकारियों की लापरवाही से प्रदेश सरकार की छवि धूमिल हो रही है। जिससे अतिथियों शिक्षकों की आर्थिक कमर तोड़ टूट गई है। फाइटर क्लब के अध्यक्ष जितेंद्र शर्मा एवं अन्य अतिथि शिक्षकों ने शासन से शिक्षकों की पीड़ा समझकर तत्काल प्रभाव से भुगतान कराकर दोषी अधिकारियों पर कार्यवाही भी सुनिश्चित करें । अन्यथा 48 घंटे में वेतन भुगतान न होने की दशा में अतिथि शिक्षक भोपाल में मंत्री जी के बंगले पर पहुंचने को मजबूर होंगे।जिसकी समस्त जवाबदारी मध्यप्रदेश शासन की रहेगी।

गजेन्द्र पांडे सीएमओ पदस्थ

सुबह सवेरे सोहागपुर। नगर पंचायत परिषद में नवांगत सीएमओ गजेंद्र पांडे ने पदभार ग्रहण कर लिया है। इस अवसर पर सीएमओ माखननगर जी एस राजपूत का नगर पंचायत परिषद के कर्मचारियों ने उनका स्वागत किया।

जिला स्तरीय रोजगार मेला 20 मई को

बैतूल। जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, आईटीआई एवं जिला रोजगार कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में युवा संगम के तहत शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल में 20 मई को प्रातः 11 बजे से 4 बजे तक जिला स्तरीय रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेंटिसशिप मेले का आयोजन किया जाएगा। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि रोजगार मेले में 9 प्रतिष्ठित कंपनियों के प्रतिनिधि उपस्थित होकर अभ्यर्थियों का चयन करेंगे। उन्होंने जिले के सभी युवाओं से रोजगार मेले में उपस्थित होने का आग्रह किया है। वर्धमान फैब्रिक्स प्राइवेट लिमिटेड बुदनी में मशीन ऑपरेटर/ट्रेनी वर्कर के 100 पदों, कुलोदय टेक्नोपैक प्राईवेट लिमिटेड दमन गुजरात में मशीन ऑपरेटर/मैकेनिकल/हेल्पर के 100 पदों, यशस्वी ग्रुप भोपाल में अपरेंटिस के 20 पदों, फोर्स मोटर्स प्राईवेट लिमिटेड पीथमपुर में 20 पदों के लिए योग्यता 8वीं, 10वीं, 12वीं, आईटीआई होना अनिवार्य है।

मेंटेनेंस के कारण कल बंद रहेगी बिजली

बैतूल। बिजली कंपनी द्वारा 18 मई को क्रमशः 11 केव्ही फीडर गंज एवं कालापाठा फीडर जेएच कॉलेज चौक पर डीपी शिफ्टिंग कार्य एवं मेंटेनेंस कार्य किया जाना है। मेंटेनेंस कार्य के चलते रविवार को प्रातः 12 से दोपहर 2 बजे तक 33/11 केव्ही हमलापुर उपकेंद्र के गंज फीडर में आबकारी के पास, दिलबहार चौक, मैकेनिक चौक, बीजेपी कार्यालय भवन के पास, गुरुद्वारा रोड हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, गंज हाथी नाला वाला क्षेत्र, बीएसएनएल के पास, पुलिस कॉलोनी आदि क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। इसी प्रकार रविवार को प्रातः 9 से दोपहर 2 बजे तक 33/11 केव्ही हमलापुर उपकेंद्र में कालापाठा फीडर के लोहिया वार्ड, चुन्नी ढाना, राजेंद्र वार्ड, सिविल लाइन, संजय कॉलोनी, मुर्गी चौक, शिवाजी वार्ड, स्वीपर कॉलोनी, जेएच कॉलेज रोड आदि क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल शहर जोन-1के प्रबंधक ने बताया कि किन्ही अपरिहार्य कारणों से समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

कोतवाली पुलिस ने चोरी के आरोपी को किया गिरफ्तार

बैतूल। कोतवाली पुलिस ने चोरी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। जिसे न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार 29 दिसंबर 2024 को फरियादी गेंदलाल पिता चैतराम यादव, निवासी घाना द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि उनके मोरन स्थित खेत से अज्ञात व्यक्ति द्वारा गन्ना पेरने की मशीन जिसकी अनुमानित कीमत 20 हजार रूपये है, चोरी कर ली गई है। रिपोर्ट पर थाना कोतवाली में धारा 303(2) भारतीय न्याय संहिता के अंतर्गत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। विवेचना के दौरान माल मशरूका एवं अज्ञात आरोपी की तलाश की जा रही थी। 15 मई 2025 को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि घाना निवासी जयपाल उर्फ बुद्धू यादव ने गन्ना पेरने की मशीन चोरी की है। पुलिस टीम द्वारा जयपाल उर्फ बुद्धू यादव पिता रामेश्वर यादव, निवासी घाना को अभिरक्षा में लेकर पूछताछ की गई, जिस पर उसने चोरी करना स्वीकार किया।

मेंटेनेंस नहीं किए जाने के कारण आए दिन खराब हो रही डायल 100

दस साल से सड़कों पर दौड़ रहे वाहनों का निकला दम

संजय द्विवेदी

बैतूल। शहर के सार्वजनिक, रहवासी और शहर के आउटर भागों में लोगों को त्वरित पुलिस सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से डायल-100 उपलब्ध कराई गई हैं, जिससे घटना, वारदात, हादसा होते ही सूचना मिलते तत्काल पुलिस पहुंच सके। इस वाहन से लोगों को अस्पताल या फिर थाने पहुंचाया जा सके, लेकिन ये वाहन अब खस्ताहाल हो गए हैं। वाहनों के रखरखाव में कमी से ये जल्द वर्कशॉप पहुंच रहे हैं, जिससे उस क्षेत्र में तैनात होने वाली डायल-100 लोगों को मदद नहीं कर पा रही है। स्थिति यह है कि जिला मुख्यालय बैतूल में गंज और कोतवाली थानांतर्गत करीब सौ से अधिक गांव आते हैं, लेकिन इनमें सिर्फ एक ही डायल 100 सेवा दे रही हैं। जिसका मेंटेनेंस नहीं होने के कारण कभी भी खराब हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में इमरजेंसी सेवा के लिए थाने के वाहनों की मदद ली जा रही है। बता दे कि बैतूल जिला मुख्यलय में गंज थाना, कोतवाली थाना, अजाक थाना, महिला थाना आते हैं। यह थाने शहर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को भी कवर करते हैं। बैतूल जिला मुख्यालय में

महज एक डायल 100 में मौजूद हैं। जो गंज और कोतवाली थाना अंतर्गत आने वाले सभी क्षेत्रों को कवर करती है। बताया जा रहा है कि कोतवाली की डायल 100 लंबे समय से बंद पड़ी है। गंज थाना क्षेत्र की डायल 100 के भरोसे ही दोनों थाना क्षेत्रों की आने वाली सूचनाओं को अटेंड करने की जिम्मेदारी है। जिसकी वजह से लोगों को समय पर फर्स्ट रिस्पांस व्हीकल की सहायता नहीं मिल पा रही है।

जिले में 19 थाना और 13 पुलिस चौकियां

जिले में 19 थाना और 13 चौकी हैं। इनमें डायल 100 वाहनों की संख्या महज 18 है। इनमें भी कई वाहन दस साल से अधिक पुराने होने की वजह से गर्मी के मौसम में हांपने लगे हैं। जिसके कारण आए दिन वाहनों में समस्या बनी रहती है। हालत यह है कि शिकायत मिलने पर भी मौके पर पुलिस की डायल 100 का पहुंच पाना संभव नहीं हो रहा है। पीड़ितों को शिकायत लेकर थानों के चक्कर काटने पड़ रहे हैं। वैसे तो शिकायत में कुछ ऐसे भी मामले रहते हैं जिसका निराकरण डायल 100 मौके पर पहुंचकर कर देती है।

जुलाई में नई डायल 100 मिलने की संभावना

जुलाई माह से नई डायल 100 गाडियां जिले को मिलने की संभावना जताई जा रही है। बताया जा रहा है कि नई डायल 100 गाडियों के लिए टेंडर किए गए हैं। टेंडर खुलने के बाद जल्द ही नई गाडियां थाना पहुंचेगी, लेकिन इससे पहले नई एजेंसी को तय मानकों के आधार पर नए वाहन खरीदने और उन्हें एफआरवी में मोडिफाई करवाने में दो महीने से ज्यादा समय लग सकता है। फिलहाल पुरानी डायल 100 के भरोसे ही पुलिस विभाग में कामकाम चल रहा हैं।

2015 में शुरू हुई थी डायल 100 सेवाएं

थाना क्षेत्रों में सेवाएं दे रही डायल 100 वाहन करीब दस साल पुराने हो चुके हैं। 1 नवंबर 2015 को डायल 100 सेवा शुरू की गई थी। जिस कंपनी को टेंडर दिया गया था उसकी एक्सटेंशन की समयावधि भी पूर्ण होने को हैं। ऐसे में कंपनी ने एक्सटेंशन अवधि खत्म होने से पहले ही डायल 100 वाहनों का मेंटेनेंस करना बंद कर दिया है। ऐसे में दस साल पुराने यह वाहन अब हांपने लगे हैं। गर्मी की वजह से कई बार डायल 100 वाहनों के अंदर से धुआं उठने की घटनाएं भी सामने आ चुकी हैं। जो स्थिति है उसमें लोगों को समय पर इस सुविधा का लाभ नहीं मिल रहा है।

ये है कार्यशैली

डायल-100 वाहन में नोडल प्वाइंट के हिसाब से थाने का स्टाफ लगाया जाता है, जिसमें प्रधान आरक्षक सहित सिपाही मौजूद रहता है। इसके अलावा जरूरत पडने पर तत्काल कंट्रोल के जरिए पुलिस मदद ली जाती है। भोपाल के डायल-100 के सेंट्रल कमांड कंट्रोल सिस्टम के जरिए सूचना जाती है। सूचनाकर्ता के क्षेत्र की डायल-100 को संदेश के साथ लोकेशन भेज दिया जाता है, इससे सूचनाकर्ता की मदद के लिए पुलिस मौके पर पहुंच जाती है।

इनका कहना है -

डायल 100 वाहनों में मेंटेनेंस की समस्या को लेकर हमारे द्वारा एसपी ऑफिस से भोपाल कार्यालय को लगातार अवगत कराया जाता रहता है। मुख्य निर्णय भोपाल सेंट्रल ऑफिस से ही होना है। अभी टेंडर भी तीन माह के लिए आगे बढकर 31 जुलाई 2025 तक हो गए हैं। उम्मीद है कि उसके बाद स्थिति में और सुधार होगा।

- भैयालाल उइके, प्रभारी, डायल-100, जिला बैतूल

राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर जागरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

बैतूल। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजेश परिहार द्वारा शुक्रवार को राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर जागरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। सीएमएचओ डॉ.परिहार ने बताया कि डेंगू, चिकनगुनिया आदि रोग एडीज मच्छर के काटने से फैलते हैं, यह मच्छर साफ पानी में पनपता है, अतः सप्ताह में एक बार कूलर, टंकी एवं अन्य स्थानों पर भरे हुये पानी को अवश्य खाली करना चाहिये। पानी को खुले स्थानों एवं टायर, गमले, नारियल के खोल आदि में जमा नहीं होने देना चाहिये। जहां पानी खाली करना संभव न हो

वहां मीठा तेल डाल दें जिससे पानी के ऊपर तेल की परत बन जाती है, और एडीज मच्छर के लार्वा नष्ट हो जाते हैं। सायं काल में एवं बाहर घूमते समय प्रयास करना चाहिये कि फुल बाहों के कपडे पहने, सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें, मच्छरों को भगाने वाली क्रीम एवं रिपेलेन्ट लिक्विड का इस्तेमाल करें, पानी को स्थिर न रखें पानी खाली करते रहें। मच्छर कहीं भी पनप सकता है, अतः आस-पास की स्वच्छता एवं पानी के संग्रह का भी विषेष ध्यान रखें, कूलर का खस भी प्रतिवर्ष बदलें एवं पुराने खस को जलाकर नष्ट करें। डेंगू बुखार के लक्षण किसी भी प्रकार का तेज बुखार आना, मांसपेशियों, जोड़ों में दर्द होना, सिर दर्द होना एवं शरीर पर लाल चकत्ते पडना आदि। इस प्रकार के लक्षण दिखाई दें तो तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर जांच एवं इलाज कराएं। डेंगू के प्रति स्वयं जागरूक रहें एवं अन्य लोगों में भी जागरूकता का प्रसार करें। इस अवसर पर जिला मीडिया अधिकारी श्रीमती श्रुति गौर तोमर, डीपीएम डॉ विनोद शाक्य, उप मीडिया अधिकारी महेशराम गुबरेले, परिवार कल्याण शाखा प्रभारी भगत सिंह उइके सहित मलेरिया कार्यालय एवं स्थानीय कार्यालय के कर्मचारी मौजूद रहे।

45 दिवसीय प्रशिक्षण के बाद 16 युवाओं को अहमदाबाद में मिला रोजगार

वन विकास से ग्राम विकास की ओर बढ़ा कदम

बैतूल। ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से दक्षिण बैतूल सामान्य वनमंडल द्वारा मिशन वनवीर के तहत वन विकास से ग्राम विकास थीम पर 45 दिवसीय कौशल उन्नयन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण 24 मार्च से 07 मई तक वन विद्यालय, बैतूल में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का समापन कार्यक्रम 15 मई को आयोजित किया गया, जिसमें 28 युवाओं ने भाग लिया। समापन कार्यक्रम में सीसीएफ बासु कनोजिया, डीएफओ दक्षिण विजयानन्तम टी.आर, अनुदेशक अमित खन्ना, वनक्षेत्रपाल खुशालसिंह बघेल, नीतेश कुमार उपस्थित रहे। प्रशिक्षण उपरांत कुल 28 प्रशिक्षणार्थियों में से 16 युवाओं को गुजरात के अहमदाबाद स्थित मदरसन लिमिटेड कंपनी में रोजगार हेतु प्लेसमेंट मिला है। इन युवाओं को प्रति माह 15 से 20 हजार रुपये तक का वेतन प्राप्त होगा। शेष प्रशिक्षणार्थी स्वरोजगार से जुड़कर अपने गांव में ही जीवनयापन के लिए नया रास्ता चुन रहे हैं। समापन समारोह में बासु कनोजिया द्वारा प्रशिक्षण में भाग लेने वाले सभी 28 युवाओं से संवाद कर उनके अनुभवों को जाना गया। उन्होंने मदरसन

लिमिटेड में चयनित 16 युवाओं को और स्वरोजगार से जुड़े अन्य प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं ने अपने 45 दिनों के अनुभव साझा करते हुए कहा कि यदि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित होते रहे तो वनों पर निर्भरता कम होगी, और वनों की क्षति भी रोकी जा सकेगी। उन्होंने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से उन्हें रोजगार मिला, आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी कदम बढ़ा है। दक्षिण बैतूल सामान्य वनमंडल की यह पहल अब तक 437 समिति सदस्यों को कौशल उन्नयन प्रशिक्षण प्रदान कर चुकी है, जिनमें से 257 प्रशिक्षणार्थियों को देश की विभिन्न कंपनियों में प्लेसमेंट मिल चुका है, जबकि 180 युवक-युवतियां स्वरोजगार से जुड़े हैं। यह अभियान ग्रामीण विकास की दिशा में एक प्रभावी प्रयास सिद्ध हो रहा है।

नगर गौरव दिवस के रूप में मनाया जाएगा मां ताप्ती जन्मोत्सव

विशेष परिषद बैठक में मिली अनेक निर्माण कार्यों को मंजूरी

बैतूल/ मुलताई। नगर पालिका परिषद में विशेष बैठक का आयोजन अध्यक्ष वर्षा गड़ेकर ने की अध्यक्षता में नगर परिषद् सभा कक्ष में किया गया। बैठक में कुल 8 पार्षद और सीएमओ वीरेन्द्र तिवारी उपस्थित रहे। इस बैठक में मां तापती जन्मोत्सव को नगर गौरव दिवस के रूप में मनाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। साथ ही टेकड़ा स्कूल के पास खाली जमीन पर कॉम्पलेक्स और भक्त निवास निर्माण की डीपीआर शासन को भेजने का प्रस्ताव पारित किया गया। इस बैठक में आगामी वर्ष 2025-26 के लिए होर्डिंग और बस स्टैंड की खाली दुकानों की नीलामी को स्वीकृति दी गई। जल तृप्ति योजना के

तहत आरओ वाटर वितरण कार्य की समयसीमा भी बढ़ा दी गई है । मुलताई नगर के नगरी क्षेत्र में अनेक निर्माण कार्य को भी इस परिषद बैठक में मंजूरी दी गई जिसके तहत इंदिरा गांधी वार्ड के साप्ताहिक बाजार में बिजली लाइन, शेड और शिफ्टिंग कार्य को हरी झंडी मिल गई है। वहीं विवेकानंद वार्ड में पुरानी कन्या शाला की जगह शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने की मंजूरी दी गई। पटेल वार्ड में तीन स्थानों पर नाली निर्माण, तिलक वार्ड में मां तापती मंदिर से मुख्य सडक़ तक सीसी रोड, और अंबेडकर वार्ड में जसबीर सिंह के घर से मुख्य सडक़ तक सीसी रोड निर्माण को स्वीकृति दी गई। बैठक के उपरांत अध्यक्ष एवं सीएमओ ने बस स्टैंड का निरीक्षण किया, जहां गंदगी और खाली दुकानों पर अवैध कब्जे पाए गए। अध्यक्ष ने अवैध कब्जे हटाने और त्वरित कार्रवाई का भरोसा दिलाया।

राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर कामथ में कार्यशाला का आयोजन

डेंगू मच्छरों के रोकथाम ली शपथ

बैतूल/ मुलताई। राष्ट्रीय डेंगू दिवस के अवसर पर ग्राम कामथ उप स्वास्थ्य केन्द्र में डेंगू कार्यशाला का आयोजन किया गया। बीएमओ डॉ.पंचमसिंह ने डेंगू कार्यशाला का शुभारंभ करते हुये डेंगू संबंधित बीमारी के लक्षण बचाव एवं उपचार के बारे में ग्रामीणो को विस्तार पूर्वक जानकारी दी। साथ ही एम.आई. द्वारा लार्वा नष्टीकरण के संबंध मे ग्रामीणो को बताया कि घरो मे रखे संग्रहित पानी को सप्ताह में एक बार खाली कर टाके-टकी को धोकर सुखाकर नया पानी भरे एवं टाके टंकी को ढाककर रखे। छत पर रखे फालतू कंटेनर, टीन के डिब्बे, टायर, नारियल के खोल, मटके में पानी जमा न होन दे घरो मे चल रहे कूलर का पानी हफ्ते में एक बार बदल दे। घरो के आस-पास गड्ढो में पानी जमा न होने दे नलियो के पानी की निकासी करते रहे। एवं साफ-सफाई रखे साथ ही बुखार आने पर तुरंत खून की जांच करवाये। कार्यशाला के समापन अवसर पर समस्त उपस्थित जनों ने डेंगू कार्यशाला डेंगू रोग के रोकथाम के लिए सदैव प्रनशील रहने की शपथ ग्रहण कर कार्यशाला का समापन किया ।इस अवसर पर बी.एम.ओ डॉ. पंचमसिंह , एम. आई दिवाकर किनकर,ग्राम पंचायत सचिव चुन्नीलाल पवार, बी.पी.एम प्रवीण नागले, सी.एच.ओ ललीता धोटे, ए.एन.एम सविता यादव ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधि एवं आशा कार्यकर्ता रेखा मालवीय, एवं कंचन गाठे तथा ग्रामीण आमजन उपस्थित थे।

एफआरएचएस इंडिया संस्था द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय के सभाकक्ष में 15 मई को खंड विस्तार प्रशिक्षकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन एफआरएचएस इंडिया संस्था की उपस्थिति में किया गया। इस दौरान परिवार कल्याण कार्यक्रम से संबंधित प्रशिक्षण प्रदाय करते हुए संस्था की जानकारी दी गई। सीएमएचओ डॉ राजेश परिहार द्वारा वर्ष 2023-24 एवं 2024-25 में परिवार नियोजन कार्यक्रम के अंतर्गत किए गए महिला एवं पुरुष नसबंदी शल्य चिकित्सा उपलब्धि की ब्लॉकवार समीक्षा की गई। प्रशिक्षणार्थियों को वर्ष 2025-26 के परिवार कल्याण लक्ष्य के संबंध में उपलब्धि अर्जित करने के निर्देश दिये गये। प्रशिक्षण में जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़े को लेकर विस्तृत चर्चा भी की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डीपीएम डॉ विनोद शाक्य, उप जिला मीडिया अधिकारी महेशराम गुबरेले, जिला एमएण्डईओ अधिकारी मनोज चढ़ोकार, परिवार कल्याण शाखा प्रभारी भगतसिंह उइके, एफआरएचएस इंडिया के कोआर्डिनेटर सुरेश वर्मा,

एफआरएचएस इंडिया जिला प्रबंधक योगेश पवार, नर्सिंग सुपरवाईजर सुरेश बागद्रे एवं जिले के सभी 10 विकासखंडों से खंड विस्तार प्रशिक्षक उपस्थित रहे।

कहानियों के माध्यम से परिवार को जोड़ने और रिश्तों को मजबूत बनाने की दी सीख

कोसमी में हुआ अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस का आयोजन

बैतूल। मध्यप्रदेश राज्य आनंद संस्थान के आनंद विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस 15 मई को शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था, औद्योगिक क्षेत्र कोसमी, बैतूल में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम सतत् विकास के लिए परिवार-उन्मुख नीतियों और सामाजिक विकास के लिए आयोजित द्वितीय विश्व शिखर सम्मेलन की थीम पर आधारित था। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में सेवा निवृत्त परिवारों के सदस्य, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के प्रशिक्षक और समाजसेवी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रमुख अतिथियों में पूर्व प्राचार्य केआर चंदेलकर, सेवानिवृत्त

सदस्य और साहित्यकार दिनेश दीक्षित, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य रेवाशंकर पंडाग्रे, वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी दिलीप कुमार सोनी, पुष्पा नागले, विनिता पाटील, विवेक दायमा, मास्टर ट्रेनर तुलिका पचौरी, समाजसेवी निमिषा शुक्ला, आनंदम सहयोगी आशीष पचौरी और जिला संपर्क व्यक्ति महेश गुंजेले सहित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था की 250 से अधिक महिला प्रशिक्षार्थी उपस्थित थीं। दिनेश दीक्षित ने संयुक्त परिवार की महत्ता पर अपनी दो कहानियों के माध्यम से परिवार को जोडऩे और रिश्तों को मजबूत बनाए रखने की बात की। उन्होंने कहा कि परिवारों का महत्व भावनात्मक और सामाजिक स्थिरता के लिए भी अनिवार्य है। पूर्व प्राचार्य के आर चंदेलकर ने कहा कि परिवार एकजुट रहता है तो उसे कोई तोड़ नहीं सकता। हमें मनमुटाव छोडक़र परिवार को एक रखना चाहिए, जिससे समाज में सकारात्मकता और खुशहाली बनी रहे। प्राचार्य रेवाशंकर पंडाग्रे ने शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के बारे में बताया कि यहां 300 से अधिक ग्रामीण क्षेत्र की छात्राएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं और इस वर्ष शत-प्रतिशत प्रवेश हुआ है। कार्यक्रम का मंच संचालन विनिता पाटील द्वारा किया गया और आभार आनंदम सहयोगी आशीष पचौरी ने व्यक्त किया।

भोपाल : तहज़ीब, तालीम, तरक्क़ी और तासीर का शहर

दुआ है कि गंगा-जमुनी तहज़ीब को कभी कोई बुरी नज़र न लगे और इसकी खूबसूरती बनी रहे

ताहिर अली

(लेखक जनसंपर्क संचालनालय, म.प्र. शासन, के सेवानिवृत्त संयुक्त संचालक हैं)।

यदि मंदिरों से घंटियों की मधुर आवाज़ और मस्जिदों से बुलंद अज़ान एक साथ गूंजे, तो समझ लीजिए आप उस शहर में हैं, जहाँ सदियों से गंगा-जमुनी तहज़ीब ने अपने खूबसूरत रंग बिखेरे हैं। यह शहर है भोपाल - झीलों की नगरी, नवाबी संस्कृति की परछाई, प्राकृतिक सौंदर्य की मिसाल और ऐतिहासिक धरोहरों का सजीव संग्रह।

तहज़ीब और भाईचारा

भोपाल की सबसे बड़ी खासियत इसकी साझा संस्कृति है। यहाँ तालाब के बीचों-बीच मंदिर, मस्जिद और मजारों का साथ-साथ दिखना आम बात है। यही वह शहर है, जहाँ सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक - ताजुल मस्जिद है, तो वहीं विश्व की सबसे छोटी मस्जिद मानी जाने वाली 'ढाई सीढ़ी मस्जिद' भी यहीं स्थित है। भोपाल में उर्दू भाषा का उपयोग लगभग सभी समुदाय के लोग करते हैं।

भोपाल की सड़कों पर चलते हुए अगर कोई राहगीर किसी मोहल्ले का पता पूछ ले, तो भोपाली उसे दरवाजे तक छोड़कर आते हैं। यही इसकी तहज़ीब है, यही इसकी पहचान है। भोपाल की एक बात ओर मशहूर है कि जो भी भोपाल आता है यहां के लोग उसे सीने से लगा लेते हैं। हिन्दुस्तान के किसी भी कोने से जो भोपाल आया जैसे नौकरीपेशा या कोई भी व्यवसाय के लिए यहीं का होकर रह गया। भेल कारखाना इसका जीता-जागता उदाहरण है। ज्यादातर नौकरी पेशा अधिकारी एवं कर्मचारी रिटायर होने के बाद भोपाल को ही अपना मानकर यहीं बस गए। काफी लोग कारोबार करने के उद्देश्य से यहीं आकर आबाद हो गये।

भोपाल की मज़ेदार 'उर्फ़ियत' – नाम के पीछे नाम की दुनिया!

भोपाल, भोपाली और भोपालियत की पहचान केवल ताल-तालैया और ऐतिहासिक इमारतों आबोहवा, तहजीब और संस्कृति तक सीमित नहीं है, बल्कि अपनी अनोखी और मज़ेदार 'उर्फ़ियतों' के लिए भी मशहूर है। जब किसी मोहल्ले में एक ही नाम के कई लोग हों, तो पहचान बनाने के लिए नाम के पीछे कुछ जोड़ना लाज़मी हो जाता है, फिर चाहे वो पहनावे से जुड़ा हो, बोलचाल से, शौक से या किसी मज़ेदार किस्से से- हर भोपाली को मिल जाता है उसका ख़ास 'उर्फ़ी टाइटल'।

तो मिलिए भोपाल की इस अनोखी नामावली से

तारिक़ टाई, जो हमेशा टाई में दिखते थे, तारिक़ चपटे, जिनके गाल खुद गवाही देते हैं, तारिक़ होंठ कटे, जिनके होंठों की कहानी हर गली जानती है, और तारिक़ झबरे, जिनकी आंखें ही उनकी पहचान हैं। आरिफ़ अंडे का नारा शहर भर में मशहूर है, तो आरिफ़ बुलबुल अपने गले से सबको दीवाना बना देते हैं। बाबूलाल 501 नाम की सिगरेट की तरह मशहूर हैं, और सेठ छगनलाल, जिनका 'सेठपना' मोहल्ले में आज भी कायम है।

रविंद्र सिंह लखरत, बाबूलाल लठमार, चांदमल हिटलर, मोहन पंचायती, लाला मुल्कराज, सरदारमल लालवानी, नाहर सिंह सूरमा भोपाली, कन्हैयालाल 'बीड़ी' और के. अमीनउद्दीन-301 तो अपनी शान और रसूख के लिए पहचाने जाते हैं। अखिलेश अग्रवाल गफ़ूर और वहीद अग्रवाल की उर्फ़ियतें उनकी दोस्ती और कारोबार की दास्तान सुनाती हैं। हफ़ीज़ पाजामे और चांद कटोरे का नाम सुनते ही भोपाल मुस्कुरा उठता है, वहीं चांद चुड़वे मोहल्ले की कहानियों के नायक हैं। सुरेश 501, अनिल अग्रवाल पटीये, और देवेश सिमहल वकील साहब अपने नाम से ही काफ़ी असरदार हैं। बाबू साहब घोड़े और बाबू साहब नाम की सादगी में गजब की शान है। आलू बड़े, ज़ायकों की दुनिया के हीरो हैं, और लोक सिंह ताल ठोंकू हर बहस में जीत की गारंटी हैं। रईस ब्रुश, मुन्ने मॉडल ग्राउंड, मुन्ने पेंटर, मुईन क़ुद्द और माहिर मदीना - ये नाम जैसे ही कान में पड़ें, पूरा मोहल्ला मुस्करा उठता है।

भोपाल की गलियों में लोग नाम से कम और उर्फ़ियत से ज़्यादा जाने जाते हैं। जावेद चपटे और जावेद चिराटे जैसे नामों में मज़ाकिया तंज है, तो बन्ने पहलवान और बन्ने लखेरा में मोहल्ले की दो अलग-अलग शख्सियतें झलकती हैं। कल्लू अट्ठे, बाबू भड़भुजे, मुन्ने फुक्की, ईरानी और डूंड जैसे नाम रोज़मर्रा की आदतों, मज़ाक या पेशे से जुड़े हैं। सईद बुल, छुटकटे, वहीद ढेलकी, आरिफ पिस्स, और अनफिट भोपाल की उस खास तासीर को दर्शाते हैं, जहां हर नाम के पीछे एक किस्सा है – हँसी, अपनापन और तंज से भरा। यही भोपाल की असली पहचान है – उर्फ़ियतों में बसी यारी और यादें।

भोपाल की इन मज़ेदार उर्फ़ियतों में वो अपनापन है, जो किसी GPS में नहीं मिलता - सिर्फ मोहल्लों की यादों और बातों में ही जिंदा रहता है।

भोपाल में हिंदू-मुस्लिम एकता : सांस्कृतिक सह-अस्तित्व की मिसाल

भोपाल की सांस्कृतिक विरासत की सबसे मजबूत कड़ी उसकी हिंदू-मुस्लिम एकता है, जो सिर्फ सामाजिक सौहार्द का प्रतीक नहीं, बल्कि ऐतिहासिक संघर्षों के बीच पनपी सहिष्णुता और साझेदारी की अनूठी मिसाल है। जब देश के अन्य हिस्सों में अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति ने सांप्रदायिक तनाव को जन्म दिया, तब भी भोपाल ने अपनी गंगा-जमुनी तहज़ीब को संजोए रखा। हर वर्ग के लोगों ने एक दूसरे से बहुत प्यार मोहब्बत के साथ दिली लगाव रखा। सन 1812 की लड़ाई में हिंदू योद्धाओं जैसे डांगर सिंह, जय सिंह, और अमन सिंह पटेल ने भोपाल की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहां तक कि युद्ध में महिलाओं ने भी सक्रिय भागीदारी की, यह दिखाते हुए कि भाईचारा केवल धार्मिक स्तर पर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के स्तर पर भी जीवित था।

भोपाल रियासत के प्रशासन में हर कालखंड में हिंदुओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही। दीवान (प्रधानमंत्री) जैसे उच्च पदों पर लाला घानी राम, लाला फूलानाथ, राजा अवध नारायण जैसे हिंदू अधिकारी रहे। यह समावेशिता केवल औपचारिक नहीं थी – ये अधिकारी नवाबों के विश्वासपात्र भी थे। नवाब कुदसिया बेगम के दरबार में एक हिंदू, एक मुसलमान और एक ईसाई मंत्री नियुक्त थे – यह उस समय की धार्मिक विविधता के प्रति सम्मान का प्रतीक था।

रियासत के इंजिमाम (शामिल करने) के बाद शरीफ़ शरणार्थियों में (उच्च परिवार के शरणार्थी) सरदार गुरबख्श सिंह भी थे, जिनके बेटे अमरीक सिंह रंजीत होटल चलाते हैं। वे बहू मियाँ के साथ ईद पर नवाब साहब को सलाम करने जाते। एक बार नवाब साहब ने पूछा कि भोपाल कैसा लग रहा है, तो सरदार साहब ने हाथ जोड़कर कहा कि जहाँ गरीब परवर सरकार का साया हो, वहाँ कोई कैसे न खुश हो – यह कहते हुए वे भावुक हो गए।

धार्मिक सहिष्णुता के उदाहरण

नवाबों ने हिंदू नागरिकों और जागीरदारों के अधिकारों को बराबरी से सम्मान दिया। नवाब सुल्तान जहां बेग़म ने रंग पंचमी पर रंग और सावन के झूले जैसे हिंदू पर्वों में भाग लिया, और गरीब हिंदुओं के लिए 'सदाव्रत' योजना शुरू की, जिसमें उन्हें भोजन और यात्राओं के लिए सामग्री दी जाती थी। हवा महल की दीवार इसलिए टेढ़ी बनाई गई क्योंकि पास के एक हिंदू नागरिक ने अपनी जमीन बेचने से इनकार किया था – सरकार ने उस निर्णय का सम्मान किया।

भोपाल में न कभी विशुद्ध मुस्लिम मोहल्ले रहे, न विशुद्ध हिंदू – सब एक साथ रहते थे। त्योहार, शादियाँ, दुःख-सुख सब साझे होते थे। इसी समरसता ने उर्दू भाषा के विकास को सहज वातावरण दिया। उर्दू न केवल दरबार की भाषा बनी, बल्कि आम जीवन की भाषा भी, जिसमें दोनों समुदायों ने योगदान दिया। भोपाल का इतिहास केवल एक रियासत की कहानी नहीं, बल्कि यह सांप्रदायिक सौहार्द, धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक सहभागिता का जीवंत दस्तावेज़ है। यह आज के भारत के लिए भी एक प्रेरणा है कि विभिन्न धार्मिक समुदाय कैसे सम्मान, सहयोग और साझा विरासत के आधार पर एक सशक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।

दिनों के नाम पर मोहल्लों के नाम

भोपाल की दिलचस्प रचनात्मकता इसके मोहल्लों के नामों में भी झलकती है - मंगलवारा, बुधवारा, इतवारा, जुमेराती, पीरगेट - इन मोहल्लों में किसी एक समुदाय की पहचान नहीं बल्कि पूरे शहर की साझी संस्कृति की झलक मिलती है। यही कारण है कि यहाँ के लोग आपदाओं में एक-दूसरे की मदद के लिए सबसे पहले खड़े नजर आते हैं।

शुजा ख़ां का अड्डा भोपाल की उन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध गलियों में से एक है, जिसकी मिट्टी ने कई नामचीन और असरदार शख्सियतों को जन्म दिया है। यूँ तो रियासत भोपाल में जुमेराती के काका मियाँ, इब्राहिमपुरा के तब्बू मियाँ और शफ़ीक़ पठान, लक्ष्मी टॉकीज़ के रफ़्फ़ू पहलवान, बुधवारा के डॉक्टर ज़हीरुलइस्लाम, इमामी गेट के हकीम अख्तर आलम और सर्राफा चौक के मुन्नू लाल जोहरी जैसे कई मशहूर लोग गुज़रे हैं, मगर शुजा ख़ां का अड्डा की अपनी एक अलग ही तारीख़ है। यहाँ की सरज़मीन न केवल ज़रखेज़ रही है, बल्कि इसने समाज, अदब और कारोबार के कई सितारों को भी रौशन किया है। समय के साथ यह इलाका अब एक बड़ा कारोबारी केंद्र बन चुका है, जिसकी वजह से पुराने बाशिंदों के कई ख़ानदान सुकून की तलाश में शहर के अलग-अलग वीआईपी इलाकों में जाकर बस गए हैं। लेकिन इस मोहल्ले की रौनक कभी ज़हूर हाश्मी, शिक्षाविद डॉ. सैय्यद अशफ़ाक अली, खान शाकिर अली खान, शायर अख़्तर सईद ख़ां, नवाब मियाँ 'सिगरेट', मौलाना इमरान ख़ां, अल्लामा खालिद अंसारी, शर्की खालिदी और सालिक भोपाली जैसे रौशन चहरों से जगमगाया करती थी।

भोपाल का गुटका, बटुआ और नवाबी बटुए

एक ज़माना था जब भोपाल के गुटके की खासियत हर जगह मशहूर थी। ये वो गुटका नहीं, जो आज की तरह लोगों की जेब में रहता है, बल्कि ड्रायफ्रूट, रंग-बिरंगे मसालों और इत्र की सुगंध से तैयार होता था, जिसे खूबसूरत बटुओं में सजाकर पेश किया जाता था। भोपाल के 'बटुए' नवाबी शान की निशानी थे, और आज भी सर्राफा बाजार की कुछ दुकानों पर यह परंपरा जीवित है।

भाईचारे की कहानियाँ – रिश्तों की गर्मी

भोपाल एक ऐसा शहर है जहां किसी एक विशेष समुदाय के मोहल्ले नहीं बल्कि सारे समुदाय समझदारी, भाईचारा और आपसी प्रेम के साथ एक साथ रहते हैं। किसी आपदा-विपदा में एक-दूसरे की मदद करते नजर आते हैं। मैं खुद भोपाल के इतवारा मोहल्ले का निवासी रहा हूँ। हमारे पुश्तैनी मकान के सामने साहू समाज का परिवार रहता था, जो आज भी हमारे दिल के बेहद करीब है। मेरी बहन ने इस परिवार को राखी बाँधी थी। मेरी बारात में ये परिवार हमारे साथ सीहोर तक गया, और जब 1977 में मेरी माताजी का निधन हुआ, तो पहली रसोई इन्हीं के घर से आई। आज भी हमारे सुख-दुख में वही आत्मीयता बरकरार है।

भोपाल : धर्मनिरपेक्ष पहचान का प्रतीक

भोपाल के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक, काली माता का मंदिर, छोटे तालाब क्षेत्र में स्थित है और एक ऐतिहासिक धार्मिक स्थल के रूप में जाना जाता है। वहीं एयरपोर्ट क्षेत्र में स्थित मनुआभान की टेकरी पर श्वेतांबर जैन समुदाय का एक प्रसिद्ध मंदिर है। अब इस टेकरी को महावीर गिरी के नाम से भी जाना जाने लगा है, जहां प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। बिड़ला मंदिर भोपाल का श्रद्धा का केंद्र है। चौक स्थित प्राचीन आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, बहुत मशहूर है। इसके साथ ही बिडला मंदिर सहित अनेक मंदिर आस्था के केन्द्र है।

भोपाल में सिख धर्म की उपस्थिति सुदीर्घ और प्रभावशाली रही है, जिसका प्रतीक हैं शहर के तीन प्रमुख ऐतिहासिक गुरुद्वारे - शाजहानाबाद, हमीदिया रोड और इदगाह हिल्स। शाजहानाबाद स्थित गुरुद्वारा नानकसर 19वीं सदी में स्थापित हुआ और आज भी गुरबाणी, संगत और लंगर की परंपराओं को जीवंत रखे हुए है। हमीदिया रोड का गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा शहर का प्रमुख धार्मिक व सामाजिक केंद्र है, जहाँ कीर्तन, शिक्षण शिविर और सामूहिक सेवाएं नियमित रूप से होती हैं। वहीं इदगाह हिल्स स्थित गुरुद्वारा गुरु नानक दरबार आध्यात्मिक शांति व प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण स्थल है, जहाँ पर्वों पर श्रद्धालु बड़ी संख्या में एकत्र होते हैं। ये तीनों गुरुद्वारे न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र हैं, बल्कि सेवा, एकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की मिसाल भी पेश करते हैं।

भोपाल की सबसे पुरानी चर्चें शहर के समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक विविधता का प्रमाण हैं। सेंट फ्रांसिस ऑफ असीसी कैथेड्रल चर्च 150 वर्षों से अधिक पुराना है और नवाब सिकंदरजहां बेगम की अनुमति से ब्रिटिश काल में बना। इसकी वास्तुकला और शांति इसे प्रार्थना का प्रिय स्थल बनाते हैं। सेंट जोसेफ कैथोलिक चर्च एक शांत वातावरण वाला यह चर्च, भोपाल की सबसे पुरानी पूजा स्थलों में से है, जो सामुदायिक कार्यक्रमों और त्योहारों में सक्रिय भूमिका निभाता है। इन्फेंट जीसस चर्च की सुंदर वेदी और क्रिसमस के अवसर पर भव्य सजावट इसे विशेष बनाती है। यह धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र है। इन चर्चों की उपस्थिति भोपाल की सर्वधर्म समभाव की परंपरा को और मज़बूत बनाती है।

नवाबों की विरासत : ताजमहल से लेकर बाबे-ए-आली तक

भोपाल के ताज महल की इमारत, जिसे नवाब हमिदुल्ला खान ने पाकिस्तान से आए सिंधी शरणार्थियों को शरण देने के लिए समर्पित किया था, आज भी सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल है। भोपाल शहर के बीचों-बीच स्थित जामा मस्जिद हिंदू-मुस्लिम एकता की परिचायक है। गोलघर, गौहर महल, मिंटो हॉल, सदर मंजिल और बॉबे आली जैसी शानदार इमारतें अपनी खूबसूरती और भाईचारे की गवाह हैं। भोपाल में किसी जमाने में खवातीन (महिलाओं) के लिए घरेलू सामान की जबरदस्त प्रदर्शनी बाबे-ए-आली में लगा करती थीं। जिसमें शहर के बड़े ताजिर (व्यापारी) अपनी दुकानें प्रदर्शनी में लगाया करते थे। प्रदर्शनी में 10 साल से ज्यादा के पुरूषों को आने की अनुमति नहीं थीं। भोपाल के नबाव होली त्योहार के बाद रंगपंचमीं पर शहरवासियों के साथ मिलकर रंग खेलते थे। उस जमाने में शादियां मोहल्ले में शामीयाने लगा कर की जाती थी। भोपाल की पहचान उस दौर में खास सवारी तांगा से हुआ करती थी। शादी समारोह में शामिल होने आए मेहमानों का तांगा सवारी का किराया खुद अदा करते थे।

बरकतउल्ला भोपाली : आज़ादी की अलख जगाने वाला अज़ीम सपूत

भोपाल की सरज़मीं को यह फ़ख्र हासिल है कि यहाँ एक ऐसा जांबाज़ स्वतंत्रता सेनानी पैदा हुआ, जिसने अपनी पूरी जिंदगी भारत की आज़ादी के नाम कर दी। मौलाना मोहम्मद बरकतउल्ला भोपाली – एक ऐसा नाम, जो अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ ज्वाला बनकर उभरा। कच्चे मकान में जन्मे इस अज़ीम शख्स ने दुनिया के 26 देशों में 45 सालों तक भटकते हुए स्वतंत्रता की मशाल को जलाए रखा। 1890 में जब वो इंग्लैंड पहुंचे, तो देखा कि एक ही साम्राज्य में एक देश (इंग्लैंड) सम्पन्न और दूसरा (भारत) बदहाल क्यों है? इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कलम और जुबान को हथियार बनाया। पेरिस में 'अल-इंक़लाब' के संपादक बने, जापान में 'इस्लामिक फ्रेटरनिटी' नामक अखबार शुरू किया, जर्मनी में लाला हरदयाल के साथ 'ग़दर पार्टी' की नींव रखी और अमेरिका में जाकर भारतीयों को एकजुट किया।

1915 में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने रूस में क्रांतिकारी लेनिन से मुलाकात की, और गांधीजी के मार्गदर्शन में राजा महेन्द्र प्रताप सिंह के साथ मिलकर अफगानिस्तान में निर्वासित भारत सरकार की स्थापना की। इसमें बरकतउल्ला भोपाली को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। उनके नाम पर भोपाल में आज 'बरकतउल्ला विश्वविद्यालय' और 'बरकतउल्ला भवन' स्थापित हैं।

शायरों, हाकी खिलाड़ियों और पूर्व राष्ट्रपति की धरती

भोपाल ने देश को न केवल नामचीन शायर और लेखक दिए, बल्कि हॉकी के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। खपोटा लकड़ी से बनी हॉकी स्टिक लेकर इस शहर के खिलाड़ियों ने देश का नाम रोशन किया। यही भोपाल है जिसने डॉ. शंकर दयाल शर्मा को राष्ट्रपति पद तक पहुँचाया - यह हर भोपाली के लिए गर्व की बात है।

भोपाल का जिक्र करेंगे तो ओबेदुल्ला खां हाकी गोल्ड कप का उल्लेख होना भी जरूरी है, नहीं तो यह अधूरा माना जाएगा। ये टूर्नामेंट भोपाल में एक जश्न की तरह मनाया जाता था। भोपाली पूरे साल इस का इन्तेजार करते थे। हिदुस्तान के अलावा इन्टरनेशनल टीमें में भी इस टूर्नामेंट में भाग लेती थी। साइकिलों का दौर था हर साइकल सवार ऐशबाग स्टेडियम की तरफ नजर आता था।

यह जानना भी ज़रूरी है कि रियासत भोपाल की बेगम सुल्तान जहां के बेटे प्रिंस औबेदुल्ला ख़ान के नाम पर इस टूर्नामेंट की शुरुआत 1931-32 में हुई थी। यह भारत में हॉकी का सबसे पुराना हॉकी टूर्नामेंट माना जाता है। उस दौर में अकेले भोपाल में ही 65 हॉकी क्लब थे। वहीं रायसेन जिले का कस्बा 'औबेदुल्लागंज' भी प्रिंस औबेदुल्ला के नाम पर ही रखा गया है। एक ज़माने में भोपाल को 'हॉकी की नर्सरी' कहा जाता था।

भोपाल-नंबरों का शहर

वक्त के साथ भोपाल शहर बढ़ता गया, नई बसाहटों के नए-नए नाम आये। विस्तारित हुए शहर भोपाल के इलाकों की शिनाख्त नंबरों से भी होती है। सबसे पहले आता है 1250, मतलब जिला अस्पताल जयप्रकाश चिकित्सालय, जिसे ज्यादातर लोग 1250 या जेपी अस्पताल कहते हैं। अस्पताल का नामकरण इस इलाके में बने 1250 सरकारी आवासों से है। आवास और अस्पताल दोनों 1250 के नाम से जाने जाते हैं। करीब ही सेकेंड है, यानी कभी यहां सिटी बस को दो नंबर स्टॉपेज हुआ करता है। हालांकि, इलाके का असली नाम तुलसीनगर है। सेकंड से आगे बढ़े तो मालूम नहीं क्यों तीन व चार गायब हैं और सीधे पांच नंबर इलाका और पांच नंबर मार्केट। असलियत में ये शिवाजी नगर इलाके का हिस्सा है। पांच के बाद छह नंबर भी शिवाजी नगर का ही हिस्सा है। इतना ही नहीं मिनी बस वालों और यात्रियों की सहूलियत के लिये छह नंबर और सात नंबर स्टॉप के बीच सवा छह और साढ़े छह भी हैं। इन इलाकों में रहने वाले खुद के पते के बारे में यही बताते हैं। सात नंबर के बाद आठ नंबर स्टॉप को आठ नंबर कम रविशंकर मार्केट के नाम से ही जाना जाता है। यहां के वाणिज्यिक इलाके को नौ नंबर के नाम से जाना जाता है। आगे 10 और 11 नंबर के बीच साढ़े 10 नंबर भी पता बन चुका है। इसके बाद 11 नंबर और उससे बायीं तरफ 1100 आ गया। यहां भी इलाके की पहचान 1100 सरकारी क्वार्टर्स की वजह से है। वापस बस स्टॉप की रवायत में आएं तो 11 नंबर से आगे बढ़े तो 12 नंबर, और इसी लिये भोपाल के नए शहर के पीडब्ल्युडी दफ्तर के भवन को 12 नंबर दफ्तर के नाम से जाना जाता है। नंबरों वाला होने में शहर के सबसे ज्यादा पॉश इलाके भी पीछे नहीं हैं। चार इमली, 74 बंगले और 45 बंगले हैं। जहां संतरी से मंत्री तक और बाबू से सबसे बड़े बाबू (आईएएस, आईपीएस, आईएफएस अफसर) के साथ ही राज्य शासन के दूसरे अफसर रहते हैं। चार इमली के बारे में शहर के बुजुर्ग बताते हैं कि जब भोपाल राजधानी नहीं था तब यहां घना जंगल था और इमली के चार बड़े पेड़ थे। पैंतालीस और चौहत्तर बंगले भी बंगलों की संख्या के कारण बने। अब शहर का प्रसार निरंतर हो रहा है। नित-नए इलाके प्रकट हो रहे हैं। अब भोपाल शहर पूंछ की तरफ बढ़ रहा है। पूंछ में शामिल हो रहे हैं होशंगाबाद रोड एनएच-12 के दोनों तरफ के आर्केड, पैलेस, विला, विहार और पुरम। नई कॉलोनियों की बसाहट भोजपुर की ओर जाने वाले मोड़ तक पहुंच गई है। भोपाल की लंबी होती पूंछ की फिलवक्त लंबाई मील में है, लिहाजा इसे 11 मील कहते हैं।

आधुनिक भोपाल की ओर : स्मार्ट सिटी की उड़ान

वर्तमान में भोपाल एक स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित हो रहा है। ओवरब्रिज, स्मार्ट रोड, मेट्रो रेल जैसे प्रोजेक्ट्स पुराने शहर को नए शहर से जोड़ रहे हैं। एयरपोर्ट अब भी विशेष सेवाओं के लिए कार्यरत है और पुराने दौर की 'पुतली घर' नामक कपड़ा मिल की मीनार आज भी इतिहास की गवाही देती है।

दुआओं में बसा है मेरा भोपाल

मेरे अतीत के झरोखे से कुछ यादगार पल जो मैंने आज भी अपनी यादों में संजोकर रखे हैं। मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि 71 वर्ष की उम्र में आज भी भोपाल की इस संस्कृति, भाईचारे और शांति से जुड़ा हूँ। यही दुआ करता हूँ कि यह शहर सदा यूं ही फले-फूले, इसकी गंगा-जमुनी तहज़ीब को कभी कोई बुरी नज़र न लगे और इसकी खूबसूरती बनी रहे।

विश्व उच्च रक्तचाप दिवस आज

अख़बार वितरकों के लिए पहली बार विशेष स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

भोपाल। अल सुबह घरों में अखबार पहुंचाकर हमारी दिनचर्या के अहम हिस्से में शामिल रहने वाले अखबार वितरकों के लिए विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के अवसर पर आज विशेष स्वास्थ्य परीक्षण आयोजित किए जा रहे हैं। शिविरों में उच्च रक्तचाप, मधुमेह , हीमोग्लोबिन सहित विभिन्न जांच एवं उपचार निशुल्क दिया जाएगा । साथ भी आभा आईडी एवं आयुष्मान कार्ड भी बनाए जाएंगे। ये पहली बार है कि अखबार वितरकों के लिए स्पेशल कैंप लगाए जा रहे हैं। शिविरों में दोपहर 12:00 से शाम 5:00 बजे तक सेवाएं दी जाएंगी। शिविर में परिजन भी अपना स्वास्थ्य परीक्षण करवा सकते हैं। इन 6 जगहों पर आयोजित होंगे शिविर-

1. 12 दफ्तर जवाहर चौक
2. सर्वधर्म बी सेक्टर कोलार
3. दैनिक भास्कर कार्यालय
4. नादरा बस स्टैंड बिल्डिंग
5. स्वामी शांति प्रकाश धर्मशाला बैरागढ़
6. गणेश गैलेक्सी अयोध्या बायपास।

17 मई को ही दोपहर 12:00 से शाम 4:00 बजे तक नगर निगम कर्मियों और शाम 5:00 बजे से सिटी बस चालकों और बस कंडक्टर्स के लिए आई एस बी टी परिसर में स्वास्थ्य शिविर आयोजित होगा। सिटी बसों की डिपो में वापसी शाम के समय होती है, इसलिए बस चालकों और कंडक्टर्स की सुविधा को देखते हुए देर शाम तक शिविर चलेंगे।

इस अवसर पर जिले की सभी शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में जांच, परामर्श एवं जागरूकता शिविरों का आयोजन किया गया है। इस वर्ष यह दिवस अपने रक्तचाप की जांच करवाएं, इसे नियंत्रित करें, लंबा जीवन जियें की थीम पर मनाया जा रहा है। विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के उपलक्ष्य में 17 मई से 16 जून तक जागरूकता माह आयोजित होगा। इस दौरान जिले में निरंतर विभिन्न गतिविधियां आयोजित होंगी।

शिविर आयोजन के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ प्रभाकर तिवारी ने कहा कि रोज सुबह हमारे घर आने वाले अखबार वितरक हमारी दिनचर्या का अहम हिस्सा है। इसके बावजूद हम लोगों में से अधिकांश ने इनको सम्भवतः देखा भी ना हो। इसी तरह सिटी बसेस से हमें हमारी मंजिल तक पहुंचाने वाले ड्राइवर्स और कंडक्टर्स भी हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए हैं। इन लोगों के स्वास्थ्य का परीक्षण, नियमित फॉलोअप एवं उपचार के उद्देश्य से विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के उपलक्ष्य में ये शिविर लगाये जा रहे हैं।

उच्च रक्तचाप की बीमारी प्रायः सभी उम्र के लोगों में देखने को मिल रही है। इन विशेष शिविरों में परिजन भी अपना स्वास्थ्य परीक्षण करवा कर विभिन्न स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ ले सकते हैं ।

सप्रे संग्रहालय की स्टेट बैंक द्वारा प्रवर्तित डिजिटल लाइब्रेरी का लोकार्पण 18 मई को

भोपाल। अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान की डिजिटल लाइब्रेरी का लोकार्पण 18 मई को पूर्वाह्न 10:30 बजे होगा। भारतीय स्टेट बैंक के सहयोग से सामाजिक सेवा बैंकिंग के अंतर्गत डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना और विकास किया गया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश शासन के नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय होंगे। अध्यक्षता भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री ओमप्रकाश रावत करेंगे। विशिष्ट अतिथि महापौर श्रीमती मालती राय होंगी। 'ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय संदर्भिका-2' का विमोचन होगा। सप्रे संग्रहालय के संस्थापक विजयदत श्रीधर ने बताया कि भारतीय स्टेट बैंक से कारपोरेट सोशल रिस्पान्सबिलिटी (सी.एस.आर.) के अंतर्गत प्राप्त धनराशि से 20,01,994 पृष्ठ दुर्लभ संदर्भ सामग्री का डिजिटलीकरण कराया गया है। इससे पहले इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं मध्यप्रदेश जनसंपर्क के सहयोग से 7,02,529 पृष्ठों का डिजिटलीकरण हुआ है। इस तरह अब सप्रे संग्रहालय की डिजिटल लाइब्रेरी में 27,04,523 पृष्ठ कम्प्यूटर स्क्रीन पर अध्ययन के लिए सुलभ हो गए हैं। इससे जर्जर हो रहे पृष्ठों की सुरक्षा और शोधार्थियों एवं जिज्ञासु पाठकों के लिए अध्ययन की सुविधा दोनों सुनिश्चित हो गई हैं। सप्रे संग्रहालय की अद्यतन वेबसाइट जारी हो गई है। 10 के.वी. क्षमता के सौर ऊर्जा पैनल की स्थापना हुई है। ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय की स्थापना से लेकर अभी तक सतत सहयोग कर रहे मध्यप्रदेश जनसंपर्क और नगर निगम, भोपाल तथा भारतीय स्टेट बैंक के प्रति आभार-सम्मान इस अवसर पर किया जाएगा।

एम्स भोपाल ने कलाई की नस से पिनहोल प्रक्रिया द्वारा जटिल ब्रेन एनेउरिज़्म का सफल इलाज कर बचाई जान

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान ने एक जीवनरक्षक उपलब्धि हासिल की है। हाल ही में, एम्स भोपाल में एक जटिल ब्रेन एनेउरिज़्म का उपचार अत्याधुनिक एवं न्यूनतम इनवेसिव पिनहोल प्रक्रिया के माध्यम से सफलतापूर्वक किया गया। यह प्रक्रिया मरीज की कलाई की नस के माध्यम से की गई, जिससे ओपन ब्रेन सर्जरी की आवश्यकता नहीं पड़ी। 60 वर्षीय महिला मरीज को जटिल बेसिलर आर्टरी एनेउरिज़्म के फटने के कारण सब-अरैकनॉयड हेमरेज हुआ था। इसके उपरांत, उन्हें एम्स भोपाल के इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी ट्रीटमेंट सेंटर में रेफर किया गया, जहाँ विशेषज्ञ टीम ने एंडोवैस्कुलर तकनीक के अंतर्गत स्टेंट-असिस्टेड कॉइलिंग की सलाह दी। इस प्रक्रिया के तहत, मरीज की कलाइ की एक सूक्ष्म धमनी में अत्यंत बारीक छेद के माध्यम से एक कैथेटर डाला गया। इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट्स की टीम ने इसे अत्यंत सटीकता के साथ मस्तिष्क में स्थित एनेउरिज़्म तक पहुंचाया। वहाँ एक स्टेंट स्थापित किया गया और बहुत ही सूक्ष्म कॉइल्स द्वारा एनेउरिज़्म को भरा गया, जिससे रक्तस्राव की पुनरावृत्ति की संभावना समाप्त हो गई। यह संपूर्ण प्रक्रिया बिना किसी बड़े चीरे के संपन्न की गई और मरीज कुछ ही दिनों में स्वस्थ अवस्था में अस्पताल से डिस्चार्ज कर दी गई।

यह अत्याधुनिक उपचार एम्स भोपाल की इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट्स, न्यूरोसर्जन्स, क्रिटिकल केयर फिजीशियन्स एवं न्यूरोलॉजिस्ट्स की समन्वित टीम के प्रयासों से संभव हो सका। इस इलाज की खास बात यह है कि यह आयुष्मान भारत योजना के तहत हुआ। मरीज, जो इस योजना का लाभार्थी था, को इस महंगे इलाज के लिए अपनी जेब से कोई पैसा नहीं देना पड़ा। उन्हें बिना किसी भुगतान के अच्छी स्वास्थ्य सेवाएँ मिलीं। इस अवसर पर, डॉ. राजेश मलिक (विभागाध्यक्ष, रेडियोलॉजी डायग्नोसिस) एवं डॉ. अमन कुमार (इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट) ने स्वास्थ्यकर्मियों तथा आमजन को एम्स भोपाल में उपलब्ध ऐसी उन्नत चिकित्सा सुविधाओं के प्रति अधिक जागरूक करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने चिकित्सकीय टीम को बधाई देते हुए कहा, यह सफलता एम्स भोपाल के लिए एक मील का पत्थर है। यह हमारे संस्थान की उन्नत, रोगी- केंद्रित चिकित्सा सेवाओं के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। मैं आमजन और स्वास्थ्यकर्मियों से आग्रह करता हूँ कि वे एम्स भोपाल में उपलब्ध इन आधुनिक उपचार सुविधाओं के बारे में जागरूक हों, ताकि समय रहते प्रभावी इलाज हर जरूरतमंद को मिल सके।

राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर जागरूकता कार्यक्रमों से दी लार्वा नियंत्रण की जानकारी

भोपाल। राष्ट्रीय डेंगू दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य विभाग भोपाल द्वारा वाहक जनित रोगों के प्रसार एवं उनके नियंत्रण के लिए विभिन्न जागरूकता गतिविधियां आयोजित की गईं। इस अवसर पर स्वास्थ्य संस्थाओं सहित शैक्षणिक संस्थाओं, रहवासी क्षेत्रों, शासकीय एवं निजी संस्थानों में जागरूकता एवं सामुदायिक सहभागिता से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जागरूकता रैलियों, शपथ ग्रहण, कार्यशालाओं परामर्श एवं प्रश्नोत्तरी द्वारा डेंगू के लक्षण एवं बचाव के उपायों को बताया गया ।

राष्ट्रीय डेंगू दिवस प्रत्येक वर्ष 16 मई को मनाया जाता है। बारिश के मौसम में साफ पानी के इकट्ठा होने के कारण डेंगू का लार्वा पनपने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। डेंगू दिवस के माध्यम से मानसून के पूर्व वाहक जनित बीमारियों के बारे नियंत्रण के लिए लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया जाता है। डेंगू दिवस के अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ प्रभाकर तिवारी ने डेंगू जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। जागरूकता रथ के माध्यम से ऑडियो संदेश एवं पंपलेट इत्यादि द्वारा लार्वा को न पनपने देने एवं डेंगू से बचाव की जानकारी दी जा रही है । इस वर्ष यह दिवस देखें, साफ करें, ढकें: डेंगू को हराने के उपाय करें की थीम पर मनाया जा रहा है।

डेंगू नियंत्रण के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा निरंतर कार्य किया जा रहा है । जल भराव वाले स्थान चिन्हित कर अब तक लगभग 14000 गंबुशिया मछली डाली जा चुकी हैं। भोपाल के 21 जोन में 44 टीमों द्वारा प्रतिदिन औसतन 2000 घरों का सर्वे किया जा रहा है । इस साल 183522 कंटेनरों का सर्वे कर 3581 में लार्वा नष्ट किया जा चुका है। साल 2024 में स्वास्थ्य विभाग की 44 टीमों ने 5 लाख से अधिक घरों में लगभग 37 लाख कंटेनर का सर्वे किया था, जिनमें से 25 हजार में लार्वा पाया गया था। भोपाल में एलाइजा टेस्ट अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भोपाल मेमोरियल हॉस्पिटल,गांधी मेडिकल कॉलेज , सिविल अस्पताल बैरागढ़ एवं जिला जयप्रकाश चिकित्सालय में निशुल्क होता है। इन पांचो सेंटिनल साइट पर सातों दिन जांच की जाती है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ प्रभाकर तिवारी ने कहा कि मच्छरों के पनपने के स्त्रोत को नष्ट करना बेहद जरूरी है। डेंगू बीमारी एडीज मच्छर के काटने से होती है। इस मच्छर का लार्वा साफ पानी में पनपता है। स्वास्थ्य विभाग एवं नगर निगम द्वारा लार्वा नियंत्रण के लिए निरंतर सर्वे किया जा रहा है। वाहक जनित रोगों के नियंत्रण के लिए जिला मलेरिया कार्यालय में कॉल सेंटर स्थापित किया है, जिसमे आमजन मच्छर जनित रोगों के बारे में जानकारी ले सकते है।

राइट क्लिक

'पराक्रम के सिंदूर' को जाति में तौलने के निर्लज्ज सियासी पैमाने !

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

देश में अब जो हो रहा है, वो मानो 'ऑपरेशन सिंदूर पार्ट- टू' है। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी आतंकी और हवाई ठिकानों को ध्वस्त कर अपनी सैनिक श्रेष्ठता और पराक्रम साबित कर दिया, लेकिन हमारे राजनेता इस पराक्रम को जाति और मजहब के आईनों में तौलने की निहायत घटिया और अस्वीकार्य सियासत में जुट गए हैं। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने राष्ट्रीय एकता का जो भाव विश्व में खड़ा किया था, ये संकीर्ण सोच वाले राजनेता उसकी जड़ें खोदने में लगे हैं ताकि इन जड़ों के पानी से भी वोट बैंक को सींचा जा सके।

पहलगाम आंतकी हमले के बाद भारत की पाक पर सफल सैनिक कार्रवाई की रोजाना मीडिया ब्रीफिंग करने वाली भारत की दो काबिल महिला अफसर कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह की असाधारण योग्यता, कार्यनिष्ठा और राष्ट्र के प्रति समर्पण की मुक्त मन से सराहना करने के बजाए इस देश में कई लोग सिर्फ इसी काम में लगे हैं कि भारतीय सेना के पराक्रम के रूमाल में जाति, धर्म और समुदाय की संकीर्ण सोच की झालर टांक कर उसे कैसे चिंदी में तब्दील किया जाए। भारतीय सेना और सैनिकों के असंदिग्ध शौर्य, राष्ट्र भक्ति, और देश की एकता, अखंडता के सदा सतर्क रक्षक के रूप में उनकी महान भूमिका की प्रशंसा और उस पर अभिमान की बजाए उसे जाति या धर्म की चौखट में फिट करने की मोतियाबिंदी नजर से यह देश शर्मसार है। लेकिन नेताओं की निर्लज्जता पर इसका शायद कोई असर नहीं है। 'ऑपरेशन सिंदूर' की प्रतिदिन जानकारी देने के लिए भारतीय सेना ने अपनी दो योग्य अधिकारियों कर्नल सोफिया कुरैशी और व्योमिका सिंह का जब चयन किया होगा तो उसका आधार इनकी योग्यता ही रही होगी। स्पष्ट रूप से इससे राष्ट्रीय एकात्मकता का संदेश भी गया। आज जिन्हे समूचा देश अपनी बेटी मान रहा है, उन्हें किसी जाति या धर्म की तक संकुचित करने में इन नेताओं को तनिक भी लाज नहीं आई। देश की इस एकात्मता पर पहली चोट मप्र में भाजपा के ही एक मंत्री विजय शाह ने यह कहकर की कि पहलगाम में जिन लोगों ने हमारी बहू-बेटियों का सिंदूर उजाड़ा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उसी धर्म विशेष की बहनों को आगे कर के उनकी ऐसी की तैसी कर दी। आदिवासी समुदाय से आने वाले इस मंत्री ने एक कार्यक्रम में मंच पर जिस गदगद भाव से यह सब कहा और जिसे सुनकर सामने बैठे लोगों के तालियां भी बजाई, उससे लगा कि यह देश में वीरता की नई और कुत्सित परिभाषा है। यह कथित व्याख्या भारत सरकार और एक राष्ट्र के रूप में भारत की आत्मा के भी खिलाफ थी। चौतरफा आलोचना के बाद इस मंत्री ने खेद जताया साथ में खुद को 'शहीद' के रूप में पेश करने की बेशर्म कोशिश भी की। मंत्री वर्मा को लेकर भाजपा की दुविधा कैसी राष्ट्रभक्ति है, समझना मुश्किल है।

लेकिन तब विंग कमांडर व्योमिका सिंह को लेकर विवाद शुरू नहीं हुआ था। इसको लेकर पहला जाति बम समाजवादी पार्टी के सांसद रामगोपाल यादव ने फोड़ा। हालांकि प्रकट तौर पर उनका निशाना भाजपा थी, लेकिन बम में बारूद जातिवाद का था। यादव ने यूपी के मुरादाबाद में एक कार्यक्रम में कहा कि भाजपा ने विंग कमांडर व्योमिका सिंह पर कर्नल कुरैशी की तरह टिप्पणी इसलिए नहीं की, क्योंकि वो उन्हें राजपूत समझ रही थी। वास्तव में विंग कमांडर व्योमिका हरियाणा के जाटव समाज से हैं। जबकि कर्नल कुरैशी को उनके मुसलमान होने की वजह से भाजपा नेता ने अपशब्द कहे। 'इस पर बवाल मचना ही था। प्रोफेसर रहे रामगोपाल यादव यहीं पर नहीं रूके। उन्होंने अपने बयान को और जातिवादी धार देते हुए कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर में एयर ऑपरेशन को अंजाम देने वाले एयर मार्शल अवधेश कुमार भारती यादव हैं। यानी एक मुसलमान, दूसरा जाटव और तीसरा यादव...ये तीनों को पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) के ही हैं। ये पूरा युद्ध तो पीडीए ने ही लड़ा। भाजपा किस आधार पर इसका श्रेय लेने की कोशिश कर रही है?' यानी अब सैन्य अभियान भी जाति के आधार पर ही तय होंगे और लड़े भी जाएंगे और उनका फलित भी जाति के हिसाब से ही तय होगा। यह सत्ता के लोभ में साधा गया सबसे खराब निशाना था। भले ही रामगोपाल यादव का यह बयान 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद भाजपा द्वारा इसका राजनीतिक श्रेय लेने के इरादे से देशभर में निकाली जा रही 'तिरंगा यात्राओं'के संदर्भ में था और जल्दबाजी भरा था, लेकिन सियासी श्रेय की छीनाझपटी में वो इस निम्न स्तर पर उतर आएंगे, यह वाकई अफसोसनाक है। क्योंकि व्योमिका सिंह के साथ-साथ वो वायुसेना के ऑपरेशन सिंदूर के डीजीएमओ एयर मार्शल एके भारती की जाति बताने से भी नहीं चूके। गोया यह समूचा सैन्य अभियान शस्त्रों और अचूक रणनीति की जगह जातीय प्रतीक चिन्हों की बुनियाद पर लड़ा गया। इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि इस ऑपरेशन का नेतृत्व करने वाले अगर रामगोपाल की थ्योरी के मुताबिक सम्बन्धित जातियों के न होते तो सपा की सोच के अनुसार अभियान की सफलता भी शून्य होती। या यूं कहे कि जातिवाद मिटाने के लिए जाति हर हाल में बताना और जताना जरूरी है। रामगोपाल यादव के इस घटिया बयान पर देश में दलितों की सबसे बड़ी पार्टी बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने एक्स पर पोस्ट किया-'पाकिस्तान में आतंकियों के खिलाफ भारतीय सेना के आपरेशन सिंदूर के पराक्रम से पूरा देश एकजुट व गौरवान्वित है। ऐसे में सेना को धर्म व जाति के आधार पर आँकना/बाँटना घोर अनुचित। इसको लेकर बीजेपी के मंत्री ने जो गलती की, वही वरिष्ठ सपा नेता ने भी आज की है, जो शर्मनाक एवं निन्दनीय।' उधर यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सपा नेता का यह बयान संकुचित सोच का प्रतीक और भारतीय सेना के सम्मान और देश की अस्मिता के खिलाफ है।' जहां तक व्योमिका सिंह की जाति बताने की बात है तो सोशल मीडिया पर यह पहले ही दिन से वायरल हो चुका था कि वो रविदासी समाज से हैं। व्योमिका किस जाति, समुदाय या प्रदेश से हैं या नहीं है, यह अत्यंत गौण है। वो एक बहादुर और सक्षम सेनाधिकारी हैं, यह सबसे अहम है। व्योमिका एक सुशिक्षित दलित परिवार से आती हैं और अपनी योग्यता के बल पर आज इस पद तक पहुंची हैं। केवल जाति की तराजू में उनकी योग्यता को तौलना देश के साथ बेईमानी करना है। इसी तरह एयर मार्शल ए.के.भारती का यादव होना महज एक संयोग है। भारती की प्रतिभा उनके श्रेष्ठ सैन्य रणनीतिकार होने में है न कि यादव होने भर से। ये सभी समूचे राष्ट्र की धरोहर हैं न किसी खास वोट बैंक के बंधुआ खातेदार हैं। केवल अपना वोट बैंक पक्का करने के लिए उन पर जाति धर्म के लेबल चिपकाना, मूर्खता ही नहीं राष्ट्रीय पाप भी है। और कर्नल सोफिया और विंग कमांडर व्योमिका तो भारत में नारी शक्ति के प्रबल होने का स्पष्ट प्रमाण भी हैं।

यह सबको पता है कि हमारे संविधान में सेना और उच्च न्यायपालिका में जाति, धर्म, समुदाय और प्रांत के आधार पर आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है। केवल एनडीए में आर्थिक आधार पर 10 फीसदी आरक्षण है, जो सभी के लिए है। संविधान निर्माता जानते थे कि सेना को किसी भी आधार पर विभाजित करना राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता करना है। इसलिए सेना में केवल जाति, धर्म या समुदाय के आधार पर भर्ती नहीं होती और न ही इस आधार पर कोई हिसाब रखा जाता है। वहां सभी के लिए समान अवसर हैं। देश की सीमाओंकी रक्षा उसका परम कर्तव्य है। यही कारण है कि भारतीय सेना विश्व की चार सर्वश्रेष्ठ सेनाओं में है। उसकी अपनी परंपराएं, संस्कृति और कार्य शैली है। हालांकि यह भी सही है कि सेना में ऊंचे पर पदों पर अभी भी आरक्षित वर्ग के लोगों की संख्या कम है। लेकिन धीरे-धीरे यह कमी भी पूरी होती जा रही है। विंग कमांडर व्योमिका सिंह इसका उत्तम उदाहरण है। भारतीय थल सेना में जाति, धर्म, समुदाय और प्रांत के आधार पर कुछ रेजिमेंट अभी भी हैं। लेकिन ये रेजिमेंटें अंग्रेजों ने अपने हितों के हिसाब से बनाई थीं। आजाद भारत में यह परंपरा खत्म हो चुकी है बावजूद इसके अभी भी इस तरह जाति या धर्म आधारित रेजिमेंटें बनाने की मांग समय समय पर उठती रही है, लेकिन सभी सरकारों ने इसे खारिज कर दिया है। दलित वंचित समुदाय के लोग भी देश की सेवा उत्कृष्ट भाव से करें, इसलिए बाबा साहब अंबेडकर ने दलितों से अधिकाधिक संख्या में सेना में शामिल होने का आह्वान किया था। बाद में बाबू जगजीवन राम और रामदास आठवले जैसे नेता सेना में भी जाति आधारित आरक्षण की मांग उठाते रहे हैं। लेकिन शायद ही और कोई उससे सहमत रहा हो।

उज्जैन में ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई

भारतीय सेना के शौर्य, पराक्रम और अदम्य साहस पर संपूर्ण देश को है गर्व : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। भारतीय सेना द्वारा आतंकियों के विरूद्ध ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर भारतीय सेना के शौर्य एवं पराक्रम के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए शुक्रवार को उज्जैन में भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शहीद पार्क से प्रारंभ हुई भव्य तिरंगा यात्रा में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शहीद पार्क स्थित जय स्तम्भ पर शहीदों को श्रध्दांजली अर्पित कर घोड़े पर सवार होकर तिरंगा यात्रा की शुरूआत की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की सेना ने पाकिस्तान में दाखिल होकर दुश्मनों से बदला लिया। भारतीय सेना के शौर्य, पराक्रम और अदम्य साहस पर संपूर्ण देश को गर्व है। ऑपरेशन सिंदूर से दुनिया के सामने हमारी सेनाओं ने अदम्य साहस और शौर्य का प्रमाण दिया हैं। हमने एकजुट होकर विश्व को यह संदेश दिया कि दुश्मन कितना ही चालाक क्यों न हो हम अपनी एकता को अक्षुण्ण रखेंगे। राष्ट्रीय एकता सर्वोपरी है, इसे यदि शत्रु ने हानि पहुचाने की कोशिश की तो उसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। उज्जैन भगवान श्री महाकालेश्वर की नगरी है, यह सम्राट विकमादित्य के पराक्रम की नगरी है। लगभग 2000 हजार साल पहले सम्राट विकमादित्य ने विदेशी आक्रमणकारियों को पराजित कर देश से खदेड दिया था, आज फिर से हमारी सेना ने वही शौर्य और पराक्रम दिखाया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्र की वेदी पर अपने चिराग न्योछावर करने वाले शहीदों के परिजनों को प्रणाम किया। उन्होंने कहा कि तिरंगा हमारे देश कि आन, बान और शान है इसकी मर्यादा का सदैव ध्यान रखें। मुख्यमंत्री ने कहा कि लगातार तिरंगा यात्राओं के माध्यम से पूरी दुनिया में संदेश जा रहा है कि हम सभी भारतीय एक जुट हो कर समय आने पर देश कि रक्षा के लिए सर्वस्व बलिदान कर सकते है । भव्य तिरंगा यात्रा में शहिदों के परिजन पूर्व सैनिक, राज्यसभा सांसद बालयोगी श्री उमेशनाथ जी महाराज, सांसद श्री अनिल फिरोजिया, श्री सुहास वैद्य, श्री इकबाल सिंह गांधी शहर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि और गणमान्य नागरिकों ने भी बढ़-चढ़ कर सहभागिता की।

महू में 18 मई को ऐतिहासिक तिरंगा यात्रा

इंदौर जिले के महू में 18 मई को सुबह 10 बजे ऐतिहासिक तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी। भाजपा जिला अध्यक्ष श्रवण सिंह चावड़ा ने बताया कि इस यात्रा का उद्देश्य भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ाना और उन्हें धन्यवाद देना है। उन्होंने कहा पाकिस्तानी आतंकवादियों ने पहलगाम में जिस तरह से कायराना हमला कर निर्दोष लोगों की जान ली और इस कायराना हरकत से पूरे देश में आक्रोश था।

इंदौर में बड़ा गणपति से राजवाड़ा तक तिरंगा यात्रा, मंत्री विजयवर्गीय पहुंचे

इंदौर में शुक्रवार को बड़ा गणपति चौराहे से राजबाड़ा तक भाजपा की तिरंगा यात्रा निकलेगी। यात्रा में सीएम डॉ. मोहन यादव भी शामिल होंगे। यात्रा के डेढ़ किलोमीटर लंबे मार्ग पर आठ विधानसभा क्षेत्र के भाजपा कार्यकर्ता शामिल होंगे। सभी बड़ा गणपति चौराहा पर एकत्र हो रहे हैं। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय भी यात्रा में शामिल हुए हैं।

यात्रा के लिए डेढ़ किलोमीटर लंबा मार्ग तैयार

तिरंगा यात्रा का डेढ़किलोमीटर लंबा मार्ग पूरी तरह से देशभक्ति के रंग में रंगा है। यात्रा मार्ग में स्वागत के लिए अलग-अलग संगठनों द्वारा 200 से ज्यादा स्टेज बनाए गए हैं। बीजेपी ने अपने नेताओं को स्टेज नहीं लगाने के लिए कहा है। इस तिरंगा यात्रा के लिए भाजपा की अलग-अलग टोलियों ने अनाज मंडी, सब्जी मंडी, लोहा मंडी और मजदूर चौक पर जाकर लोगों से संपर्क किया है।

टीटी नगर थाना सवालों के घेरे में, टीआई लाइन अटैच

● बैकडेट एग्रीमेंट, फर्जी ड्राइवर और लापरवाही, अब कमला नगर थाना करेगा जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 12 मई को बाणगंगा चौराहे पर हुए दर्दनाक सड़क हादसे के मामले में लापरवाही सामने आने पर टीटी नगर थाने के प्रभारी सुधीर अर्जरिया को देर रात लाइन अटैच कर दिया गया है। उनकी जगह अब मानसिंह चौधरी को टीटी नगर थाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह फैसला मामले की जांच में गंभीर खामियों के चलते लिया गया है।

इस हादसे में एक डॉक्टर की मौत हो गई थी, जब बाणगंगा सिग्नल पर खड़ी भीड़ को स्कूल बस ने कुचल दिया था। अब इस पूरे प्रकरण की जांच की कमान कमला नगर पुलिस को सौंपी गई है। डीसीपी जोन-1 प्रियंका शुक्ला ने बताया कि टीटी नगर पुलिस द्वारा जांच में किस स्तर पर लापरवाही हुई, इसकी स्वतंत्र जांच शुरू कर दी गई है। जैसे-जैसे तथ्य सामने आएंगे, वैसे-वैसे जिम्मेदारों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

असली चालक का नाम छिपाया गया

जांच में बड़ा खुलासा हुआ है कि बस का एग्रीमेंट हादसे के बाद बैकडेट में तैयार किया गया था। आरोपी प्रवेश नागर ने पहले किसी 'सुनील' नाम के ड्राइवर को जिम्मेदार बताया, लेकिन पुलिस की सख्ती के बाद सामने आया कि बस चला रहा विशाल बैरागी था। चौंकाने वाली बात ये है कि विशाल के पास हैवी व्हीकल चलाने का वैध लाइसेंस ही नहीं है।
प्रवेश नागर ने लाइसेंस की कमी और अवैध संचालन पर पर्दा डालने के लिए जानबूझकर गलत जानकारी दी। मामले में अब विशाल बैरागी को जेल भेज दिया गया है।

दो बसें ज़ब्त, 42 हजार का जुर्माना- इस हादसे के बाद गुरुवार को परिवहन विभाग ने विशेष चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान एक स्कूल बस को बिना परमिट बारात ले जाते हुए पकड़ा गया, जिस पर 42,000 का जुर्माना लगाया गया और बस को ज़ब्त कर लिया गया। वहीं एक अन्य बस को होशंगाबाद रोड से बिना परमिट के संचालन करते पकड़ा गया और उसे भी ज़ब्त किया गया।

यह मामला अब सिर्फ एक सड़क हादसा नहीं रह गया है, बल्कि इसमें लापरवाही, दस्तावेजों की गड़बड़ी और गैरकानूनी

बस की चपेट में आने से बुजुर्ग महिला की मौत

बस में चढ़ते समय हुआ हादसा, अस्पताल में तोड़ा दम

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बस में चढ़ते समय बुजुर्ग महिला का पैर फिसल गया। इस दौरान बस धीमी गति से चल रही थी। गिरते ही महिला बस के पहिए की चपेट में आ गई। गंभीर रूप से घायल अवस्था में उसे इलाज के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। हादसा गुरुवार रात का बताया जा रहा है। मंगलवारा पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 70 वर्षीय नफीसा बी चांदबड़ इलाके में कपड़ा मिल के पास रहती थी। बुधवार रात वे किसी काम से भारत टॉकीज इलाके में गई थी। वहां से लौटते समय गुरुवार सुबह वे भारत टॉकीज ब्रिज के पास सड़क किनारे खड़ी होकर सिटी बस का इंतजार कर रही थीं। थोड़ी देर बाद बस आई तो वे बस में चढ़ने लगी। इस दौरान बस धीमी गति से चल रही थी। चढ़ते समय उनका पैर फिसला और वे बस से गिर गईं।

पिछले पहिए में आने से हुआ हादसा- बस से गिरते ही वे बस के पिछले पहिए की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गईं। उन्हें इलाज के लिए हमीदिया अस्पताल ले जाया गया। सूचना मिलने पर अस्पताल पहुंचे परिजन उन्हें अयोध्या बायपास स्थित एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे। यहां गुरुवार रात उनकी मौत हो गई।

शहरी तालाबों को प्रदूषण मुक्त करने 74 करोड़ रूपये का अनुदान

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के शहरी क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाली झीलों एवं तालाबों को प्रदूषण मुक्त रखने के लिये नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा संरक्षण एवं संवर्धन योजना चलाई जा रही है। योजना में अब तक 41 नगरीय निकायों में 48 तालाबों की योजनाओं के लिये 74 करोड़ रूपये की राशि अनुदान के रूप में जारी की जा चुकी है। योजना में नगरीय क्षेत्रों में झीलों एवं तालाबों की सीमा में होने वाले कटाव को रोकने संबंधी कार्य, झीलों एवं तालाबों के आस-पास बाउंड्रीवॉल बनाने, सघन पौधरोपण, लैम्प और फव्वारों की स्थापना के लिये नगरीय निकायों को राज्य शासन की ओर से अनुदान राशि दी जा रही है। नगरीय निकाय इस अनुदान राशि का उपयोग अपशिष्ट जल को रोकने, ट्रीटमेंट व्यवस्था, झील एवं तालाबों के किनारे सीवर पाईप व्यवस्था के लिये भी उपयोग कर रहे हैं। योजना में नगरीय निकायों को दी जाने वाली अनुदान राशि का प्रतिशत भी निर्धारित किया गया है। नगर निगम को कुल लागत राशि का 60 प्रतिशत, नगर पालिका परिषद को 75 प्रतिशत और नगर परिषद को 90 प्रतिशत राज्य शासन की ओर से अनुदान दिये जाने की व्यवस्था है।

समाज के लिए उपयोगी और सक्षम व्यक्ति बनाना ही शिक्षा : राज्यपाल पटेल

युवा प्रकृति के साथ सह-जीवन की जीवनचर्या को अपनाएं

राज्यपाल राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के 12वें दीक्षांत समारोह में शामिल हुए

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा है कि शिक्षा केवल ज्ञान की डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं है। समाज के लिए उपयोगी और सक्षम व्यक्ति बनाना भी है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवन की अंधी भाग-दौड़ में युवा जीवन के आनंद से वंचित हो रहे हैं। दिनचर्या यांत्रिक होती जा रही है। जरूरी है कि युवा प्रकृति के साथ सह-जीवन की दिनचर्या को अपनाएं। उन्होंने विद्यार्थियों से अपेक्षा करते हुए कहा है कि इस प्रतिष्ठित संस्थान में अर्जित ज्ञान का उपयोग मानवता की सेवा में करें। परिवार, समाज के प्रति संवेदनशील रहे। माता-पिता, गुरुजन, समुदाय और समाज के लिए कृतज्ञता का भाव रखें। वंचितों को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर रहें। राज्यपाल श्री पटेल राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के 12वें दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। विश्वविद्यालय के पी.एच.डी. उपाधि और स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ताओं को मंच से सम्मानित किया गया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि भौतिक सुखों को प्राप्त करने से सुख नहीं मिलता है। आत्मिक सुख, जरूरतमंदों की मदद और सेवा कार्यों से मिलता है। उन्होंने सेवा कार्यों में प्रदर्शन की अपेक्षा परिणामों पर बल दिए जाने वाले सामाजिक वातावरण के निर्माण में शिक्षा की भूमिका पर विचार करने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि दीक्षांत समारोह का दिन उपलब्धियों से जुड़े गर्व को महसूस करने का दिन है, जो संस्थान और विद्यार्थी दोनों के लिए उत्सव का प्रसंग होता है। हम सबके जीवन में कुछ ऐसे क्षण होते हैं जिन्हें हम जीवन भर संजो कर रखते हैं। ऐसा ही दीक्षांत का दिन होता है, जो विद्यार्थियों के मन-मस्तिष्क में हमेशा अंकित रहेगा। परिसर में अध्ययन के दौरान छात्र-छात्राओं ने यादगार पल और जीवन भर के लिए मित्रता की है। अनमोल सबक और प्रचुर ज्ञान प्राप्त किया है। यह सब आने वाले समय में विभिन्न परिस्थितियों में उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगा। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि दीक्षांत का दिन जीवन का वह महत्वपूर्ण मोड़ है, जहां विद्यार्थियों को कैरियर और जीवन के अगले चरण के बारे में निर्णय लेना है। प्राप्त उपाधि आपको असीमित अवसरों और संभावनाओं की दुनिया में प्रवेश कराएगी। उनके सामने देश-विदेश में उच्चतर अध्ययन, रोजगार और उद्यम स्थापना के विकल्प उपलब्ध होंगे, लेकिन भावी जीवन में रोजगार तलाशने वाले की बजाय रोजगार देने वाले की तरह सोच कर आगे बढ़ने का प्रयास करे। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि दीक्षांत का सम्मान उनके अथक परिश्रम से मिला है। इस सफलता की साधना में उनके माता-पिता सदैव उनके साथ खड़े रहे, इसलिए यह उपलब्धि केवल उनकी नहीं है, यह उनके माता-पिता की भी उपलब्धि है।

तकनीकी एवं उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने कहा कि भारत दुनिया का बुद्धिवान समाज था। तक्षशिला, नालंदा सारी दुनिया की शिक्षा के केन्द्र थे। भारत को विश्व गुरू कहा जाता था। हमारी मान्यताएं और परंपराएं प्रकृति के साथ सह-जीवन के ज्ञान-विज्ञान पर आधारित थी। मातृ भाषा में ज्ञान-विज्ञान के सभी विषयों की शिक्षा समाज के द्वारा प्रदान की जाती थी। शोध में पता चला है कि भारत में लगभग 7 लाख गुरुकुल विभिन्न क्षेत्रों में संचालित थे। अंग्रेजों ने भारत को नियंत्रण में लेने के लिए उसकी शक्तियों के संबंध में अध्ययन कराया था।